शनिवार, 26 अक्टूबर 2024

मौसम

तापमान 31 – 25
आर्द्रता 89%
सूर्योदय: 5:38 सूर्यास्त: 17:03

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।

www.samagya.in

समाज्ञा

स्थानीय खबरें पृष्ठ तीन, चार और पांच पर

कोलकाता, कार्तिक कृष्णपक्ष दशमी, वि.स. 2081, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रुपये

रोजगार सृजन सबसे बड़ा वैश्विक मुद्दा : सीतारमण –पृष्ठ 6

सुविचार : आपको हर कोई समझ नहीं सकता न ही आप हर किसी को समझा सकते हैं।

RED-X
B.W.P. PLY,
BOARDS& DOORS
'X' Factor that Makes A Difference
Stockist :
GULAB CHAND
LAL CHAND& Co.
9831114555
9874415555

चक्रवात 'दाना' से बंगाल में नहीं हुई ज्यादा तबाही, हुई भारी वर्षा

चक्रवात 'दाना' के कारण राज्य में एक व्यक्ति की मौत : ममता

कोलकाता, समाज्ञा : इस बार भीषण चक्रवात 'दाना' से पश्चिम बंगाल में 'अम्फान' और 'बुलबुल' जैसे पिछले तूफानों जैसी बड़े पैमाने पर तबाही तो नहीं हुई लेकिन उसके कारण तटबंध टूट गये और मूसलाधार बारिश हुई जिससे दक्षिणी क्षेत्रों में संपत्ति का काफी नुकसान हुआ और शुक्रवार सुबह तूफान के गुजर जाने के बाद भी प्रशासन 'हाई अलर्ट' पर रहा। चक्रवात के बाद प्रशासनिक समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि तूफान के बाद एक व्यक्ति की मौत हो गई, हालांकि प्रशासन ने निचले इलाकों से लगभग 2.16 लाख लोगों को पहले ही निकाल लिया था।

बनर्जी ने स्थिति पर नजर रखने के लिए रात यहां राज्य सचिवालय में ही बिताया और अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि चक्रवात से प्रभावित सभी लोगों तक राहत सामग्री पहुंचे।बनर्जी ने कहा, ''इस प्राकृतिक आपदा में एक व्यक्ति की मौत हुई है। उस व्यक्ति की अपने घर पर केबल से संबंधित कुछ काम करते समय मौत हो गयी। यह काफी दुर्भाग्यपूर्ण है। पोस्टमार्टम से हमें स्पष्ट तस्वीर मिलेगी। अगर जरूरत पड़ी तो हम (राज्य सरकार) परिवार की मदद करेंगे।'' राज्य में हाल में आई बाढ़ के बाद कृषि विभाग द्वारा किए गए सर्वेक्षण का हवाला देते हुए उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे कृषि भूमि का एक और सर्वेक्षण शुरू करें ताकि चक्रवात 'दाना' से हुए नुकसान का पता लगाया जा सके। मुख्यमंत्री ने उन्हें किसानों को फसल बीमा से धनराशि दिलाने में मदद करने के लिए

जलमग्न हुआ महानगर

क्षतिग्रस्त खेतों की सूची तैयार करने को कहा।उन्होंने कहा, मुझे विभिन्न जिलों से जानकारी मिली है। दक्षिण 24 परगना जिले के सागर द्वीप, डायमंड हार्बर, उत्तर 24 परगना जिले के संदेशखालि जैसे स्थानों पर निचले इलाके जलमग्न हो गए हैं। बनगांव और बशीरहाट उप-मंडलों में जल-जमाव की सूचना मिली है। इन स्थानों पर देर शाम तक बारिश जारी रहेगी। बनर्जी ने अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का भी निर्देश दिया कि सांप काटने की दवा सहित अन्य दवाएं जरूरतमंद लोगों तक पहुंचें। मुख्यमंत्री ने उन स्थानों पर पुनः वृक्षारोपण करने का भी निर्देश दिया जहां वनस्पति को नुकसान हुआ है।

उन्होंने कहा, जिन लोगों के घर जलमग्न हो गए हैं, उनके लिए राहत शिविरों का संचालन जारी रहना चाहिए, जब तक कि पानी कम न हो जाए। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विभाग को स्थिति पर नजर रखनी चाहिए ताकि डेंगू, मलेरिया और डायरिया जैसी बीमारियों के प्रकोप से बचा जा सके। मुख्यमंत्री ने कहा, मैं चाहती हूं कि अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि राहत सामग्री लोगों तक पहुंचे और इसमें कोई भेदभाव ना हो। बनर्जी ने सिंचाई विभाग को चक्रवात में क्षतिग्रस्त हुए बांधों का पुनर्निर्माण करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा, मैं आपसे (अधिकारियों) कहूंगी कि इस वर्ष मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए 15 करोड़ और मैंग्रोव पौधे लगाएं। मैं सुंदरबन मास्टर प्लांट के संबंध में नीति आयोग को फिर से पत्र लिखूंगी।

पूर्वी मेदिनीपुर में 350-400 कच्चे मकान क्षतिग्रस्त

उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) और राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) की टीम 48 घंटे तक अपने-अपने तैनाती क्षेत्रों में डटी रहें। जैसा कि मौसम विभाग ने अनुमान लगाया था, पूर्वी मेदिनीपुर और दक्षिण 24 परगना के तटीय जिलों में तूफान का सबसे बुरा असर देखने को मिला। जिला प्रशासन के शुरुआती अनुमानों से पता चला है कि पूर्वी मेदिनीपुर में लगभग 350-400 कच्चे मकान क्षतिग्रस्त हो गए, साथ ही लगभग 250 पेड़ उखड़ गए और बिजली के 175 खंभे गिर गए।

कई रिपोर्ट से पता चला है कि दक्षिण 24 परगना में समुद्री पानी की वजह से मिट्टी के तटबंध टूट गए हैं। प्रशासन के शुरुआती अनुमानों से पता चला है कि तूफान के दौरान पूरे जिले में लगभग 300 कच्चे घर क्षतिग्रस्त हो गए और बिजली के लगभग 50 खंभे उखड़ गए। गंगासागर में कपिल मुनि मंदिर परिसर समुद्र के पानी से जलमग्न हो गया। सागर द्वीप में कई पेड़ उखड़ गए और उच्च ज्वार के कारण जल स्तर एक मीटर तक बढ़ जाने से निचले इलाकों में बाढ़ आ गई।

लापरवाही तभी मानी जाएगी, जब चिकित्सक के पास योग्यता न हो या वह इलाज ठीक से न करे: न्यायालय

नयी दिल्ली : उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि चिकित्सक को लापरवाही के लिए तभी जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जब उसके पास अपेक्षित योग्यता और कौशल न हो या इलाज के दौरान उचित विशेषज्ञता का इस्तेमाल न किया गया हो। न्यायमूर्ति पी. एस. नरसिम्हा और न्यायमूर्ति पंकज मिथल की पीठ ने कहा कि जब मरीज का इलाज करते वक्त चिकित्सक की ओर से अपेक्षित सावधानी बरती गई हो तो यह कार्रवाई योग्य लापरवाही का मामला नहीं होगा, बशर्ते इसे गलत न साबित कर दिया जाए। शीर्ष अदालत ने राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (एनसीडीआरसी)

के उस आदेश को खारिज करते हुए यह टिप्पणी की, जिसमें चिकित्सक को लापरवाह ठहराया गया था। शिकायतकर्ता के अनुसार, उनके नाबालिग बेटे की बायीं आंख में जन्मजात विकार पाया गया था, जिसे एक छोटी सी सर्जरी की आवश्यकता थी। चंडीगढ़ के पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च (पीजीआईएमईआर) में डॉ. नीरज सूद ने 1996 में सर्जरी की थी। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि उनके बेटे में पाई गई शारीरिक विकृति को एक छोटे से ऑपरेशन से ठीक किया जा सकता था, क्योंकि लड़के की आंखों में कोई अन्य दोष नहीं था। चिकित्सक पर प्रक्रिया में गड़बड़ी करने का आरोप लगाया गया, जिससे सर्जरी के बाद लड़के की हालत बिगड़ गई। इसके बाद शिकायतकर्ता ने डॉ. सूद और पीजीआईएमईआर के खिलाफ चिकित्सकीय लापरवाही का आरोप लगाया, जिसे राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने 2005 में खारिज कर दिया था।

कोलकाता में आग की घटनाओं से क्षुब्ध ममता, कहा

'अगर बड़ाबाजार के व्यवसायी व्यवस्था को ठीक नहीं करेंगे तो राज्य सरकार कार्रवाई करने को होगी बाध्य'

कोलकाता,समाज्ञा : मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कोलकाता में बार-बार हो रहे अग्निकांडों को लेकर नाराजगी व्यक्त की है। शुक्रवार को राज्य सचिवालय नवान्न में प्रशासनिक बैठक के दौरान मुख्य रूप से बड़ाबाजार में आग लगने की घटनाओं पर मुख्यमंत्री ने कोलकाता पुलिस, नगर निगम व दमकल विभाग को बड़ाबाजार के व्यवसायियों के साथ बैठक करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि बड़ाबाजार में आग लगने की स्थिति में वहां दमकल गाड़ियों की आवाजाही में काफी दिक्कतें होती है।

पिछले दिनों में बड़ाबाजार के टिरेटी बाजार में भयावह आग लगी थी जिसका जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि बड़ाबाजार में रास्तों पर

पार्किंग की वजह से वाहनों की आवाजाही प्रभावित होती है। उन्होंने कोलकाता पुलिस के अधिकारियों को बड़ाबाजार के व्यवसायियों के साथ बैठक कर इस समस्या का समाधान करने का निर्देश दिया। साथ ही ममता ने चेतावनी देते हुए कहा कि राज्य सरकार के दिशानिर्देशों का अगर पालन नहीं किया गया तो अब कार्रवाई की प्रक्रिया भी शुरू की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महानगर के कई जगहों पर अग्निकांड हो रहे हैं, लेकिन सबसे आश्चर्य की बात यह है कि आग लगने की घटना के बाद दमकल वाहनों के आने-जाने के लिए भी जगह नहीं है। मुख्यमंत्री ने कहा कि टिरेटी बाजार में 15 दमकल गाड़ियों ने आग पर काबू किया, लेकिन घटना में अगर किसी की जान चली जाती तो जिम्मेदारी कौन लेगा?बड़ाबाजार के व्यवसायियों को स्वयं पहल कर इस व्यवस्था को ठीक करना होगा, नहीं तो राज्य सरकार कार्रवाई करने के लिए बाध्य होगी।

शेयर बाजार में गिरावट से निवेशकों की संपत्ति 6.80 लाख करोड़ रुपये घटी

नयी दिल्ली : शेयर बाजार में गिरावट के कारण शुक्रवार को निवेशकों की संपत्ति 6.80 लाख करोड़ रुपये घट गई। बीएसई सेंसेक्स 662.87 अंक गिरकर 79,402.29 पर बंद हुआ। दिन के कारोबार के दौरान यह 927.18 अंक टूटकर 79,137.98 पर आ गया था। विश्लेषकों के अनुसार बाजार में गिरावट इंडसइंड बैंक के शेयरों में भारी बिकवाली और विदेशी पूंजी की निरंतर निकासी की वजह से हुई है। बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 6,80,383.26 करोड़ रुपये घटकर 4,36,98,921.66 करोड़ रुपये (5.20 लाख करोड़ डॉलर) पर रहा।

25 से अधिक विमानों को बम से उड़ाने की धमकी मिली

नयी दिल्ली/मुंबई : भारतीय विमानन कंपनियों द्वारा संचालित 25 से अधिक घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को शुक्रवार को बम से उड़ाने की धमकी मिली। सूत्रों ने यह जानकारी दी। पिछले 12 दिन में भारतीय विमानन कंपनियों द्वारा संचालित 275 से अधिक उड़ानों को बम से उड़ाने की फर्जी धमकियां मिली हैं। इनमें से अधिकांश धमकियां सोशल मीडिया के माध्यम से दी गईं। बृहस्पतिवार को 70 से अधिक उड़ानों को बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। 'इंडिगो' के प्रवक्ता ने शुक्रवार को कहा कि कोझिकोड से दम्मम जाने वाली 6ई 87 उड़ान समेत सात उड़ानों को सुरक्षा से संबंधित सूचना मिली। सूत्रों ने कहा कि इंडिगो, विस्तारा और स्पाइसजेट की सात-सात उडानों जबकि एअर इंडिया की छह उड़ानों को धमकियां मिलीं।

एनआईए ने रेलगाड़ियों के पटरी से उतरने में संभावित साजिश की प्रारंभिक जांच शुरू की

नयी दिल्ली : राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने हाल में रेलगाड़ियों के पटरी से उतरने की घटनाओं में किसी तरह की साजिश होने का पता लगाने के लिए प्रारंभिक जांच शुरू कर दी है। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आतंकवाद रोधी एजेंसी के अधिकारी कम से कम चार ऐसी घटनाओं की जांच कर रहे हैं। एक अधिकारी ने बताया, ''हालिया ट्रेन दुर्घटनाओं/रेलगाड़ियों के पटरी से उतरने की घटनाओं में किसी तरह की साजिश होने का पता लगाने के लिए प्रारंभिक जांच शुरू की गई है। फिलहाल, कम से कम चार ऐसे मामलों की जांच की जा रही है।'' अधिकारी ने कहा कि अब तक ऐसा कोई ठोस सबूत नहीं मिला है, जिससे पता चल सके कि इन रेल दुर्घटनाओं की या रेलगाड़ियों को पटरी से उतारने की साजिश रची गई थी।

ज्ञानवापी परिसर में खुदाई के जरिए सर्वेक्षण की मांग वाली हिंदू पक्ष की याचिका खारिज

वाराणसी : उत्तर प्रदेश में वाराणसी की एक अदालत ने पूरे ज्ञानवापी परिसर में खुदाई के जरिए सर्वेक्षण की मांग वाली हिंदू पक्ष की याचिका को शुक्रवार को खारिज कर दिया। हिंदू पक्ष के एक वकील ने यह जानकारी दी। हिंदू पक्ष का प्रतिनिधित्व करने वाले मदन मोहन यादव ने कहा कि दीवानी न्यायाधीश (सीनियर डिवीजन) जुगल किशोर शंभू ने पूरे ज्ञानवापी परिसर में खुदाई के जरिए सर्वेक्षण की मांग वाली हिंदू पक्ष की याचिका खारिज कर दी। जिला अदालत के 21 जुलाई, 2023 के आदेश के बाद, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने यह निर्धारित करने के लिए यहां काशी विश्वनाथ मंदिर के बगल में स्थित ज्ञानवापी परिसर का वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया कि क्या मस्जिद का निर्माण हिंदू मंदिर के पहले से मौजूद ढांचे के ऊपर किया गया था। एएसआई ने 18 दिसंबर 2023 को एक सीलबंद लिफाफे में जिला अदालत को अपनी सर्वेक्षण रिपोर्ट सौंपी थी। हिंदू याचिकाकर्ताओं द्वारा दावा किए जाने के बाद अदालत ने सर्वेक्षण का आदेश दिया था कि क्या 17वीं सदी की मस्जिद का निर्माण पहले से मौजूद मंदिर के अवशेषों के ऊपर किया गया था।

एनआईए ने लॉरेंस बिश्नोई के भाई पर 10 लाख रुपये का इनाम रखा

नयी दिल्ली : राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने जेल में बंद कुख्यात अपराधी लॉरेंस बिश्नोई के छोटे भाई अनमोल बिश्नोई के बारे में सूचना देकर उसे गिरफ्तार कराने पर 10 लाख रुपये के इनाम की घोषणा की है। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों के अनुसार, गत अप्रैल महीने में अभिनेता सलमान खान के मुंबई स्थित आवास के बाहर गोलीबारी की घटना में कथित संलिप्तता के सिलसिले में एनआईए को अनमोल बिश्नोई की तलाश है और उसे एजेंसी की सर्वाधिक वांछित अपराधियों की सूची में भी रखा गया है। माना जाता है कि अनमोल बिश्नोई उर्फ भानु कनाडा में रहता है और नियमित रूप से अमेरिका आता-जाता है। अधिकारियों ने कहा कि उसके सिर पर इनाम की घोषणा पिछले महीने की गई थी। उन्होंने कहा कि मुंबई के बांद्रा में गत 12 अक्टूबर को हुई महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री बाबा सिद्दीकी की हत्या के पीछे कथित रूप से अनमोल का हाथ माना जा रहा है। मुंबई की एक अदालत ने सलमान के घर के बाहर गोलीबारी की घटना में शामिल दो आरोपियों में से एक को पिछले दिनों जमानत देने से इनकार कर दिया था।

नीट-पीजी 2024: उत्तर कुंजी, प्रश्न पत्र सार्वजनिक करने से जुड़ी याचिकाओं पर न्यायालय करेगा सुनवाई

नयी दिल्ली : उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि वह 11 अगस्त को आयोजित 'नीट-पीजी' 2024 की उत्तर कुंजी और प्रश्न पत्रों को सार्वजनिक करने का अनुरोध करने वाली याचिकाओं पर विस्तृत सुनवाई करेगा, ताकि चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित की जा सके। कुछ छात्रों का प्रतिनिधित्व कर रही अधिवक्ता तन्वी दुबे ने न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ के समक्ष कहा कि सूचना ज्ञापन प्रकाशित नहीं किया गया और यहां तक कि परीक्षा आयोजित करने के लिए कोई मानक संचालन प्रक्रिया भी नहीं है। उन्होंने कहा कि काउंसलिंग प्रक्रिया को लेकर राज्य भी भ्रमित हैं। पीठ ने मामले को नियमित सुनवाई वाले दिन सूचीबद्ध करने का निर्देश दिया और विस्तृत सुनवाई की आवश्यकता बताई। दुबे के मार्फत से दायर याचिकाओं में से एक में, उत्तर कुंजी और प्रश्नपत्र जारी न करने के लिए राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड (एनबीई) की मनमानी कार्रवाई को चुनौती दी गई है। इसमें आरोप लगाया गया कि अपेक्षित और वास्तविक अंकों में अंतर होने की स्थिति में उत्तर पुस्तिका के पुनर्मूल्यांकन और पुनर्जांच का कोई विकल्प नहीं था। शीर्ष अदालत ने पूर्व में एनबीई द्वारा राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा-स्नातकोत्तर (नीट-पीजी) 2024 के पैटर्न में अंतिम समय में किए गए बदलावों पर सवाल उठाते हुए कहा था कि यह ''बहुत ही असामान्य'' है और इससे छात्रों में ''भ्रम'' पैदा हो सकता है। इसके बाद, उसने याचिकाओं पर एक सप्ताह के भीतर एनबीई और केंद्र से जवाब मांगा था।

भारत, चीन ने टकराव वाले दो बिंदुओं से सैनिकों की वापसी शुरू की

नयी दिल्ली : भारत और चीन ने पूर्वी लद्दाख में डेमचोक और डेपसांग मैदानी क्षेत्रों में टकराव वाले दो बिंदुओं से सैनिकों की वापसी शुरू कर दी है और यह प्रक्रिया 28-29 अक्टूबर तक पूरी होने की संभावना है। आधिकारिक सूत्रों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। कुछ दिन पहले दोनों देशों के बीच पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के पास से सैनिकों की वापसी और गश्त को लेकर समझौता हुआ था जो चार साल से अधिक समय से जारी गतिरोध को समाप्त करने की दिशा में एक बड़ी सफलता है। सूत्रों ने कहा कि सैनिकों की वापसी की प्रक्रिया पूरी होने के बाद टकराव वाले दोनों बिंदुओं पर गश्त शुरू होगी और दोनों पक्ष अपने-अपने सैनिकों को हटाकर अस्थायी ढांचों को नष्ट कर देंगे। उन्होंने कहा कि अंततः गश्त का स्तर अप्रैल 2020 से पहले के स्तर पर पहुंच सकता है। सैन्य सूत्रों ने बताया कि समझौता रूपरेखा पर पहली बार राजनयिक स्तर पर सहमति बनी थी और फिर सैन्य स्तर की वार्ता हुई। उन्होंने कहा कि कोर कमांडर स्तर की बातचीत में समझौते के महत्वपूर्ण पहलुओं पर काम हुआ। दोनों पक्षों के बीच समझौतों का पालन करते हुए भारतीय सैनिकों ने इन क्षेत्रों से साजो-सामान वापस लाना शुरू कर दिया है। जून 2020 में गल्वान घाटी में दोनों देशों के सैनिकों के बीच भीषण संघर्ष के बाद संबंधों में तनाव आ गया था। यह पिछले कुछ दशकों में दोनों पक्षों के बीच सबसे गंभीर सैन्य संघर्ष था।

भारत की विकास गाथा का हिस्सा बनने का यह सही समय: प्रधानमंत्री मोदी

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जर्मनी की कंपनियों को देश में निवेश के लिए आमंत्रित करते हुए शुक्रवार को कहा कि निवेश के लिए भारत से बेहतर कोई जगह नहीं है और देश की विकास गाथा का हिस्सा बनने का यह सही समय है। प्रधानमंत्री ने 'एशिया पैसिफिक कॉन्फ्रेंस ऑफ जर्मन बिजनेस' के यहां आयोजित 18वें सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि विदेशी निवेशकों के लिए भारत की विकास गाथा का हिस्सा बनना, 'मेक इन इंडिया' तथा 'मेक फॉर द वर्ल्ड' पहल में शामिल होने का यह 'सही' समय है। उन्होंने कहा, '' जर्मनी ने भारत के कुशल कार्यबल में जो विश्वास व्यक्त किया है, वह अद्भुत है क्योंकि यूरोपीय राष्ट्र ने कुशल भारतीय कार्यबल के लिए वीजा की

संख्या 20,000 से बढ़ाकर 90,000 करने का निर्णय लिया है।'' मोदी ने कहा, '' भारत की विकास गाथा का हिस्सा बनने का यह सही समय है... भारत वैश्विक व्यापार तथा विनिर्माण का केंद्र बन रहा है।'' उन्होंने कहा कि भारत आज लोकतंत्र, जनसांख्यिकी, मांग और 'डेटा' के मजबूत स्तंभों पर खड़ा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत सड़कों और बंदरगाहों में रिकॉर्ड निवेश कर रहा है। साथ ही हिंद-प्रशांत क्षेत्र दुनिया के भविष्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। यह सम्मेलन 12 वर्षों के अंतराल के बाद शुक्रवार को आयोजित किया गया। मोदी ने कहा कि सरकार ने 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का ढांचा तैयार किया है और इस महत्वपूर्ण समय में जर्मनी के मंत्रिमंडल ने दोनों देशों के बीच संबंधों को और मजबूत करने के लिए 'भारत पर केंद्रित' दस्तावेज जारी किया है। उन्होंने कहा कि भारत विविधीकरण, जोखिम मुक्त, व्यापार तथा विनिर्माण का केन्द्र बन रहा है और यह जर्मनी की कंपनियों को व्यापक व्यावसायिक अवसर उपलब्ध कराता है। मोदी ने कहा, ''निवेशकों तथा कंपनियों के लिए ''भारत से बेहतर स्थान और क्या हो सकता है?'' प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत के विकास के चार प्रमुख स्तंभ प्रतिभा, प्रौद्योगिकी, नवाचार और बुनियादी ढांचा हैं। इन सबको आगे बढ़ाने के लिए ''हमारे पास आकांक्षी भारत की शक्ति है।'' मोदी ने कहा कि भारत कौशल तथा प्रौद्योगिकी के लोकतंत्रीकरण पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। कृत्रिम मेधा, सेमीकंडक्टर, हरित हाइड्रोजन और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों से संबंधित इसके महत्वपूर्ण मिशन भी निवेश तथा सहयोग के अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले प्रतिनिधिमंडल को भारत की संस्कृति, भोजन और खरीदारी का भी आनंद लेना चाहिए। भारत और जर्मनी के बीच वर्तमान में द्विपक्षीय व्यापार 30 अरब डॉलर से अधिक है। जर्मनी की कई कंपनियां भारत में काम कर रही हैं, जबकि भारतीय कंपनियां भी जर्मनी में अपनी उपस्थिति बढ़ा रही हैं।

धर्मनिरपेक्षता संविधान का मूल स्वर

देश की सर्वोच्च अदालत ने अपने दो अहम फैसलों में स्पष्ट संकेत दिया है कि धर्मनिरपेक्षता को पश्चिमी देशों से आयातित शब्द के नजरिये से देखने के बजाय भारतीय संविधान की आत्मा के रूप में देखना चाहिए। साथ ही यह भी कि भारतीय संदर्भ में यह सोच सदा से रची-बसी रही है। धर्मनिरपेक्षता को भारतीय संविधान की मूल विशेषता बताते हुए कोर्ट ने कहा कि संविधान में वर्णित समानता व बंधुत्व शब्द इसी भावना के आलोक में वर्णित हैं। साथ ही धर्मनिरपेक्षता को भारतीय लोकतंत्र की अपरिहार्य विशेषता बताते हुए कहा कि यह समाज में व्यापक दृष्टि वाली उदार सोच को विकसित करने में सहायक है। जिसके बिना स्वस्थ लोकतंत्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। जो राष्ट्रीय एकता का भी आवश्यक अंग है। दरअसल, शीर्ष अदालत ने अपने दो हालिया फैसलों के संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता की विस्तृत व्याख्या की है। पहले बीते सोमवार को संविधान के 42वें संशोधन को चुनौती देने वाली याचिकाओं के बाबत कोर्ट ने धर्मनिरपेक्षता को भारतीय संविधान की आधारभूत संरचना का हिस्सा बताया। वहीं अदालत ने कहा कि धर्मनिरपेक्षता को लेकर अपनी सुविधा अनुसार व्याख्या नहीं की जा सकती। कोर्ट का निष्कर्ष यह भी था कि संविधान की प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्षता शब्द जोड़े जाने से पहले भी यह भारतीय संविधान की महत्वपूर्ण सोच रही है। अदालत का कहना था कि समानता व बंधुत्व शब्द इसकी मूल भावना को ही अभिव्यक्त करते हैं। वैसे भारतीय समाज ने इस शब्द के मूल भाव का सहजता से अंगीकार किया भी है। यही वजह है कि कोर्ट ने धर्मनिरपेक्षता को भारतीय संविधान का मूल स्वर बताते हुए इसकी संकुचित व्याख्या करने से बचने के लिये कहा। भारतीय समाज का बहुधर्मी व विभिन्न संस्कृतियों का गुलदस्ता होना भी इसकी अपरिहार्यता को दर्शाता है। निश्चित रूप से अदालत ने इस मुद्दे पर अपनी राजनीतिक सुविधा के लिये तल्खी दिखाने वाले नेताओं को भी आईना दिखाया है। निस्संदेह, यह वक्त की जरूरत भी है।

वहीं दूसरी ओर बीते मंगलवार को शीर्ष अदालत ने इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा उत्तर प्रदेश बोर्ड ऑफ मदरसा एजुकेशन एक्ट 2004 को रद्द करने के फैसले को भी अनुचित ठहराया। इसके बजाय कोर्ट ने ऐसे कदम उठाने की जरूरत बतायी जो मदरसों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ सकें। कोर्ट को मानना था कि ऐसे मामलों की की गई संकुचित व्याख्या से उत्पन्न होने वाली विसंगतियों को दूर किया जाना चाहिए। कोर्ट ने इससे पहले संविधान के 42वें संशोधन को चुनौती देने वाले याचिकाकर्ताओं से तल्ख सवाल भी किए थे। कोर्ट न जानना चाहा कि क्यों उन्हें देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप से परहेज है। इस बाबत याचिकाकर्ताओं की दलील थी कि उन्हें देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप से परेशानी नहीं है। उन्हें राजनीतिक दलों द्वारा राजनीतिक लक्ष्यों के लिये कालांतर संविधान संशोधन के जरिये इस शब्द को शामिल करने पर आपत्ति है। दरअसल, अदालत का कहना था कि भारतीय जीवन दर्शन में इस सोच का गहरे तक अंगीकार किया गया है। साथ ही कोर्ट ने मदरसा एजुकेशन एक्ट को रद्द करने को धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत के विपरीत बताया। यह भी कि इस शब्द की संकुचित व्याख्या के चलते ही उत्तर प्रदेश के हजारों मदरसों के लाखों छात्रों का भविष्य अधर में लटक गया था। अदालत का मानना था कि मदरसों पर रोक लगाने के बजाय उनके पाठ्यक्रम को वक्त की जरूरत और राष्ट्रीय सोच के अनुरूप ढालना जाना चाहिये। जिससे छात्रों की व्यापक दृष्टि विकसित हो सके। अदालत ने दो टूक कहा भी कि यदि किसी भी प्रकार से धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा कमजोर पड़ती है तो अंतत: इसका नुकसान समाज व देश को ही उठाना पड़ेगा। यह भारतीय समाज में सदियों से फल-फूल रही गंगा-जमुनी संस्कृति के पोषण की भी अपरिहार्य शर्त है। साथ ही एक वाइब्रेंट लोकतांत्रिक समाज की आवश्यकता भी है। निश्चित तौर पर शीर्ष अदालत की ये टिप्पणियां जहां राजनीतिक दलों को आईना दिखाती हैं, वहीं आम लोगों को उदारवादी दृष्टिकोण के साथ सह-अस्तित्व की सोच का पोषण करने की जरूरत भी बताती हैं। जो वक्त के हिसाब से तार्किक भी है।

भारत से सीखा परोपकार सारे विश्व ने

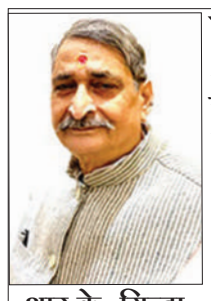

आर.के. सिन्हा

रतन टाटा के निधन के पश्चात उनके परोपकारी कामों की विस्तार से चर्चा हो रही है। वैसे, जरा गौर करें तो न केवल टाटा समूह, बल्कि भारत के हरेक छोटे-बड़े लाखों कारोबारी या उद्योगपति अपने स्तर पर कुछ न कुछ परोपकार से जुड़े कामों में लगे हुए ही मिल जायेंगे । यह कहना सरासर गलत होगा कि परोपकार की भावना हमने यूरोप से सीखी है। यह कुछ नासमझ अज्ञानियों का प्रचार भर है । भारत में परोपकार की परंपरा प्राचीन काल से ही गहरी जड़ें जमाए हुए है। हम सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया में विश्वास करने वाले हैं । अभी भी आपको पहली रोटी गौ माता को में विश्वास करने वाले लाखों लोग मिल जायेंगे । धर्म, संस्कृति और समाज के हरेक पहलू में दान, सेवा और परोपकार का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथों में परोपकार को दान और सेवा के रूप में वर्णित किया गया है। हिन्दू धर्म में दान और सेवा का बहुत बड़ा महत्व है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास: इन चार आश्रमों में से वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों में परोपकार को ही जीवन का मुख्य लक्ष्य माना गया है। जैन धर्म में दान को अहिंसा के सिद्धांत के साथ जोड़ा गया है। भारत भूमि की देन बौद्ध धर्म में भी दान का खासा महत्व है जो सभी प्राणियों के कल्याण के लिए होता है। भगवान बुद्ध ने अपने जीवनकाल में दान, सेवा और अहिंसा का मार्ग दिखाया। गांधी जी ने सर्वोदय के सिद्धांत पर बल दिया और ग्रामीणों की सेवा और विकास के लिए जीवन भर काम किया। मदर टेरेसा ने भी गरीबों, बीमारों और जरूरतमंदों की सेवा करके मानवता की सेवा की।

रतन टाटा की तरह बिड़ला समूह , अजीम प्रेमजी, नंदन नीलकेणी, शिव नाडार जैसे सैकड़ों उद्योगपति परोपकार से जुड़े कार्यों के लिए हर साल हजारों करोड़ रुपया दान देते हैं। भारत के कारोबारियों के डीएनए में समाज सेवा है। टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी टाटा की दूरदृष्टि से स्थापित इस समूह ने शुरू से ही समाज सेवा को अपने कार्यों का अभिन्न अंग बनाया है। जमशेद जी के परोपकार के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद थे, जिसे अब उनकी तीसरी पीढ़ी भी निभा रही है ।इसी तरह जिस फक्कड़ संन्यासी के आशीर्वाद से घनश्याम दास बिड़ला ने अपना उद्योग जमाया, उस संन्यासी के आशीर्वाद से करनी और बरनी का काम आज भी बिड़ला समूह अपना रहा है । यह अपने धर्मार्थ कार्यों के माध्यम से भारत में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक प्रभाव डालता है, जो देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

जमशेदजी टाटा को यह प्रेरणा स्वामी विवेकानंद जी से ही प्राप्त हुई थी । शिकागो के सर्व धर्म सम्मेलन में जाने के पूर्व जब वे दक्षिण भारत का भ्रमण कर रहे थे तो उन्हें यह बात खली कि दक्षिण भारत में विज्ञान की उच्चतर शिक्षा प्रदान करने वाला कोई संस्थान नहीं है ।तब उन्होंने विचार किया कि इस काम में टाटा स्टील के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा उपयुक्त व्यक्ति होंगें और उन्होंने शिकागो जाने के पूर्व उन्हें एक पत्र लिखा ।स्वामीजी ने टाटा को लिखा कि आप बिहार के जमशेदपुर से अच्छा पैसा कमा रहे हो। मेरी शुभकामना है कि और ज़्यादा धन अर्जित करो और ज़्यादा लोगों को रोज़गार दो । लेकिन, विज्ञान की उच्चतर शिक्षा से वंचित दक्षिण भारत की भी थोड़ी चिंता करो और दक्षिण भारत में कहीं भी विज्ञान की ऊँची पढाई और रिसर्च का कोई बढ़िया संस्थान स्थापित करो । मैं जानता हूँ कि तुम यह कर सकते हो और विश्वास ही कि तुम ऐसा ही करोगे । स्वामी विवेकानंद जी की इस प्रेरक चिट्ठी पढ़ने के बाद जमशेदजी इतने प्रेरित हुए कि उन्होंने बैंगलुरु में तत्काल ही एक विज्ञान का बढिया संस्थान शुरू कर दिया जो आज इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस के नाम से विश्व विख्यात हैं और जो प्रतिभाशाली बच्चे वैज्ञानिक बनाना चाहते है, या रिसर्च या अध्यापन कार्य में अपना करियर बनाना चाहते हैं वे किसी भी आईआईटी में जाने से ज़्यादा आईआईएस में जाना ज़्यादा पसंद करते हैं।

महात्मा बुद्ध, गुरु नानक, और अन्य संतों ने भी परोपकार पर जोर दिया। मध्ययुगीन भारत में, राजाओं और धनिकों द्वारा अनेक धर्मार्थ संस्थानों की स्थापना की गई, जो स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, और गरीबों की सहायता के लिए समर्पित थे। आपको हरेक गांव, कस्बे, शहर वगैरह में गैर सरकारी प्रयासों से चल स्कूल, कॉलेज, धर्मशालाएं, लंगर और प्याऊ वगैरह मिल जाते हैं।

स्वामी विवेकानंद ने दीन-दुखिया जन के लिए सेवा को सर्वोच्च धर्म बताया। उनका मानना था कि सामाजिक सेवा ही सच्चा धर्म है। विवेकानंद ने सर्वधर्म समभाव और मानवतावाद का संदेश देते हुए, हर व्यक्ति के कल्याण के लिए काम किया। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो आज भी भारत में विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक सेवाएं प्रदान करता है।

अभी कुछ दिन पहले शारदीय नवरात्र समाप्त हुए। इस दौरान देश की राजधानी दिल्ली समेत देश के तमाम शहरों में भंडारे चलते रहे । आप कह सकते हैं इस दौरान भंडारों की बहार थी। सब भंडारे के प्रसाद को प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण कर रहे थे। भंडारों में समाज वादी व्यवस्था वास्तव में बहुत प्रभावशाली होती है। भंडारों में प्रसाद के रूप में बंटते हैं छोले, कुलचे, हलवा, पूड़ी-आलू, ब्रेड पकोड़ा आदि। कुछ भंडारों में खीर का प्रसाद भी वितरित होता है। देश की राजधानी दिल्ली भंडारों की भी राजधानी है। कहने वाले कहते हैं कि कैसेट किंग गुलशन कुमार ने भंडारा संस्कृति का पुनर्जागरण किया था। उन्होंने वैष्णो देवी में भंडारे का आयोजन शुरू किया था। तब दिल्ली वाले वैष्णो देवी में जाकर गुलशन कुमार की तरफ से चलने वाले भंडारे में भोग अवश्य लगाया करते थे। यहां से ही भंडारा संस्कृति न पैर जमाए थे।

भंडारे के प्रसाद की बात ही अलग होती है। इसका स्वाद अतुल्नीय होता है। ये भंडारे की महिमा ही मानी जाएगी। भंडारा अपने आप में जात-पात और वर्ग की दीवारों को तोड़ता है। इसमें सब प्रेम से प्रसाद लेते हैं। भंडारे का प्रसाद पूरे अनुशासन से लिया जाता है। कनॉट प्लेस में रोज हजारों लोग नवरात्रों के दौरान भंडारे का प्रसाद खाते हैं।जो भंडारा आयोजित करते हैं, वे या तो हनुमान मंदिर के आगे से प्रसाद खरीद कर बांट देते हैं या फिर खुद ही कहीं से बनवा कर लाते हैं। भंडारों की एक खास बात ये भी है कि इनसे प्रसाद हिन्दू, मुसलमान,सिख, ईसाई सब ग्रहण करते हैं।

साउथ दिल्ली के पिलंजी गांव में कुछ युवकों ने कुछ साल पहले 'बालाजी कुनबा' नाम से एक संगठन स्थापित किया। इसका मकसद है भूखों की भूख मिटाना। ये हर रोज एम्स, सफदरजंग अस्पताल, राम मनोहर लोहिया अस्पातल के आगे बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश वगैरह से रोगियों के साथ आए तीमारदारों को भरपेट भोजन करवाते हैं। कौन हैं बालाजी कुनबा के सदस्य? यह सब हनुमान जी के भक्त हैं। इनकी कारों पर हनुमानजी की तस्वीर वाला एक बैनर लगा होता है। जिस पर 'बालाजी कुनबा- एक परिवार भूख के खिलाफ' लिखा रहता है। भंडारे के लिए पैसे का जुगाड़ पिलंजी गांव के लोग ही करते हैं। यह अधिकतर गुर्जर समाज से संबंध रखते हैं। आप भंडारा संस्कृति को भी तो जन सेवा ही कहेंगे। क्या अब भी किसी को बताने की जरूरत है कि परोपकार औस समाज सेवा तो हरेक भारतीय के जीवन का हिस्सा है। यकीन मानिए आपको अमेरिका या यूरोप में कहीं कोई भंडारा नहीं मिलेगा। अब आप भारत और यूरोप अंतर को समझ गए होंगे। (लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

लकीर के फकीर नहीं लालन फकीर

डॉ.राम आह्लाद चौधरी
प्रोफेसर, कलकत्ता विश्वविद्यालय

लालन फकीर की 250वीं जयंती के मौके पर यह कहना जरूरी है कि लालन फकीर लकीर के फकीर नहीं थे। दुनिया के महान दार्शनिकों में अन्यतम दार्शनिक का नाम है- लालन।लालन फकीर के नाम से जाने जानेवाले इस लालन ने इस दुनिया को क्या-क्या न दिया,हालांकि इस फकीर को दुनिया से कुछ चाहत नहीं थी। इस लालन फकीर का मूल्यांकन एक तरह से वक्त के कर्ज से मुक्त होने की प्रक्रिया है,पर लालन का दार्शनिक प्रभाव इतना जल्दी खत्म होनेवाला नहीं है।यह सच है कि इस फकीर ने अपने समाज को क्रियात्मक आयोजन का पाठ बताने का प्रयत्न किया था।विद्वानों ने लालन फकीर की चर्चा करते हुए कहा है कि लालन फकीर ने रहस्यवादी कवि की भूमिका अदा की है।क्या लालन ने गोल-गोल बातें बताई है;यदि लालन फकीर के कथनों पर गंभीरता से विचार किया जाए,तो स्पष्ट होगा कि लालन फकीर ने कभी भी अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश नहीं की,इसलिए कि लालन फकीर लकीर के फकीर नहीं थे। उन्होंने सामाजिक बंधनों के समक्ष चुनौतियां पेश की।

लालन फकीर की 250वीं जयंती मनायी जायेगी। उनका जन्म किस दिन और किस तारीख को हुआ था,यह सूचना इस दुनिया को नहीं है; लेकिन विद्वान यह बताते हैं कि लालन फकीर का जन्म सन् 1774 में हुआ था।कुछ लोगों ने यह स्वीकार किया है कि लालन फकीर का जन्म 17 अक्टूबर 1774 में हुआ था। उनका देहावसान 1890 में 17 अक्टूबर को हो गया।उनकी आयु 118 साल थी।उनका जन्म बंगला देश के खुलना जिले में हुआ था।उनकी पत्नी बिशोखा थी।उनके जीवन और लेखन पर बिशोखा का अत्यधिक प्रभाव था। दरअसल वह प्रभाव नहीं वाचिक प्रेरणा थी।उन दोनों का जीवन मस्तमौला था।

लालन के गीत में दार्शनिकता है। इस दार्शनिकता का आधार वास्तविकता थी,आमजन की पीड़ाओं को दूर करने के लिए उन्होंने गीत प्रस्तुत किये। उन गीतों में मानव जीवन की वास्तविक समस्याओं की जड़ें खोजने की कोशिश की गई है।सवाल उठता है कि एक फकीर ने ऐसा काम क्यों किया,जिस फकीर को इस समाज में कुछ लेना-देना नहीं है,उसके बावजूद इस फकीर ने इस दुनिया को सुधारने की जद्दोजहद क्यों शुरू की; यह सवाल साहित्य और दर्शन के विद्यार्थियों के लिए गंभीर है; हांलाकि अंधेरे के पुजारियों के लिए यह सवाल अनावश्यक हो सकता है, क्योंकि अंधेरे के पुजारियों को अंधेरे में रहना है और घुप्प अंधेरा ही उनका जीवन है।इसलिए उन्हें लालन फकीर पसंद नहीं हैं,उन्हें वे फकीर पसंद नहीं होते हैं जिन फकीरों ने फकीरी की चादर ओढ़ रखी है।सच तो यह है कि लालन फकीर ने इसी चादर को नोंच फेका है।यही कारण है कि लालन फकीर का नाम सुनते ही गोरखधंधा करने वाले नौ-दो ग्यारह हो जाते हैं।

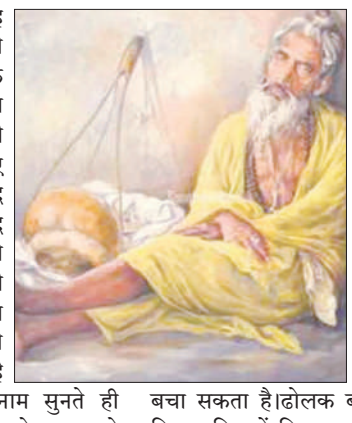

लालन फकीर ने अपने समय से सवाल पूछा है,वैसे तो हर रचनाकार अपने वक्त से दो-दो हाथ करने में खुद को महारथी समझता है,पर क्या हर रचना अपने समय की चुनौतियों को सम्बोधित कर पाती है। यदि इस दृष्टि से लालन फकीर पर विचार किया जाए तो,स्पष्ट होगा कि लालन ने अपने समय की सारी प्रमुख चुनौतियों को सम्बोधित किया है।सच तो यह है कि लालन फकीर का तेवर ही विद्रोही है। इस विद्रोही तेवर में साहस है,इस तेवर में ऊर्जा है और इस तेवर में है-ज्ञान। यही कारण है कि लालन फकीर के गीत 250 सालों के बाद भी गाए जाते हैं।उनके गीतों का यथार्थ लोक भी गजब है,तभी तो लालन फकीर ने 'दिल की बेड़ियां' डालने की बात की है। इसी साहस ने लालन फकीर को 'पिंजरे' के आठ कमरों और नौ बंद दरवाजों तक पँहुचाया है। लालन फकीर के गीतों से गुजरने पर यही पता चलता है कि साहस के बिना इस दुनिया में रहना या बसना मुश्किल है। अनजान पंछी कैसे पहचाने जाते हैं ,यही चिंता लालन फकीर के गीतों में देखी जाती है।यह कहना जरूरी है कि उनके सभी गीत बंगला में हैं।एक गीत का भावानुवाद प्रस्तुत करना जरूरी है,ताकि उस पंछी को दर्पण कक्ष तक पँहुचाया जा सके, जैसा कि उनके इस गीत में प्रस्तुत किया गया है: अनजान पंछी कैसे/ पिंजरे में आता है और फिर चला जाता है / यदि पकड़ पाता उसे/ तो अपने दिल की बेड़ियां / उसके पैरों में डाल देता/ इस पिंजरे में आठ कमरे और नौ बंद दरवाजे/ रह-रहकर भड़कती आग / ऊपर एक मुख्य कमरा/जिसका नाम दर्पण कक्ष।

लालन फकीर ने सामाजिक जागरुकता पर सबसे ज्यादा जोर दिया है,उन्हें पता है कि इस समाज को कोई एक व्यक्ति या कोई एक दर्शन नहीं बचा सकता है।ढोलक बजाने वाले चाहे जितना चिल्लायें कि कल भी सूरज उगेगा, लेकिन सच यह है कि जिस कल की, जिस सुबह की प्रतीक्षा इस दुनिया को है,उस सुबह का इंतजार इस दुनिया को करना ही पड़ेगा।लालन फकीर ने यह भी कहा है कि यह इंतजार अंतिम अचूक औषधि नहीं है। इंतजार की घड़ियां तभी कटती हैं,जब क्रियात्मक आयोजन पर जोर दिया जाता है।यही कारण है कि लालन फकीर ने सामाजिक-सांस्कृतिक रूढ़ियों को रेखांकित किया है तथा समाज को एक विकल्प से परिचित करने की चेष्टा की है।

यह सच है कि उनके गीत 'थोथा चना बाजे घना' की तरह नहीं हैं।यह भी कहा जा सकता है कि लालन फकीर ने जीवन को सरल बनाने का उपाय बताते हुए अनुशीलन पर जोर दिया है।कौन-सी ऐसी राह है,जिसकी चर्चा उनके गीतों में न हुई हो,तभी तो उन्होंने जीवन को तुच्छ होने से बचाया है। उन्होंने अपने तर्कों से यह प्रमाणित कर दिया कि तुच्छता के विरुद्ध लगातार संघर्ष करना क्रियात्मक आयोजन की पहली सीढ़ी है।यदि इस सीढ़ी के बाद दूसरी सीढ़ी की तरफ बढ़ने की कोशिश की जाए,तो विशेषज्ञों ने बताया कि लालन फकीर के दस हजार से अधिक गीत हैं।यह सच है कि लालन फकीर ने अपने गीतों का संग्रह नहीं किया था। उनके गीतों की महत्ता पर स्वयं रवींद्रनाथ टैगोर ने लिखा है तथा उनके कई गीतों का संग्रह रवींद्रनाथ टैगोर ने किया,जिससे यह पता चलता है कि लालन फकीर हमारे समाज के लिए कितना महत्त्वपूर्ण हैं। लालन फकीर की महत्ता पर नजरूल की भी नजरें गईं।लालन पर फिल्म भी बनी है। इस फिल्म का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विमर्श हुआ है।

सामाजिक हकीकत को सामने रखते हुए लालन फकीर ने मुहब्बत की बातें रखी है। इन्हीं मुहब्बतों के जरिये समाज की विकृतियाँ दूर होती हैं। सामाजिक विकृतियों से नफरत की दुकान चलाने वालों को तात्कालिक लाभ भले हो, सही अर्थों में वह लाभ भी सही लाभ नहीं है,उससे लोभ का जन्म होता है,जिस लोभ के चलते कुछ लोग मृगमरीचिका की तरह दौड़ते-भागते-हाँफते हैं,पर प्यास नहीं बुझती है। विकृतियों से प्यास नहीं बुझ सकती। यह प्यास एक रोग है,जिस व्यक्ति ने इस पर नियंत्रण कर लिया,उसकी प्यास बुझती है।लालन फकीर ने उस वक्त बंगाल के गाँवों में अलख जगा दिया,जब कोई भी व्यक्ति उन ग्रामीणों के पास खड़ा होने को तैयार नहीं होता था।सच तो यह है कि लालन फकीर ने इंसान को इंसान बनने की प्रेरणा दी,इसलिए कि इस समाज को इंसान ही रहने योग्य बना सकता है।यही कारण है कि लालन फकीर ने हर तरह के लोभ-लाभ से ऊपर उठने की सलाह देते हुए बताया कि बहुत हुआ,अब तो गेहूँ के साथ घुन पिसना बंद होना उचित है।आखिर कब तक गेहूँ के साथ घुन पिसता रहेगा। लालन फकीर ने यह भी बताया कि गीत के जरिये अलख जगाना जरूरी है। यदि हाथ में इकतारा और डुग्गी उठाने की जरूरत पड़ती है,तो उससे घबड़ाना नहीं है। इंसान और इंसानियत के हित के लिए आगे बढ़कर काम करने से पतन नहीं होता है,बल्कि पतन के अंतहीन कुएँ से बाहर निकलने का साहस मिलता है। इस तरह यह कहा जा सकता है कि इंसान के लिए इंसान की भाषा में इंसान की संस्कृति को पल्लवित-पुष्पित करने का काम लालन फकीर ने किया।उनकी 250वीं जयंती के मौके पर उन्हें सौ-सौ सलाम !

विदेश की खबरें

इजराइली हमले में गाजा के खान यूनिस में 36 लोगों की मौत, दक्षिणी लेबनान में तीन पत्रकार मारे गए

बेरूत : इजराइली हमलों में गाजा में 36 लोग और लेबनान में शुक्रवार को तीन पत्रकार मारे गए। गाजा में मारे गए व्यक्तियों में कई बच्चे शामिल हैं। यह हमला गाजा में जरूरी सामान की आपूर्ति की कमी को लेकर बढ़ती चिंता और संघर्षविराम के लिए अंतरराष्ट्रीय दबाव के बीच हुआ है। गाजा के स्वास्थ्य अधिकारियों ने इन लोगों के मारे जाने की सूचना दी और ये दक्षिणी गाजा शहर खान यूनिस में नवीनतम हैं। खान यूनिस में ही हाल के दिनों में लोग शहर की एकमात्र बेकरी के बाहर ब्रेड के लिए पंक्ति में खड़े थे। ये मौतें अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन द्वारा यह कहे जाने के एक दिन बाद हुई हैं कि इजराइल ने हमास को 'प्रभावी तरीके से तहस-नहस' करने के अपने मकसद को हासिल कर लिया है। साथ ही उन्होंने दोनों पक्षों से बातचीत फिर से शुरू करने का आग्रह किया था। वहीं दक्षिण-पूर्वी लेबनान में पत्रकारों के एक आवासीय परिसर पर हुए इजराइली हवाई हमले में तीन मीडिया कर्मियों की मौत हो गई। 'एसोसिएटेड प्रेस' की तस्वीरों में अब ध्वस्त इमारतें दिखीं जिन्हें मीडिया इकाइयों ने किराये पर लिया था। इन तस्वीरों में ढही हुई इमारतें और वे कारें धूल और मलबे से ढकी हुई दिखाई दीं जिन पर 'प्रेस' लिखा हुआ था। इजराइली सेना ने हमले से पहले कोई चेतावनी जारी नहीं की थी। समाचार नेटवर्क के प्रतिनिधियों और लेबनानी नेताओं ने इजराइल पर युद्ध अपराध और जानबूझकर पत्रकारों को निशाना बनाने का आरोप लगाया। अल जजीरा अंग्रेजी के वरिष्ठ संवाददाता इमरान खान परिसर में मौजूद पत्रकारों में से एक थे। उन्होंने कहा, 'ये केवल पत्रकार थे जो संघर्ष को काफी लंबे समय तक कवर करने के बाद बिस्तर पर सो रहे थे।' सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में उन्होंने कहा कि उन्हें और उनके दल को कोई चोट नहीं आयी है। बेरूत के 'अल-मायादीन टीवी' ने बताया कि शुक्रवार की सुबह हमले में मारे गए पत्रकारों में उसके दो कर्मी कैमरा ऑपरेटर गस्सान नजर और प्रसारण तकनीशियन मोहम्मद रिदा भी शामिल हैं।

आज का पंचांग

कोलकाता : 26 अक्टूबर, शनिवार, 2024, विक्रम सम्वत् 2081, कार्तिक कृष्णपक्ष दशमी, 29:23 तक, नक्षत्र : आश्लेषा, 09:43 तक, योग : शुक्ला, 29:47 तक, सूर्योदय: 5:38, सूर्यास्त: 17:03, चन्द्रोदय : 00:18, चन्द्रास्त: 13:41, शक सम्वत: 1945 सुभाकृतु, सूर्य राशि : तुला, चन्द्र राशि : कर्क, राहू काल : 08:31 से 09:55

राशिफल

मेष : आज का दिन आपके लिए मिश्रित रूप से फलदायक रहने वाला है। आपको किसी संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपके भाई आपके कामों में आपका पूरा साथ देंगे।

वृष : आज का दिन आपके लिए समस्याओं भरा रहने वाला है। आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। नौकरी करने वाले लोगों के अधिकारों में वृद्धि होगी।

मिथुन : आज का दिन आपके लिए मिलाजुला रहने वाला है। आपको छुटपट लाभ की योजनाओं पर पूरा ध्यान देना होगा। आपका धन यदि कहीं अटका हुआ था, तो वह भी आपको मिल सकता है।

कर्क : आज के दिन आपके चारों ओर का वातावरण खुशनुमा रहेगा। आपका धन यदि कहीं लंबे समय से अटका हुआ था, तो वह आपको मिल सकता है। तरक्की की राह में आ रही बाधा दूर होंगी।

सिंह : आज का दिन आपके लिए आर्थिक दृष्टिकोण से अच्छा रहने वाला है। आपके परिवार का कोई सदस्य आपसे नाराज हो सकता है। भाई व बहनों का आपको पूरा साथ मिलेगा।

कन्या : आज का दिन बिजनेस कर रहे लोगों के लिए अच्छा रहने वाला है। आप मौज मस्ती के मूड में रहेंगे। आपके साथी भी कामों में आपका पूरा साथ देंगे।

तुला : आज का दिन आपके लिए मिलाजुला रहने वाला है। आपको अपने अनुभवों का पूरा लाभ मिलेगा। पारिवारिक समस्याओं पर पूरा ध्यान देना होगा।

वृश्चिक : आज का दिन आपके लिए आलस्य को त्याग कर आगे बढ़ने के लिए रहेगा। आप अपनी दिनचर्या को बेहतर बनाए रखें। आपके कुछ लंबे समय से रुके हुए काम पूरे होंगे।

धनु : आज का दिन आपके लिए मिलाजुला रहने वाला है। जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य आपको भरपूर मात्रा में मिलेगा। धार्मिक कार्यों में आपकी खूब रुचि रहेगी।

मकर : आज स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान देना होगा। आपकी सेहत में उतार-चढ़ाव रहेगा। विद्यार्थी पढ़ाई लिखाई पर पूरा ध्यान देंगे, जिस कारण वह किसी प्रतियोगिता में भी अच्छी सफलता हासिल करेंगे।

कुम्भ : आज का दिन आपके लिए सुखमय समृद्धि बढ़ाने वाला रहेगा। परिवार में कुछ खटपट तो होगी, लेकिन आप उसे बैठकर आसानी से दूर कर सकेंगे। पारिवारिक रिश्तों में प्रेम बना रहेगा।

मीन : आज का दिन आपके लिए समस्याओं भरा रहने वाला है। यदि आप किसी नए काम की शुरुआत करने जा रहे थे, तो उसमें भी आपको कुछ समस्याएं आएंगी।

वर्ग पहेली नं. 2898

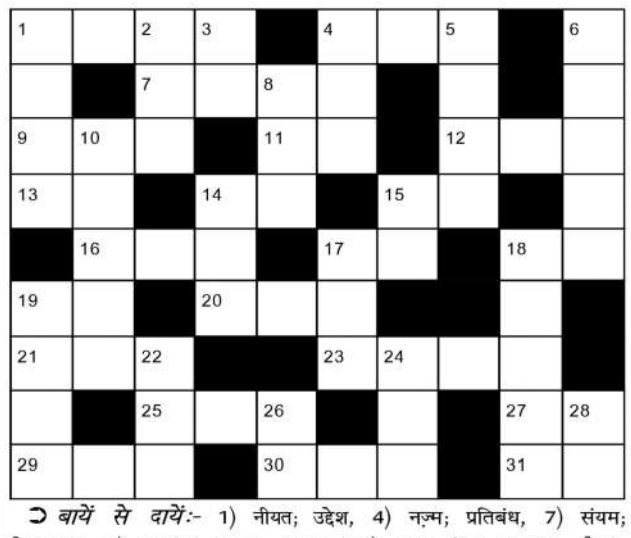

बायें से दायें:- 1) नीयत; उद्देश, 4) नज़्म; प्रतिबंध, 7) संयम; रोगवारण, 9) आवास करना; रहना, 11) हाथ पंजा; राजस्व; *टैक्स*, 12) न जाने; कच्चे तौर पर, 13) राघव, 14) अंतरा *(गीत)*; बँड़ेर *(ज़ंजीर)*, 15) छर्रा *(बंदूक़)*, 16) निर्झर, 17) गुजरात का बाईस-तेईस वाँ मुख्य मंत्री, 18) अनिष्टकारी; गधा; बगला, 19) चुकता; शरीरमुद्रा; नाज़नख़रा, 20) लहर; झोंका, 21) गाँजा, 23) मिस्तरी, 25) देवतासमूह, 27) कलंक, 29) भीड़, 30) भुना मांस, 31) विधि; प्रथा.

ऊपर से नीचे:- 1) स्मारक; क़ब्र; दरगाह, 2) महत्त्वाकांक्षा; भ्रमदर्शन, 3) अनुपात; निर्ख; भाव; रेट, 4) अनुवर; ऊसर 5) सशक्त, 6) सरपरस्त; सहयोगदाता, 8) तानाशाही; सीनाज़ोरी, 10) बुद्धिमान, 14) तंबू की मोटे कपड़े की दीवार, 15) नौकाघाट; आग़ोश, 17) बेला; हथौड़ा, 18) दूरदर्शिता, 19) आश्चर्य, 22) हमेशा, 24) उत्तर, 26) इस के आगे नहीं; बस, 28) ऊर्जा; वेग. *(उत्तर: अगले अंक में)*

पिछली पहेली का उत्तर

त	ड़	का	■	ह	क़ी	क	त	■
■	■	र	वि	वा	र	■	ना	दा
अ	द	ना	■	ला	■	सो	■	न
स	■	मा	दा	■	ब	च	त	■
म	ति	■	रो	म	न	■	रा	ह
■	त	म	गा	■	वा	■	जू	ता
जा	ली	■	■	मा	री	च	■	ह
सू	■	मी	ना	र	■	स	म	त
स	र	ल	■	ना	यि	का	■	■

सुडोकू-पहेली-2858

			8				5	
	9		2					
	1					7		
7				3		4		
2			6					
						9		
5							2	
							6	8
				1				

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरना आवश्यक है। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है।

••••

आड़ी और खड़ी में एवं 3-3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका ध्यान जरूर रखें।

सूडोकू पहेली - 2857 का उत्तर

4	1	7	6	3	8	2	5	9
5	3	9	4	2	1	6	8	7
8	2	6	7	5	9	3	4	1
6	8	3	5	9	4	1	7	2
7	9	4	2	1	3	8	6	5
2	5	1	8	7	6	9	3	4
1	6	5	9	8	7	4	2	3
9	7	8	3	4	2	5	1	6
3	4	2	1	6	5	7	9	8

महानगर में जलजमाव से स्थिति हुई बदतर

❑ एसएसकेएस व निगम मुख्यालय सहित महानगर के अधिकतर सड़क रात भर रही डूबी ❑ निगम ने बनाया पुरानी व्यवस्था का बहाना

चन्दन राय

कोलकाता : चक्रवात 'दाना' के असर से कोलकाता समेत दक्षिण बंगाल में रातभर बारिश हुई। इसके प्रभाव में विशाल क्षेत्र पानी में डूबे हुए हैं। कोलकाता में भी कई जगहों पर पेड़ टूट गए। एसएसकेएम अस्पताल के आसपास, निगम मुख्यालय सहित कई जगहों पर पानी जमा रहा। हालांकि, पानी की समस्या को खत्म करने के लिए कोलकाता नगर निगम सक्रिय है। चक्रवात दाना पर नजर रखने के लिए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी गुरुवार रात नवान्न में थीं। मेयर फिरहाद हकीम भी निगम के कंट्रोल रूम में थे। मेयर फिरहाद हकीम ने आश्वासन दिया कि अगर अगले 4 घंटों तक बारिश नहीं हुई, तो कहीं भी जलभराव नहीं होगा। शुक्रवार दोपहर फिरहाद ने 'दाना' के बाद के हालात पर प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने कहा कि कोलकाता नगर पालिका प्रति घंटे 20 मिलीमीटर तक पानी छोड़ सकती है लेकिन अगर इससे ज्यादा पानी जमा हो गया तो 3-4 घंटे का समय देना होगा। ठनठनिया समेत कोलकाता के बड़े इलाके पानी में डूबे हुए हैं। कुछ जगहों पर सुबह घुटने तक पानी भी देखा गया है। फिरहाद ने यह भी कहा कि ठनठनिया में पिछले 50 साल से पानी जमा हो रहा है।कम ज्वार के समय भी पानी खतरे के निशान से ऊपर था। इसलिए पानी निकालने के लिए लॉकगेट नहीं खोल सके।

फिलहाल एसएसकेएम से पानी नहीं मिल रहा है। और अगर बारिश नहीं हुई तो 4 घंटे में पानी उतर जाएगा। क्योंकि, लॉकगेट खोल दिया गया है।

❑ दिनभर भरा रहा पानी

लगातार बारिश से कोलकाता में पानी का संकट दिनभर रहा।ठनठनिया, बोउबाजार, मौलाली से मैदान तक सड़क नदी की तरह है। कैखाली से बेहाला तक घुटना तक पानी रहा । कोलकाता की अधिकांश महत्वपूर्ण सड़कें पहले से ही जलमग्न हैं। चक्रवात 'दाना' के प्रभाव से सुबह से भारी बारिश हो रही है। इसकी वजह से सेंट्रल एवेन्यू,बीबी गांगुली स्ट्रीट क्रॉसिंग जलमग्न हो गई है। सड़क के एक किनारे कारों को चलते देखा गया है। क्योंकि, दूसरे छोर पर पानी अकेले जमा होता है। श्यामबाजार के अलावा उत्तरी कोलकाता के बड़े इलाके, मुक्तिराम बाबू स्ट्रीट, ठनठनिया कालीबाड़ी, स्ट्रैंड रोड के साथ नॉर्थ पोर्ट पुलिस स्टेशन में पानी जमा रहा।छनठनिया कालीबाड़ी के ठीक बगल में विधान सारणी में पानी जमा हो गया ।पानी निकालने के लिए कोलकाता नगर निगम से सुपर सक्शन पंप भेजे गए। दक्षिण कोलकाता में जगह-जगह पानी जमा हो गया है।हालांकि अधिकांश सड़कें पानी में डूबी रही।

❑ सड़कों की बिजली रहेगी बाधित

बाढ़ग्रस्त कोलकाता में बिजली के करंट से होने वाली जनहानि को रोकने के लिए नगर पालिका सक्रिय है। मेयर ने कहा कि काली पूजा के लिए लगाई गई सभी लाइटें तब तक बंद रहेंगी जब तक पानी पूरी तरह से सूख न जाए। लेकिन अगर बारिश नहीं हुई तो अगले 3 घंटे में पानी उतर जाएगा।

❑ पूर्व मेयर ने बताया धोखा

मेयर के आश्वासन को कोलकाता के पूर्व मेयर विकासरंजन भट्टाचार्य ने धोखा बताया। उन्होंने कहा कि वाम काल में कोलकाता के सीवर साफ किए जाते थे। इसलिए कोलकाता के लोगों को लाभ मिल रहा है। कोलकाता के मूल निवासी यह सब जानते हैं। लोग सब कुछ समझते हैं।

यहां इतनी हुई बारिश (12 बजे तक)

पम्पिंग स्टेशन	बारिश (मिलीमीटर)	पम्पिंग स्टेशन	बारिश (मिलीमीटर)
मानिकतला -	83.00	सी. पी टी नहर -	110.40
बीरपारा-	70.00	दत्त बागान-	73.50
बेलगछिया -	69.00	जिंजिरा बाजार -	97.00
स्टेप लॉक-	71.00	बेहाला फ्लाइंग क्लब -	96.30
तपसिया-	109.00	टेंगरा-	78.20
रिवर्स-	69.00	पगलाडांगा-	84.60
पामर ब्रिज -	94.00	चिंगरीघाटा-	69.00
ठनठनिया -	79.80	मार्कस स्क्वायर-	58.70
बालीगंज-	124.00	पाटुली -	129.00
मोमिनपुर-	111.00	ट्रेंचिंग ग्राउंड-	103.50
चेतला लॉक-	107.00	धनखेती नहर-	109.00
जोधपुर पार्क -	163.00	जोका -	75.00
कालीघाट-	105.30		
गरिया-	124.00		

एम जी रोड

15 घंटे के बाद शुरू हुई उड़ान सेवा

कोलकाता : 15 घंटे बंद होने के बाद कोलकाता हवाई अड्डे ने शुक्रवार सुबह आठ बजे से उड़ान सेवाएं फिर से शुरू कर दी हैं। चक्रवात 'दाना' के मद्देनजर यात्रियों की सुरक्षा के लिए कोलकाता हवाई अड्डे पर उड़ान सेवाओं को 15 घंटे के लिए निलंबित करने का निर्णय लिया गया। चक्रवात दाना का भूस्खलन पहले ही पूरा हो चुका है। हालात पर नजर रखते हुए कोलकाता एयरपोर्ट पर तय समय से काफी पहले सेवा शुरू कर दी गई। शुक्रवार को सुबह 8:35 बजे दिन की पहली फ्लाइट कोलकाता एयरपोर्ट पर उतरी। यह दिल्ली से कोलकाता आयी है और सुबह 8:40 बजे कोलकाता हवाई अड्डे से इंफाल के लिए उड़ान भरती है। सुबह 8 बजे से हवाईअड्डे का संचालन सामान्य हो गया है। चक्रवात दाना के मद्देनजर कोलकाता हवाई अड्डे पर गुरुवार शाम 6 बजे से शुक्रवार सुबह 9 बजे तक उड़ानें निलंबित करने का निर्णय लिया गया। लेकिन हालात को देखते हुए कुछ देर पहले ही उड़ान सेवाएं सामान्य कर दी गईं। कोलकाता अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा चक्रवात का सामना करने के लिए तैयार था। तूफान की आशंका में यात्री माल ढुलाई ट्रॉलियों को बांध दिया गया था। प्रस्थान द्वार के सामने रेत की बोरियां रखी गई थीं। यद्यपि दाना का बंगाल पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। प्रशासन को अभी तक विशेष नुकसान की कोई सूचना नहीं मिली है।

चक्रवात दानार ने ओडिशा में हवलीखाती नेचर कैंप के पास दस्तक दी। इसके चलते गुरुवार रात से ही कोलकाता समेत पश्चिम बंगाल के कई जिलों में बारिश शुरू हो गई हैं। शुक्रवार सुबह से ही कई जिलों में भारी बारिश शुरू हो गई है।

कॉलेज स्ट्रीट

चक्रवात 'दाना' : दक्षिण बंगाल में हल्की से मध्यम बारिश की संभावना

तटीय क्षेत्रों में मछुआरों को सुबह तक समुद्र में नहीं जाने की सलाह

कोलकाता : मौसम कार्यालय ने कहा है कि शनिवार को दक्षिण बंगाल में कई स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है तथा पूर्व और पश्चिम मेदिनीपुर और झाडग्राम जिलों में एक या दो स्थानों पर भारी बारिश हो सकती है। 'दाना' तूफान आज तडक़े पड़ोसी रा'य ओडिशा में धामरा और भितरकनिका के बीच तट पर पहुंचा। दोपहर तक वह कमजोर पड़ गया।

बंगाल की खाड़ी में 80-90 किलोमीटर प्रति घंटा से 100 किलोमीटर प्रति घंटा तक की रफ्तार से हवा चली जो धीरे-धीरे कमजोर हो गई तथा शाम तक 40-50 किलोमीटर प्रति घंटा से 60 किलोमीटर प्रति घंटा तक की रफ्तार पर आ गई। मौसम कार्यालय ने ओडिशा और बंगाल के तटीय क्षेत्रों में मछुआरों को शनिवार सुबह तक समुद्र में नहीं जाने की सलाह दी है।

❑ दक्षिण बंगाल के जिलों में हुई भारी बारिश

शुक्रवार को भीषण चक्रवात 'दाना' के ओडिशा में दस्तक देने के बाद कमजोर होकर चक्रवाती तूफान में तब्दील हो जाने पर कोलकाता सहित दक्षिण बंगाल के कई जिलों में मूसलाधार वर्षा हुई। पूर्व मेदिनीपुर, उत्तर और दक्षिण 24 परगना, कोलकाता, हावड़ा, हुगली, पुरुलिया और बांकुड़ा, पश्चिम मेदिनीपुर और झाडग्राम में भारी बारिश हई।

मौसम कार्यालय के अनुसार कोलकाता में शुक्रवार पूर्वाह्न 11.30 बजे तक 24 घंटे में 100.3 मिमी बारिश दर्ज की गई। शुक्रवार सुबह साढ़े आठ बजे तक 24 घंटों में दक्षिण 24 परगना के डायमंड हार्बर और सागर द्वीप में क्रमश: 93 मिलीमीटर (मिमी) और 89.6 मिमी बारिश हुई। कलाईकुंडा में 90.6 मिमी, हल्दिया में 80 मिमी, झाडग्राम में 66.6 मिमी, मेदिनीपुर शहर में 52 मिमी और दीघा में 37 मिमी वर्षा हुई।

सियालदह डिवीजन चक्रवात 'दाना' के प्रभाव से बचने में रहा कामयाब

कोलकाता, समाज्ञा : चक्रवात दाना के आते ही कोलकाता और उपनगरीय के विभिन्न हिस्सों में मूसलाधार और लगातार बारिश होने लगी। जिस कारण गुरुवार शाम से शुक्रवार सुबह तक सियालदह डिवीजन में कुछ ईएमयू ट्रेन संचालन को निलंबित कर दिया गया। चक्रवात के संभावित विनाशकारी परिणामों से निपटने के लिए, सियालदह डिवीजन ने यात्रियों की सुरक्षा और ट्रेन सेवाओं के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक उपाय लागू किए थे। संभावित बिजली व्यवधानों के प्रभाव को कम करने के लिए सियालदह, कोलकाता, सोनारपुर, नामखाना, लक्ष्मीकांतपुर, नामखाना आदि जैसे सभी महत्वपूर्ण और संवेदनशील स्थानों पर डीजी सेट रणनीतिक रूप से तैनात किए गए थे। पटरियों पर जलभराव को रोकने के लिए पर्याप्त संख्या में पंप भी लगाए गए। सियालदह वॉर रूम में स्थिति पर नजर रखने के लिए चौबीसों घंटे अधिकारियों को तैनात किया गया था। ऑपरेटिंग, इंजीनियरिंग, मैकेनिकल, सिग्नल और टेलीकॉम विभागों जैसे विभिन्न विषयों के कई विशेषज्ञ कर्मचारियों को सिस्टम की अखंडता की निगरानी और रखरखाव के लिए महत्वपूर्ण बिंदुओं पर तैनात किया गया। चक्रवात दाना से प्रभावित किसी भी यात्री या कर्मचारी को तत्काल चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए आवश्यक चिकित्सा व्यवस्था की गई थी। आरपीएफ और अन्य संबंधित विभाग कानून और व्यवस्था बनाए रखने, रेलवे संपत्ति की रक्षा करने और यात्रियों और कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हाई अलर्ट पर हैं।

सियालदह डिवीजन ने चक्रवात दाना के प्रभाव को सफलतापूर्वक टाल दिया है और किसी भी बड़ी विफलता और नुकसान से बचने में कामयाब रहा है। यह केवल फुल प्रूफ व्यवस्था, ऑपरेटिंग सिग्नलिंग आदि सहित सभी क्षेत्रों में उचित जनशक्ति तैनाती की तैयारी और सियालदह के डीआरएम दीपक निगम के प्रेरक नेतृत्व के कारण ही हो सका।

हावड़ा में भी चक्रवाती तूफान 'दाना' का दिखा असर, लगातार बारिश से पानी में डूबा शहर

जल-जमाव के कारण पानी में गिरने से निगम के एक अस्थायी कर्मचारी की मौत

हावड़ा मैदान

हावड़ा, समाज्ञा : हावड़ा में भी चक्रवाती तूफान 'दाना' के कारण गुरुवार रात से ही बारिश शुरू हो गई। भारी बारिश के कारण शहर के कई इलाके पानी में डूब गए। जगह-जगह जलजमाव की स्थिति बन गई। चाहे सड़क हो या मोहल्ला सभी जगह पानी जमा हो गया। वहीं, लिलुआ, बेलुर, बनारस रोड, उत्तर हावड़ा, टिकियापाड़ा, बेलगछिया सहित अन्य इलाकों में भी जलमग्न जैसी स्थिति बनी हुई है। निगम के चेयरमैन डॉ सुजय चक्रवर्ती ने बताया कि बारिश के कारण जल-जमाव हुआ है। बारिश अगर रुक जाती है तो शनिवार की सुबह तक इलाकों से पानी निकल जायेगा। उन्होंने आगे बताया कि जो इलाके नीचे है वहां पंप लगाए गए हैं। उन्होंने कहा कि शहर के किसी भी इलाके में पेड़ गिरने की खबर नहीं है। वहीं, मध्य हावड़ा में एक मकान में दरारें देखने की खबर है। डुमुरजला में पानी में गिरने से निगम के एक अस्थायी कर्मचारी की हुई मौत पर दुख व्यक्त करते हुए कहा कि, यह घटना कैसे हुई, इसका पता लगाया जा रहा है।

– जल-जमाव के कारण पानी में गिरने से निगम के एक अस्थायी कर्मचारी की मौत

जल-जमाव के कारण जमे पानी में गिरने से निगम के एक अस्थायी कर्मचारी की मौत हो गई। यह घटना डुमुरजला इलाके के तांतीपाड़ा इलाके की है। मृतक की पहचान गौतम चट्टोपाध्याय (38) के रूप में हुई है। मिली जानकारी के अनुसार, गौतम डुमुरजला इलाके के तांतीपाड़ा स्थित अपने घर लौट रहे थे। उसी दौरान सड़क पर जमे हुए पानी में वे गिर पड़े और बाहर नहीं निकल पाने के कारण उनकी मौत हो गई। खबर मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस गौतम को अस्पताल ले गई, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

दाना के बाद सामान्य हुई रेल सेवा

❑ समय से दस मिनट पहले शुरु लेकिन यात्रियों की संख्या रही कम

कोलकाता : रेलवे ने पहले घोषणा की थी कि चक्रवात दाना के कारण लोकल ट्रेनें बंद कर दी जाएंगी। लोकल ट्रेन सेवाएं गुरुवार रात 8 बजे से शुक्रवार सुबह 10 बजे तक निलंबित रहने वाली थीं। हालांकि, शुक्रवार की सुबह निर्धारित समय से 10 मिनट पहले ही सियालदह डिवीजन में ट्रेन सेवा सामान्य हो गई । शुक्रवार सुबह से सभी लाइनों की लोकल ट्रेनें शुरू हो गई हैं लेकिन यात्रियों की संख्या काफी कम रही। हावड़ा स्टेशन पर भी यही तस्वीर देखने को मिली।दाना गुरुवार आधी रात को ओडिशा के धामरा, भितरकनिका के पास पहुंचा। इसका प्रभाव बंगाल के तट पर भी दिखा। हालांकि, तूफ़ान की विभीषिका उतनी नहीं हुई, तटीय क्षेत्र के निवासी भी बच गए । ऐसे में रेलवे लाइन को कोई नुकसान नहीं हुआ। परिणामस्वरूप, ट्रेनों की आवाजाही सामान्य हो गई है। स्टेशन भी लय में लौट रहे हैं।

इस दिन सुबह 10 बजे से पहले ही नामखाना, सोनारपुर, डायमंड हार्बर, कैनिंग समेत कई जगहों पर ट्रेनें खुल गईं। सुबह से ही आम लोग स्टेशन पहुंच गए लेकिन कुछ ट्रेनें आधे घंटे की देरी से चल रही हैं। ऐसे में यात्रियों को स्टेशन पर इंतजार करना पड़ता है। लेकिन अन्य दिनों की अपेक्षा भीड़ कम है। आपदा के कारण कई लोगों ने अपना घर नहीं छोड़ा। कुछ लोग ट्रेन की आवाजाही के बारे में भी अनिश्चित थे। गुरुवार की रात बनगांव शाखा की ट्रेन चली लेकिन हसनाबाद शाखा की ट्रेन नहीं चली। शुक्रवार को वह सेवा भी सामान्य हो गई।

लंबी दूरी की ट्रेनों के मामले में कोई नई जानकारी नहीं दी गई है। पहले रद्द की गई ट्रेनों को छोड़कर सभी सामान्य समय पर चलेंगी। भुवनेश्वर और पुरी ट्रेनें दोपहर 12 बजे के बाद रवाना होंगी।

पूर्व रेलवे

ई-निविदा सं. एलआरसी-3-सीटी_डीपीटी_एलएलएच, दिनांक 23.10.2024, उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (एलएचबी), सी एंड डब्ल्यू वर्कशॉप, पूर्व रेलवे, लिलुआ, हावड़ा, पिन-711204 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा (खुली निविदा) ऑनलाइन आमंत्रित की जाती है: **कार्य का नाम:** एलएचबी एवं आईसीएफ कोचों के अंडर फ्रेम सस्पेंशन माउंटिंग ब्रैकेट्स एवं मेंबर्स के बेल्डेड जॉइंट्स (नए एवं पुराने दोनों) का डाई पेनिट्रेशन टेस्ट। **कार्य का अनुमानित मूल्य :** रु. 44,94,384/-, **बयाना राशि:** रु. 89,900/-, **निविदा कागजात का मूल्य :** रु. 0.00, **निविदा की अंतिम तिथि और समय:** दिनांक 13.11.2024 को 14.00 बजे। **वेबसाइट जहाँ निविदा का संपूर्ण विवरण उपलब्ध है: www.ireps.gov.in**
MISC-212/2024-25
निविदा सूचना वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है
हमें यहाँ देखें : @EasternRailway
@easternrailwayheadquarter

NAME AND D.O.B CHANGE

I, Rohidas Jayvant Bhise father of Army No. 8037007Y, Rank-Hav, Bhise Laxman Rohidas Residing at Village- Pawarwadi, Post.- Dive, Teh.- Purandar, Dist.- Pune, State.- Maharastra, Pin.- 412301. have changed my name from Rohidas to Rohidas Jayvant Bhise and date of birth from 31.01.1964 to 01.01.1961 by Vide affidavit Before the Notary Public Rekha Tewar Notary Govt. of W.B at Kolkata dated 21.10.2024.

NAME AND D.O.B CHANGE

I, Bebi Rohidas Bhise Mother of Army No. 8037007Y, Rank-Hav, Bhise Laxman Rohidas Residing at Village. Pawarwadi, Post.- Dive, teh- Purandar, Dist.- Pune, State.- Maharastra, Pin.- 412301. have changed my name from Baby Bhise to Bebi Rohidas Bhise and date of birth from 31.01.1969 to 01.01.1968 by Vide affidavit Before the Notary Public Rekha Tewar Notary Govt. of W.B at Kolkata dated 21.10.2024.

पूर्व रेलवे

वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर /(साधारण), पूर्व रेलवे, सियालदह, दूसरी मंजिल, रिमोट कंट्रोल बिल्डिंग, कोलकाता-700014 द्वारा निम्नवर्णित कार्यों के सिलसिले में निम्नलिखित ई-निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं: **क्रम सं. 1, निविदा सं.: ईएलईजी-ओटी-1146-2024-25, दिनांक: 22.10.2024, कार्य का विवरण:** बीआरएसएच/ सियालदह के क्रमशः फीमेल सर्जिकल वार्ड (मौजूदा फीमेल मेडिकल, III), आईसीयूएस (मौजूदा सीसीयू-I), नेफ्रोलॉजी वार्ड (मौजूदा सीसीयू-II) और नेफ्रोलॉजी वार्ड (मौजूदा सीसीयू-II, नेगेटिव प्रेशर) में 03 (तीन) वर्ष के लिए बीआरएच टाइप एयर-कंडीशनिंग प्लांट, क्षमता 72 एचपी, 32 एचपी और 20 एचपी (प्रस्तुतकारक-हिटाची) का व्यापक वार्षिक रखरखाव ठेका। **निविदा मूल्य:** रु. 21,95,544.48, **बयाना राशि:** रु. 43,900/-, **समापन अवधि:** 36 माह। **निविदा कागजात का मूल्य:** रु.0.00, **क्रम सं. 2, निविदा सं.: ईएलईजी-ओटी-1147-2024-25, दिनांक: 22.10.2024, कार्य का विवरण:** सियालदह मंडल के तहत कृष्णनगर सिटी-लालगोला शाखा में प्रहरीयुक्त नॉन-इंटरलॉक्ड एलसी गेट सं. 92ई (देबग्राम-पलासी), (97ई, 102ई, 116ई, 127ई) और 103ई (पलासी-रेजीनगर) टीयूवी 20000 से 50000 का समुन्नयन और इंटरलॉकिंग। **निविदा मूल्य:** रु. 12,80,546/-, **बयाना राशि:** रु. 25,600/-, **समापन अवधि:** 18 माह। **निविदा कागजात का मूल्य:** रु.0.00, **क्रम सं. 3, निविदा सं.: ईएलईजी-ओटी-1148-2024-25, दिनांक: 22.10.2024, कार्य का विवरण:** सियालदह मंडल के तहत विभिन्न एसएसई/इलेक्ट. (जी) के अंतर्गत अन्य यात्री सुविधाओं के साथ स्टेशन आलोक व्यवस्था में सुधार एवं पुरानी लाइटिंग को बदलना। **निविदा मूल्य:** रु. 5,14,68,866/-, **बयाना राशि:** रु. 4,07,400/-**समापन अवधि:** 18 माह। **निविदा कागजात का मूल्य:** रु.0.00 । **निविदा बंद होने की तिथि और समय:** दिनांक 13.11.2024 को 14.00 बजे। **निविदा बोली के खुलने की तिथि और समय:** दिनांक 13.11.2024 को 14.00 बजे के बाद। **निविदा बोली के प्रारंभ होने की तिथि** : दिनांक 30.10.2024, निविदा सूचना एवं समय-समय पर जारी संशोधनी का विवरण वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है।
SDAH-212/2024-25
निविदा सूचना वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है
हमें यहाँ देखें : @EasternRailway
@easternrailwayheadquarter

पूर्व रेलवे

एनआईटी सं.: 210_2024-25, 211_2024-25, 212_2024-25, 213_2024-25 और 214_2024-25, दिनांक 23.10.2024, मंडल रेल प्रबंधक, पूर्व रेलवे, हावड़ा, डीआरएम बिल्डिंग, रेलवे स्टेशन के पास, हावड़ा-711101 (वरिष्ठ डीईएन/1/हावड़ा के क्षेत्राधिकार हेतु) द्वारा निम्नलिखित कार्यों के लिए सिंचाई/ सीपीडब्ल्यूडी/ एसईबी/एमईएस या किसी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम से पंजीकृत समेत समप्रकृति के कार्य के अनुभवी एवं अपेक्षित वित्तीय संपन्न निविदाकारों से निम्नलिखित ई-निविदा ऑनलाइन आमंत्रित की जाती है: **क्रम सं.1, एनआईटी सं. 210_2024-25, कार्य का विवरण** : बाली-वरिष्ठ डीईएन/1/हावड़ा के अधीन बाली गुड्स शेड का उन्नयन एवं आधुनिकीकरण। **अनुमानित मूल्य :** रु. 3,57,02,557.05, **बयाना राशि:** रु. 3,28,500/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य :** शून्य। **क्रम सं.2, एनआईटी सं. 211_2024-25, कार्य का विवरण** : श्रीरामपुर-वरिष्ठ डीईएन/1/हावड़ा के अधीन श्रीरामपुर गुड्स शेड का उन्नयन एवं आधुनिकीकरण। **अनुमानित मूल्य :** रु. 3,79,12,813.06, **बयाना राशि:** रु. 3,39,600/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य :** शून्य। **क्रम सं.3, एनआईटी सं. 212_2024-25, कार्य का विवरण** : तारकेश्वर-वरिष्ठ डीईएन/1/हावड़ा के अधीन तारकेश्वर गुड्स शेड का उन्नयन एवं आधुनिकीकरण। **अनुमानित मूल्य :** रु. 4,00,65,287.98, **बयाना राशि:** रु. 3,50,300/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य :** शून्य। **क्रम सं.4, एनआईटी सं. 213_2024-25, कार्य का विवरण** : भद्रेश्वर-वरिष्ठ डीईएन/1/हावड़ा के अधीन भद्रेश्वर गुड्स शेड का उन्नयन एवं आधुनिकीकरण। **अनुमानित मूल्य :** रु. 3,62,27,438.22, **बयाना राशि:** रु. 3,31,100/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य :** शून्य। **क्रम सं.5, एनआईटी सं. 214_2024-25, कार्य का विवरण** : मगरा-वरिष्ठ डीईएन/1/हावड़ा के अधीन मगरा गुड्स शेड का उन्नयन एवं आधुनिकीकरण। **अनुमानित मूल्य :** रु. 3,98,68,982.83, **बयाना राशि:** रु. 3,49,400/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य :** शून्य। **समापन अवधि :** 12 (बारह) माह (क्रम सं. 1 से 5 प्रत्येक हेतु)। यदि निविदा आमंत्रण सूचना में उल्लिखित अंतिम तिथि को किसी भी कारण से अवकाश/ बंद/हड़ताल घोषित किया जाता है, तो ऑनलाइन निविदा की अंतिम तिथि नहीं बदली जाएगी क्योंकि आईआरईपीएस की वेबसाइट में किया गया आवेदन, निविदा की अंतिम तिथि और समय के बाद किसी भी प्रस्ताव को जमा करने की अनुमति नहीं देता है। तथापि निविदाओं का ऑनलाइन खोला जाना अगले कार्यदिवस में किया जाएगा। **निविदा की अंतिम तिथि और समय :** दिनांक 11.11.2024 को 14.00 बजे। निविदा का विवरण वेबसाइट : **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। निविदाकारों से अनुरोध किया जाता है कि अपने प्रस्ताव को उपर्युक्त वेबसाइट पर ऑनलाइन जमा करें। **ईएमडी और टीडीसी का भुगतान**-ई-निविदा प्रणाली के मामले में, बयाना राशि जमा (ईएमडी) और निविदा कागजात की लागत (टीडीसी) का भुगतान, केवल नेट बैंकिंग या पेमेंट गेटवे के माध्यम से स्वीकार किया जाएगा। कोई मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार्य नहीं होगा।
HWH-366/2024-25
निविदा सूचना वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है
हमें यहाँ देखें : @EasternRailway
@easternrailwayheadquarter

पूर्व रेलवे

ई-नीलामी आमंत्रण सूचना

सं. सीओएम/डीईवी/ई-ऑक्शन/पीयू/एचडब्ल्यूएच/2022 **दिनांक 22.10.2024**

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, पूर्व रेलवे, हावड़ा, चतुर्थ तल, रेल यात्री निवास बिल्डिंग, हावड़ा स्टेशन के पास, हावड़ा-711101 द्वारा हावड़ा मंडल के तहत 03 वर्ष की अवधि के लिए **तारापीठ रोड और तारकेश्वर (कम्पोजिट-बुकिंग हॉल और आरामबाग सिरा)** में सामान्य पे एंड यूज शौचालय के परिचालन और रखरखाव के लिए नया ठेका प्रदान करने हेतु ई-नीलामी आमंत्रित की जाती है। संदर्भित ई-ऑक्शन रेलवे बोर्ड के फ्रेट मार्केटिंग सर्कुलर नं. 11 ऑफ 2022 एवं कमर्शियल सर्कुलर नं. 14 ऑफ 2022 के अनुसार संचालित है। अधिक जानकारी और ई-नीलामी में भागीदारी के लिए कृपया वेबसाइट **www.ireps.gov.in** ई-ऑक्शन लीजिंग मॉड्यूल के माध्यम से देखें। **ऑक्शन कैटलॉग सं.: पीएनयू-एचडब्ल्यूएच-02-आर, क्रम सं. , लॉट सं./कैटेगरी और स्टेशनों के नाम** निम्नानुसार हैं : **(1)** पीएनयू-एचडब्ल्यूएच-टीपीएफ-टीओआई-47-24-1 और तारापीठ रोड (टीपीएफ)। **(2)** पीएनयू-एचडब्ल्यूएच-टीएके-टीओआई-57-24-2 और तारकेश्वर (टीएके)। **नीलामी की तिथि और समय** : दिनांक 05.11.2024 को 12.00 बजे (क्रम सं 1 और 2 के लिए)।
HWH-360/2024-25
निविदा सूचना वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है
हमें यहाँ देखें : @EasternRailway @ easternrailwayheadquarter

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।
www.samagya.in
समाज्ञा
NEWS PAPER ADVERTISING SOLUTION
- MATRIMONIAL
- PROPERTY
- RECRUITMENT
- EDUCATION
- NAME CHANGE
- PUBLIC NOTICE
- OBITUARY
- REMEMBRANCE
- DISPLAY

TO AD IN SAMAGYA PLEASE CONTACT
samagyaadvt@gmail.com | www samagya.in
81, Chintamani Dey Road, Howrah 711 101, Mobile: 70444 44522

page 4_page11 26-10-2024 01:39 Page 1

उच्च प्राथमिक स्कूलों में 14,052 शिक्षकों की नियुक्ति का रास्ता साफ

❑ **सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट के आदेशानुसार नियुक्ति करने का आदेश दिया**

कोलकाता : दिवाली के ठीक पहले राज्य के उच्च प्राथमिक स्कूलों में शिक्षक पद के लिए आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। करीब आठ वर्षों से उच्च प्राथमिक स्कूलों में लंबित 14 हजार से अधिक शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया को कलकत्ता हाई कोर्ट ने शुरू करने का आदेश दिया था, लेकिन हाई कोर्ट के इस

फैसले को राजीव ब्रह्म सहित कई अभ्यर्थियों ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। उनका आरोप था कि उक्त शिक्षक नियुक्ति प्रक्रिया में आरक्षण नीति के नियमों का सही प्रकार से अनुपालन नहीं किया गया है। शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायाधीश जेबी पारदीवाला व न्यायाधीश मनोज मिश्रा की बेंच ने याचिका को खारिज करते हुए हाई कोर्ट के आदेशानुसार नियुक्ति करने का आदेश दिया।

हाई कोर्ट के न्यायाधीश तपोब्रत चक्रवर्ती व न्यायाधीश पार्थसारथी चटर्जी की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने 14 हजार से अधिक रिक्त पदों पर नियुक्तियों को मंजूरी देते हुए नये सिरे से मेरिट लिस्ट प्रकाशित करने का आदेश दिया था। हाई कोर्ट ने 28 अगस्त को यह फैसला सुनाते हुए स्कूल सेवा आयोग (एसएससी) को अगले चार सप्ताह के भीतर सूची जारी करने को कहा था। हाई कोर्ट ने अपने आदेश में 14052 पदों पर नियुक्ति प्रक्रिया शुरू करने का आदेश देते हुए कहा था कि पिछले पैनल में जिन 1463 अभ्यर्थियों के नाम नहीं थे, उनके नाम भी शामिल कर नये सिरे से पैनल सूची प्रकाशित की जाए।

राज्य शिक्षा विभाग ने वर्ष 2016 में उच्च प्राथमिक स्कूलों में 14339 रिक्त पदों पर नियुक्ति के लिए विज्ञप्ति जारी की थी। इसमें कहा गया था कि 2011 व 2015 की शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीइटी) उत्तीर्ण करने वाले आवेदन कर सकेंगे। इसके बाद वर्ष 2019 में इंटरव्यू के लिए सूची प्रकाशित की गई, जिस पर सवाल उठाते हुए हाई कोर्ट में याचिका दायर की गई। 2020 में हाई कोर्ट की न्यायाधीश मौसमी भट्टाचार्य ने पूरे पैनल को रद्द करते हुए नये सिरे से पैनल प्रकाशित करने का आदेश दिया था। इसके बाद नये सिरे से तालिका प्रकाशित की गई लेकिन इसके खिलाफ भी हाई कोर्ट में मामला हुआ।

❑ **11 नवंबर से दूसरे चरण की काउंसिलिंग प्रक्रिया होगी शुरू**

इस बार मामले की सुनवाई तत्कालीन न्यायाधीश अभिजीत गांगुली की एकल पीठ में हुई और न्यायाधीश ने नई सूची पर स्थगनादेश लगा दिया। फिर यह मामला खंडपीठ में गया। खंडपीठ ने 2023 में पैनल प्रकाशित करने की अनुमति दी थी। हालांकि, कोर्ट ने स्पष्ट किया था कि एसएससी पैनल तो जारी कर सकता है, लेकिन किसी भी उम्मीदवार की नियुक्ति की सिफारिश नहीं कर सकता। गौरतलब है कि हाई कोर्ट के आदेश के बाद राज्य सरकार ने उच्च प्राथमिक स्कूलों में शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया शुरू कर दी है। स्कूल सर्विस कमीशन की ओर से पैनल प्रकाशित कर प्रथम चरण काउंसिलिंग की जा चुकी है। बताया गया है कि 11 नवंबर से दूसरे चरण की काउंसिलिंग प्रक्रिया होगी।

भारतीय क्रिएटर्स के लिए यूट्यूब चला रहा शॉपिंग एफिलिएट प्रोग्राम

कोलकाता, समाज्ञा : यूट्यूब क्रिएटर्स पर लोग बहुत विश्वास करते हैं। भारत में 65% से अधिक कंज्यूमर्स पारंपरिक सेलिब्रिटीज की तुलना में यूट्यूब क्रिएटर्स पर अधिक भरोसा करते हैं, जो प्रामाणिक कनेक्शन के माध्यम से खरीदी करना तय करते हैं। ऐसा ई-कोनॉमी इंडिया रिपोर्ट स्पष्ट करती है। ऐसे में, भारतीय क्रिएटर्स की सुविधा को और भी अधिक बढ़ाते हुए, यूट्यूब ने यूट्यूब शॉपिंग एफिलिएट प्रोग्राम लॉन्च किया है, जो क्रिएटर्स को अपने कॉन्टेंट में प्रोडक्ट्स टैग करने की सुविधा देता है। इस प्रोग्राम के लिए यूट्यूब ने फिलहाल प्रमुख भारतीय ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स फ्लिपकार्ट और मिंत्रा के साथ साझेदारी की है। जब दर्शक इन टैग किए गए प्रोडक्ट्स को उपरोक्त साइट्स से खरीदेंगे, तो क्रिएटर्स को कमीशन मिलेगा। इससे क्रिएटर्स के लिए आय का एक नया स्रोत खुलेगा।

मार्स पेटकेयर ने बेघर पालतू जानवरों को प्यार भरे घर दिलाने के लिए शुरू किया राष्ट्रीय अभियान

कोलकाता, समाज्ञा : पालतू जानवरों की देखभाल और पोषण में अग्रणी मार्स पेटकेयर ने शनिवार को बेघर और परित्यक्त पालतू जानवरों के लिए स्थायी घर खोजने के लिए अपने बहुप्रतीक्षित अडॉप्शन वीकेंड का आयोजन किया। पीपल फॉर एनिमल्स सहित प्रमुख भागीदार एनजीओ के साथ मिलकर भारत के विभिन्न शहरों में इस पहल का आयोजन किया गया, जो देश में पालतू जानवरों के जीवन को बेहतर बनाने के प्रति मार्स पेटकेयर की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मार्स पेटकेयर और पीपल फॉर एनिमल्स ने पहली बार साझेदारी की है, जिसका उद्देश्य भारतभर में बेघर पालतू जानवरों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालना है। इस सहयोग के तहत जिम्मेदार पालतू गोद लेने के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक विशेष पहल शुरू की गई है, जिसमें खासतौर पर इंडी पालतू जानवरों पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिन्हें अक्सर प्यार भरे घर मिलने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

पालिका के सीसी के बाद ही फ्लैट में मिलेगी रहने की अनुमति, कोर्ट ने दिया निर्देश

❑ **धोखाधड़ी रोकने पर निर्देश**

कोलकाता : राज्य रियल एस्टेट रेगुलेटरी ट्रिब्यूनल ने निर्माणाधीन परियोजनाओं की बिक्री के बाद खरीददारों को धोखा देने और धोखाधड़ी करने के अनगिनत आरोपों से निपटने के लिए नए आदेश जारी किए हैं। ट्रिब्यूनल ने प्रमोटर को फ्लैट खरीदार को कब्जा देने से पहले नगर पालिका से संपत्ति का पूर्णता प्रमाण पत्र या सीसी और फ्लैट का कब्जा प्रमाण पत्र प्राप्त करने का निर्देश दिया। इस निर्देश के साथ, न्यायाधीश रवींद्रनाथ सामंत, न्यायपालिका सदस्य गौरसुंदर बंद्योपाध्याय और प्रशासनिक सदस्य सुब्रत मुखोपाध्याय ट्रिब्यूनल ने कहा कि यदि प्रमोटर सीसी और कब्जा

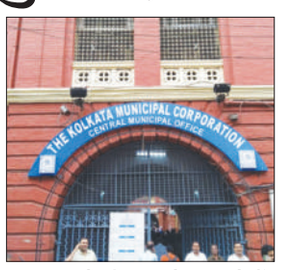

प्रमाण पत्र के लिए आवेदन करते हैं, तो उन्हें शीघ्र सभी पहलुओं पर गौर करना चाहिए और उन प्रमाणपत्रों को नगर पालिका को देना चाहिए। इस फैसले के साथ, ट्रिब्यूनल ने संबंधित प्रमोटरों को जल्द से जल्द राजपुर-सोनारपुर नगर पालिका से सीसी और कब्जा प्रमाणपत्र लेने और फिर उन्हें फ्लैट मालिकों को देने का निर्देश दिया। अन्यथा, याचिकाकर्ता सुदीप कुमार दे और उनकी बहन सुचिस्मिता दे को 2021 और 2022 में फ्लैट के लिए भुगतान किया गया पैसा 15 प्रतिशत ब्याज के साथ वापस करना होगा। प्रमोटर ने ट्रिब्यूनल के आदेश के मुताबिक दोनों भाइयों द्वारा दिए गए पैसे और अगले दो महीने का ब्याज पहले ही रजिस्ट्रार को जमा कर दिया है। नियमों के मुताबिक, अगर दो महीने के भीतर फैसले को हाई कोर्ट में चुनौती नहीं दी गई तो पैसा वादी के हाथ में रजिस्ट्रार को सौंप दिया जाएगा।कोलकाता नगर पालिका ने हाल ही में एक आदेश जारी कर फ्लैट सौंपने से पहले सीसी और कब्ज़ा प्रमाणपत्र प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया है। लेकिन यह कानून राज्य की किसी भी अन्य नगर पालिका में प्रभावी नहीं है लेकिन रियल एस्टेट रेगुलेटरी एक्ट 2016 और निगम-एक्ट के मुताबिक यह अनिवार्य है। प्रोफेसर सुदीप बाबू ने 2021 में नरेंद्रपुर के कुमदोखली इलाके में सदर्न स्काई नामक आवास में एक फ्लैट खरीदा। उन्होंने बाकी रकम भी चुका दी, क्योंकि फ्लैट तीन महीने के भीतर देना था। फ्लैट लेने के बाद वह रहने लायक नहीं है। उसी आवास में उनकी बहन सुचिस्मिता डे ने 54 लाख रुपए में पार्किंग स्पेस के साथ लगभग 1200 वर्ग फीट का एक फ्लैट बुक किया था। नवंबर 2022 तक उन्होंने करीब 31 लाख रुपए दे दिए।

प्राथमिक प्रश्न पत्र में सुप्रीम कोर्ट ने किया हस्तक्षेप से इनकार

एक कमेटी गठन करने का सुझाव

कोलकाता : सुप्रीम कोर्ट ने 2022 प्राथमिक गलत प्रश्न मामले में कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश में हस्तक्षेप नहीं किया। सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि हाई कोर्ट के आदेश के मुताबिक इस मुद्दे पर विचार करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया जाएगा। शुक्रवार को चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच में सुनवाई हुई। पीठ ने हाई कोर्ट के आदेश को बरकरार रखा। सवाल गलत होने का आरोप लगाते हुए कलकत्ता हाई कोर्ट में केस दायर किया गया। उस मामले में, अदालत ने त्रुटि के प्रश्न पर विचार करने के लिए एक विशेष समिति के गठन का आदेश दिया। बाद में, आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देते हुए एक मामला दायर किया गया। सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने आज सवाल उठाया कि अगर गलत सवालों के लिए बनी विशेष कमेटी में कलकत्ता यूनिवर्सिटी भी है तो इसमें दिक्कत क्या है? शीर्ष अदालत की उस टिप्पणी के बाद, वादियों ने मामला वापस लेने का फैसला किया। सुप्रीम कोर्ट ने तदनुसार मामले का निपटारा किया। 2017 और 2022 प्राइमरी में, नौकरी के इच्छुक उम्मीदवारों के एक वर्ग ने शिकायत की कि टेट के प्रश्न गलत थे। मुख्य वादियों के मुताबिक 2017 टेट में 23 प्रश्न गलत थे और 2022 टेट परीक्षा में 24 प्रश्न गलत थे। उस मामले में जस्टिस राजशेखर मंथा ने आदेश दिया कि विश्व भारती यूनिवर्सिटी पहले टीईटी के सवाल पर गौर करेगी। जादवपुर विश्वविद्यालय की विशेषज्ञ समिति अगले टीईटी प्रश्नों पर गौर करेगी। सिंगल बेंच का वह आदेश हाई कोर्ट की डिवीजन बेंच में ट्रांसफर कर दिया गया था। खंडपीठ ने कहा कि समिति कलकत्ता विश्वविद्यालय, जादवपुर विश्वविद्यालय और विश्व भारती विश्वविद्यालय से बनेगी। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट में मामला दायर किया गया।

करंट लगने से युवक की मौत, हुकिंग के कारण गई जाने

कोलकाता : चक्रवात दाना के प्रभाव में तूफान और बारिश से सड़क पर पानी जमा हो गया।उस रास्ते से घर जाते वक्त एक युवक की करंट लगने से मौत हो गई। हादसा भवानीपुर के जस्टिस द्वारकानाथ रोड पर हुआ। मृत युवक का नाम सौरभ गुप्ता (22) है। उसका घर बिहार में है। वह अपने पिता के साथ उस इलाके में रहता था। स्थानीय निवासियों का कहना है कि इलाके में सौरभ का एक छोटा सा भोजनालय है। शुक्रवार शाम करीब साढ़े चार बजे युवक जस्टिस द्वारकानाथ रोड से होकर लौट रहा था। स्थानीय निवासियों ने कहा कि सड़क के किनारे एक दीवार को छूने से उसे करंट लग गया। इसकी सूचना भबनीपुर थाने को दी गई । पुलिस पहुंची और युवक को शंभूनाथ पंडित अस्पताल ले गई । वहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

इससे पहले कोलकाता की सड़कों पर करंट लगने से कई लोगों की मौत के मामले में भी कोलकाता निगम पर आरोप लगे थे। लैंप पोस्ट के टूटे तार से करंट लगने से मौत के मामले सामने आए हैं। हालांकि, कोलकाता निगम के लाइटिंग विभाग के मेयर संदीप रंजन बख्शी ने दावा किया कि इस युवक की मौत में कोई लापरवाही नहीं हुई है। करंट लगने से युवक की मौत के मामले में बिजली विभाग के मेयर परिषद के सदस्य संदीप रंजन बख्शी ने कहा कि आंधी-पानी के कारण कल लाइटें बंद कर दी गई थीं। उस इलाके में पानी होने की वजह से लाइटें नहीं जलाई गईं।इसके अलावा उस घर के सामने कोई लैंपपोस्ट भी नहीं है। हादसे के बाद सीईएससी कर्मी दुर्घटनास्थल पर गए। उन्होंने देखा कि घर से लाइन खींचकर लाइट जलाई जा रही थी। नतीजा ये हुआ कि कोलकाता निगम के लैंप पोस्ट से ये हादसा नहीं हुआ।

बीएसएफ ने जहरीले सांप के काटने से घायल एक आदमी को नजदीकी अस्पताल पहुंचाकर उसकी कीमती जान बचाई

कोलकाता : दक्षिण बंगाल सीमान्त के अंतर्गत सीमा चौकी शिकारपुर, 86 वीं बटालियन में तैनात सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने सराहनीय सेवा कार्य करते हुए सीमावर्ती गांव शिकारपुर के स्थानीय निवासी श्री संत मंडल (45वर्ष) को घर में काम करने के दौरान किसी जहरीले सांप ने काटने पर समय पर महत्वपूर्ण चिकित्सा सहायता प्रदान करके उसकी कीमती जान बचाई । यह घटना 24 अक्टूबर को हुई जिसके बाद शिकारपुर गांव के निवासी श्री जयदेव महतो ने तत्काल मदद के लिए बीएसएफ से संपर्क किया।

सीमा चौकी शिकारपुर के कंपनी कमांडर ने तत्परता और करुणा के साथ प्रतिक्रिया करते हुए तुरंत एक प्रशिक्षित नर्सिंग सहायक को एम्बुलेंस के साथ आदमी के घर भेजा। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए, बीएसएफ टीम ने तेजी से कार्रवाई की और संत मंडल को जल्दी से नादिया के करीमपुर में सरकारी ग्रामीण अस्पताल ले जाया गया। पहुंचने पर, उसे आवश्यक चिकित्सा देखभाल मिली, और अब उसकी हालत स्थिर बताई जा रही है।

दक्षिण बंगाल सीमान्त के जनसंपर्क अधिकारी एन.के पांडे, डीआईजी ने कहा कि यह घटना न केवल सीमाओं की रक्षा करने बल्कि अपने जिम्मेदारी वाले क्षेत्र में निवासियों की मदद करने के लिए बीएसएफ की अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

बीरभूम में दिनदहाड़े युवक की गोली मार कर हत्या

❑ **चंद्रपुर व सेरेंडा के पास हाइवे के किनारे लहूलुहान शव पड़ा पाया गया**

बीरभूम : बंगाल के बीरभूम में दिनदहाड़े एक युवक सुजय मंडल (35) की गोली मार कर हत्या कर दी गई। स्थानीय लोगों से सूचना पाकर पुलिस वहां पहुंची और मौत की पुष्टि व पंचनामे के बाद शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के वास्ते सिउड़ी सदर अस्पताल भेज दिया।

मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस ने संदेह के आधार पर एक शख्स को पकड़ लिया है और उससे पूछताछ की गई है। सुबह चंद्रपुर व सेरेंडा के पास हाइवे के किनारे उक्त

युवक का लहूलुहान शव पड़ा पाया गया। पास ही कारतूस का खोल भी पड़ा था। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक आर्म्स एक्ट से जुड़े मामले में सुजय मंडल जेल में बंद था। हाल में वह जमानत पर जेल से रिहा हुआ था। मंडल के परिवार के मुताबिक गुरुवार रात सुजय को संदीप नामक युवक ने फोन कर कहा कि पुलिस ने उसकी कार रोक ली है। चूंकि पुलिस सुजय को जानती है, इसलिए उसे मदद के वास्ते संदीप ने बुलाया था। उसके बाद सुजय मंडल थाने पहुंच गया था। काम खत्म करने के बाद सुजय व संदीप मौसी के घर चले गए। वहां रात्रिभोज किया। उसके बाद देर रात करीब 12:30 बजे दोनों वहां से निकल गए। शुक्रवार सुबह इलाके के रहनेवाले अमित मंडल नामक युवक ने चंद्रपुर व सेरेंडा के पास सडक़ के किनारे सुजय मंडल को रक्तरंजित अवस्था में पड़ा देखा। फिर उसने थाने की पुलिस को सूचना दी। उसके बाद पुलिस वहां पहुंची और शव को बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए सिउड़ी सदर अस्पताल भेज दिया।

बंगाल के वंचित बच्चों के लिए आशीर्वाद आटा की पहल

कोलकाता, समाज्ञा : आईटीसी के आशीर्वाद आटा ने इस साल की दुर्गा पूजा के दौरान शुरू किए गए अपने खास कैंपेन 'दुर्गोतिनाशिनि शौंधने' का शानदार तरीके से समापन किया है। इस कैंपेन में माताओं की बेजोड़ क्षमता और अपने परिवार के पोषण प्रदान करने में उनकी खास भूमिका को सम्मानित किया गया। अपने इस बेहद खास कैंपेन के साथ, आशीर्वाद ने इस साल की दुर्गा पूजा के दौरान 1 लाख से अधिक माताओं को सशक्त बनाते हुए उनकी बेजोड़ क्षमता को दिशा देने का प्रयास किया। इस कैंपेन में, आशीर्वाद आटा ने स्थानीय एनजीओ शोइशोब के साथ साझेदारी की। यह एनजीओ वंचित बच्चों के लिए काम करता है। चक्की-रोटेशन एक्टिविटी में माताओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। भागीदारी की प्रत्येक कड़ी में वंचित बच्चों को पौष्टिक भोजन प्रदान करने का लक्ष्य तय किया गया। इसके लिए शोइशोब को 1 लाख से अधिक रोटियों के बराबर आटा दान में दिया गया।

दपूरे की क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीसरी बैठक

कोलकाता : दक्षिण पूर्व रेलवे की क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2024 की तीसरी बैठक दक्षिण पूर्व रेलवे की महाप्रबंधक अनिल कुमार मिश्रा अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में दक्षिण पूर्व रेलवे के सभी प्रधान विभागाध्यक्ष उपस्थित थे। इसके अलावा, मंडलों के अपर मंडल रेल प्रबंधक तथा खड़गपुर कारखाना के उप मुख्य राजभाषा अधिकारी भी वर्चुअल माध्यम से उपस्थित हुए।

इस बैठक में दक्षिण पूर्व रेलवे पर हो रहे राजभाषा कार्यों की समीक्षा की गई। महाप्रबंधक महोदय ने राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए, जिसपर अमल किया जाएगा।

क्षेत्रीय हिंदी निबंध, टिप्पण एवं वाक् प्रारूपण प्रतियोगिता में सफल 18 प्रतिभागियों को महाप्रबंधक द्वारा पुरस्कृत किया गया।

मुख्यालय और मंडलों में हिंदी के कार्यशाला एवं हिंदी टिप्पण प्रारूप लेखन एवं वाक प्रतियोगिता आयोजित करने के लिए महाप्रबंधक महोदय ने सराहना की। उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने का भी निर्देश दिया। हिंदी भाषा प्रशिक्षण के लिए शेष कर्मचारियों को मार्च, 2025 तक प्रकशित किया जाए। ई-ऑफिस में हिंदी में छोटी-छोटी टिप्पणी देने का भी निर्देश दिया, जिससे राजभाषा का प्रचार-प्रसार हो । उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया की अपने अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारिओं को अधिक से अधिक राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें। बैठक में महाप्रबंधक महोदय द्वारा राजभाषा विभाग की बीएनआर हिंदी ई-पत्रिका के (अंक-8) का विमोचन किया गया।

बैठक में रांची मंडल रेल सुरक्षा बल के सुरक्षा आयुक्त पवन कुमार द्वारा रांची विषय पर एक पावर पॉइंट की प्रस्तुति दी गई।

बैठक का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन उप महाप्रबंधक (राजभाषा) पी. सी. डांग, ने किया।

कहलगांव और शिवनारायणपुर स्टेशनों के उन्नयन पर प्रकाश डालते हुए मीडिया टूर का आयोजन

कोलकाता, समाज्ञा : पूर्व रेलवे के मालदह डिवीजन ने शुक्रवार को एक मीडिया टूर का आयोजन किया। जिसमें अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत कहलगांव और शिवनारायणपुर रेलवे स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं के चल रहे आधुनिकीकरण की जानकारी दी गई। कहलगांव रेलवे स्टेशन पर मीडिया दौरे के दौरान साहिबगंज के सहायक अभियंता ने कहलगांव और शिवनारायणपुर दोनों स्टेशनों के आधुनिकीकरण प्रयासों पर विस्तृत जानकारी दी। प्रस्तुतिकरण में यात्री-अनुकूल संवर्द्धन पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूर्ण और चालू परियोजनाओं की उपलब्धियों को शामिल किया गया। मीडिया प्रतिनिधियों ने कहलगांव रेलवे स्टेशन का दौरा किया, जहां उन्नयन कार्य के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित किया गया।

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत कहलगांव रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास स्टेशन को आधुनिक और उपयोगकर्ता के अनुकूल सुविधा में बदलने के लिए डिजाइन किया गया है। उन्नयन के चरण 1 के लिए कुल स्वीकृत लागत लगभग 21.48 करोड़ रुपये है। इसमें सिविल, इलेक्ट्रिकल, एसएंडटी (सिग्नलिंग और दूरसंचार) कार्य, साइनेज, लिफ्ट और 12-मीटर एफओबी/रूफ प्लाजा का निर्माण शामिल है। यह परियोजना वर्तमान में भौतिक रूप से 65% और वित्तीय रूप से 60% पूर्ण है। चरण 1 को दिसंबर 2024 तक पूरा करने का लक्ष्य है। चरण 2 में आगे के विकास कार्य पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

मीडिया दौरे के दौरान एईएन/साहिबगंज द्वारा शिवनारायणपुर रेलवे स्टेशन के संबंध में इसी तरह की जानकारी दी गई। शिवनारायणपुर में चरण 1 के लिए कुल स्वीकृत लागत लगभग 17.94 करोड़ रुपये है। इस चरण में अग्रभाग, सर्कुलेटिंग एरिया, वेटिंग हॉल, लाउंज और दिव्यांग यात्रियों के लिए पहुंच सुविधाओं का विकास शामिल है। यह परियोजना अपने आंतरिक डिजाइन के लिए स्थानीय कला से प्रेरणा लेती है। वर्तमान भौतिक प्रगति लगभग 90% है, वित्तीय प्रगति 75% है, और चरण 1 का पूरा होने का लक्ष्य नवंबर 2024 है। चरण 2 में वाणिज्यिक विकास, दूसरी प्रविष्टि, परिसंचारी क्षेत्र में सुधार, एक सीवेज उपचार संयंत्र (एसटीपी), और वर्षा जल संचयन (आरडब्ल्यूएच) शामिल होंगे।

बंधन बैंक का कुल कारोबार में 24% बढ़ोतरी

❑ **पहुंचा 2.73 लाख करोड़ पर**

कोलकाता : बंधन बैंक के कारोबार में 24 फ़ीसदी इज़ाफ़ा दर्ज किया गया है। बंधन बैंक ने वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही के लिए अपने वित्तीय नतीजों की घोषणा की। बैंक का कुल कारोबार 24% बढ़कर 2.73 लाख करोड़ रुपए पर पहुंच गया। कुल जमा में खुदरा हिस्सेदारी अब लगभग 68% है। पिछली तिमाही में देखी गई उत्साहजनक वृद्धि वितरण, व्यावसायिक दक्षता और अनुकूल परिचालन वातावरण में इसके विस्तार से प्रेरित है।

बैंक अब भारत में 6,300 बैंकिंग आउटलेट्स के माध्यम से 3.5 करोड़ से अधिक ग्राहकों को सेवा प्रदान करता है। बंधन बैंक में कार्यरत कर्मचारियों की कुल संख्या अब लगभग 80,000 है।

वित्त वर्ष 25 की दूसरी तिमाही के दौरान बैंक की जमाराशि में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 27% की वृद्धि हुई। कुल जमाराशि अब 1.43 लाख करोड़ रुपए हो गई है, जबकि कुल अग्रिम राशि 1.31 लाख करोड़ रुपए है। चालू खाता और बचत खाता (सीएएसए) अनुपात कुल जमाराशि का 33.2% है। बैंक की स्थिरता का सूचक पूंजी पर्याप्तता अनुपात (सीएआर) 15.6% है, जो विनियामक आवश्यकता से अधिक है।

बैंक के प्रदर्शन पर बोलते हुए एमडी और सीईओ (अंतरिम) रतन कुमार केश ने कहा कि दूसरी तिमाही में बंधन बैंक का मजबूत प्रदर्शन प्रभावी जोखिम प्रबंधन और अनुपालन पर हमारे फोकस के साथ गुणवत्ता वृद्धि में गति को दर्शाता है। हमारी सफलता हमारे ग्राहकों के विश्वास और हमारे कर्मचारियों के समर्पण पर आधारित है।

पूर्व रेलवे ने रेल चौपाल और वृक्षारोपण अभियान से लोगों को किया जागरूक

कोलकाता, समाज्ञा : पूर्व रेलवे विशेष अभियान 4.0 के हिस्से के रूप में 'एक पेड़ मां के नाम' पहल के तहत सक्रिय रूप से वृक्षारोपण अभियान आयोजित कर रहा है। शुक्रवार को वर्दवान, हुगली और बंडेल सहित प्रमुख क्षेत्रों में पौधे लगाए गए, जिसमें हरित स्थान बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसके साथ ही, कोलकाता स्टेशन, बंडेल स्टेशन, वर्दवान लोको कॉलोनी, बामनगाची रेलवे कॉलोनी सहित अन्य

स्थानों पर रेल चौपाल कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस कार्यक्रम के माध्यम से रेलवे अधिकारियों और कर्मचारियों ने यात्रियों और कॉलोनियों के निवासियों से बातचीत की। इन अभियानों में स्वच्छता के महत्व को सुदृढ़ करने, यात्रियों, निवासियों और कर्मचारियों को स्वच्छ रेलवे परिसर में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके साथ ही, लोगों को जागरूक करने के लिए कई गतिविधियां भी आयोजित की। इसके अतिरिक्त, पूर्व रेलवे के अधिकार क्षेत्र में आसनसोल, दुर्गापुर, देवघर, मालदह टाउन, बांका सहित विभिन्न स्टेशनों पर गहन सफाई और गतिविधियां की गईं।

दिवाली और छठ के अवसर पर उन्नत यात्री सेवाओं और सुरक्षा उपायों के साथ विशेष ट्रेनें

कोलकाता, समाज्ञा : रेलवे द्वारा अपने यात्रियों के लिए दिवाली और छठ के त्योहारी सीजन के दौरान 30 अक्टूबर से 6 नवंबर तक विशेष ट्रेनें चलायी जाएंगी। मजबूत योजना और समन्वय सुनिश्चित करने के लिए 23 अक्टूबर को संचालन और व्यवसाय विकास (एमओबीडी) के सदस्य की अध्यक्षता में एक वीडियो कॉन्फ्रेंस (वीसी) आयोजित की गई। इस बैठक में त्यौहारी भीड़ के दौरान यात्री सुविधा, सुरक्षा और समयबद्धता के लिए मुख्य उपायों पर चर्चा की गई। इन विशेष ट्रेनों की संचालन, वाणिज्यिक, यांत्रिक और आरपीएफ विभागों के अधिकारियों और पर्यवेक्षकों को परिचालन की निगरानी और प्रबंधन के लिए चरम दिनों के दौरान स्टेशनों और नियंत्रण कक्षों पर तैनात किया जाएगा। रेल

मदद और अन्य प्लेटफार्मों पर दर्ज शिकायतों की बारीकी से निगरानी की जाएगी। पानी देने, चार्जिंग, प्री-कूलिंग और अन्य रखरखाव से संबंधित मुद्दों को संबोधित करने को प्राथमिकता दी जाएगी। टीओडी स्पेशल ट्रेनों की समयबद्धता पर कड़ी निगरानी रखी जाएगी।

यात्री ट्रेनों की सुचारू आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए मालगाड़ियों को विनियमित किया जा सकता है। सभी स्टेशनों पर सार्वजनिक संबोधन (पीए) प्रणाली के माध्यम से उचित घोषणाएं सुनिश्चित की जाएंगी। यात्रियों की मांग को पूरा करने के लिए व्यवहार्यता के अनुसार अतिरिक्त कोच जोड़े जाएंगे। सभी स्टेशनों पर अनारक्षित टिकट प्रणाली (यूटीएस), यात्री आरक्षण प्रणाली (पीआरएस), स्वचालित टिकट वेंडिंग मशीन (एटीवीएम), और मोबाइल अनारक्षित टिकटिंग प्रणाली (एमयूटीएस) का सुचारू संचालन सुनिश्चित किया जाएगा। इसके अलावा, सीसीटीवी से निगरानी, प्रमुख स्टेशनों पर प्रवेश और निकास द्वारों पर कर्मचारियों की व्यवस्था, प्रमुख स्टेशनों पर पर्याप्त खानपान सेवाएं उपलब्ध रहेंगी, वृद्ध और दिव्यांग यात्रियों के लिए पर्याप्त संख्या में व्हीलचेयर उपलब्ध रहेंगी, आदि जैसे सभी तरह की जरूरी व्यवस्था की गई है।

मुख्यमंत्री ने काली पूजा, जगद्धात्री पूजा में पुलिस को सतर्क रहने को कहा

संवेदनशील इलाकों में कड़ी निगरानी रखनी होगी : मुख्यमंत्री ममता

❑ छठ पूजा में अतिरिक्त सावधानी बरतने का दिया निर्देश

कोलकाता : मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को छठ पूजा में अतिरिक्त सावधानी बरतने का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि बैरकपुर, हावड़ा, हुगली, चंदननगर में कई घाट हैं। बहुत से लोग कोलकाता के घाटों पर भी जाते हैं। इसलिए हर घाट की सफाई करनी होगी। इस बात का ध्यान रखना होगा कि घाट की सीढ़ियां

फिसलन वाली न हों। घाट के पास बैरिकेडिंग हो। पुलिस को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सभी एक साथ न उतरें। घाटों पर अच्छी रोशनी होनी चाहिए। इसके अलावा मुख्यमंत्री ने वीआइपी लोगों की आवाजाही को नियंत्रित करने का भी आदेश दिया है ताकि घाट के पास भीड़भाड़ वाले समय में कोई परेशानी न हो।

चक्रवात दाना के प्रभाव को लेकर मुख्यमंत्री ने आज राज्य की समग्र स्थिति की समीक्षा करने के लिए राज्य सचिवालय नबान्न में जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ एक वर्चुअल बैठक की। मुख्यमंत्री ने कहा कि काली पूजा, जगद्धात्री पूजा में कहीं भी कोई अप्रिय घटना न घटे, पुलिस को इस पर नजर रखनी होगी। क्योंकि शरारती तत्व मौके का फायदा उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। सीमा से भी शरारती लोग प्रवेश कर सकते हैं। पुलिस को सतर्कता बढ़ानी होगी। राज्य के संवेदनशील इलाकों में कड़ी निगरानी रखनी होगी।

❑ ड्रोन से जंगली जानवरों की गतिविधियों पर नजर रखने के दिए आदेश

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बंगाल के घने जंगलों में जानवरों की आवाजाही पर नजर रखने का आदेश दिया है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जिले में एक-एक ड्रोन रखें। उन्होंने इस क्षेत्र में राज्य सरकार द्वारा धन आवंटन की भी जानकारी दी। इसके अलावा मुख्यमंत्री ने कर्मश्री योजना के तहत जंगल के पास के स्थानीय निवासियों की निगरानी का उपयोग करने का सुझाव दिया।

सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करने वालों की खैर नहीं

❑ मुख्यमंत्री ने मुख्य सचिव को कड़े कदम उठाने के दिए निर्देश

❑ कैबिनेट की बैठक में विभिन्न विभागों में नए पदों पर नियुक्ति की मंजूरी

कोलकाता : सरकारी जमीन पर कब्जे को लेकर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी नाराज हैं। उन्होंने कहा है कि सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने गुरुवार को कैबिनेट की बैठक में इस संबंध में मुख्य सचिव को कड़े कदम उठाने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा कैबिनेट बैठक में राज्य सरकार के विभिन्न विभागों में कई नए पदों पर नियुक्ति की भी मंजूरी दी गई है।

राज्य सचिवालय नबान्न सूत्रों के मुताबिक कैबिनेट की बैठक में ममता ने सरकारी जमीन हड़पने को लेकर अपनी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने साफ किया कि बहुत कुछ सहा गया है। अब अवैध कब्जा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जिन्होंने किसी भी समय सरकारी जमीन का अतिक्रमण किया है और वहां घर या कुछ और बनाया है। उन्होंने मुख्य सचिव को उन लोगों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

इससे पहले मुख्यमंत्री ने जमीन हड़पने को लेकर नाराजगी जताई थी। उन्होंने कई प्रशासनिक बैठकों में पुलिस और नौकरशाहों को फटकार भी लगाई थी। उसके बाद राज्य पुलिस द्वारा अतिक्रमित भूमि को पुन: प्राप्त करने की योजना बनाई गई। लेकिन इस काम में कोई विशेष सफलता नहीं मिली। इसलिए इस बार मुख्यमंत्री ने सख्त रवैया अपनाया है।

❑ गृह विभाग में 57 व स्वास्थ्य विभाग में 18 पदों को मंजूरी

सूत्रों के मुताबिक कैबिनेट की बैठक में कई अहम फैसले लिए गए, जिनमें कई नए पदों को मंजूरी भी शामिल है। गृह विभाग में 57, स्वास्थ्य विभाग में 18 और जल संसाधन विभाग में सात पदों को मंजूरी दी गई है। यह भी तय हुआ है कि कार्मिक, पर्यावरण और वित्त विभाग में नई नियुक्तियां की जाएंगी। इसके अलावा कैबिनेट ने राज्य सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक से 1500 करोड़ रुपये उधार लेने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दे दी है। बैठक में दुर्गापुर प्रोजेक्ट्स लिमिटेड के तहत 660 मेगावाट के सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट के निर्माण की भी अनुमति दी गई है। कैबिनेट ने न्यू टाउन में वाणिज्यिक हब बनाने के लिए और जमीन देने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड ने अपने वित्तीय प्रदर्शन की घोषणा की

कोलकाता, समाज्ञा : उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड ने 30 सितंबर, 2024 को समाप्त तिमाही के लिए अपने वित्तीय प्रदर्शन की घोषणा की है। सकल ऋण पुस्तिका 14% (साल-दर-साल) 1% (तिमाही-दर-तिमाही) बढ़कर 30,344 करोड़ हो गई। जून 2024 के 31.3% की तुलना में सितंबर 2024 तक 34.9% पर सुरक्षित बही। वित्तीय वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही, में संवितरण 6% (साल-दर-साल) कम और 2% (तिमाही-दर-तिमाही) ऊपर 5,376 करोड़ रहा। सितंबर 2024 में संग्रह दक्षता 97% रही, एनडीए संग्रह लगातार 99% रहा। सितंबर 2024 तक जोखिम पर पोर्टफोलियो 5.1% रहा, सितंबर 2024 तक जीएनपीए 2.5% रहा, जबकि जून 2024 तक 2.3% रहा, एनएनपीए सितंबर 2024 तक 0.6% बनाम जून 2024 तक 0.4%। वित्तीय वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही राइट-ऑफ 140 करोड़, सितंबर 2024 तक प्रावधान कवरेज अनुपात 78% है। इसी तरह, लचीले बिजनेस मॉडल और जमीनी हालात की अच्छी जानकारी ने हमेशा ऐसे मुद्दों की पहचान करने और आत्मविश्वास के साथ उनका प्रबंधन करने के लिए बेहतर तैयार रखा है।

बादाम की ताकत से सेहतमंद तरीके से मनाएं दिवाली

कोलकाता, समाज्ञा : दिवाली एक ऐसा खूबसूरत त्योहार है, जिसमें लोग रोशनी और खुशियों के साथ मिलकर जश्न मनाते हैं। दिवाली के दौरान भी आप सेहत से समझौता किए बिना त्योहार का आनंद उठा सकते हैं। बादाम एक ऐसा बेहतरीन विकल्प है, जिसे आप अपने खाने में शामिल कर सकते हैं। बादाम में प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और हेल्दी फैट्स होते हैं, जो आपकी सेहत को बनाए रखते हैं। यह वजन और ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में मददगार होता है। जोश और उत्साह को बनाए रखने के साथ-साथ यह लंबे समय तक भूख को नियंत्रित करने में फायदेमंद रहता है। मैक्स हेल्थकेयर, नई दिल्ली में डायटेटिक्स की रीजनल हेड ऋतिका समद्दर का कहना है कि त्योहारों के पकवानों का आनंद लेने के लिए आप बादाम जैसे विकल्प चुन सकते हैं। बादाम न केवल पोषण बढ़ाते हैं, बल्कि स्वाद भी लाजवाब बनाते हैं। इनमें प्रोटीन, विटामिन ई, मैग्नीशियम और फॉस्फोरस जैसे कई जरूरी पोषक तत्व होते हैं।

ग्रेट इंडियन फेस्टिवल में इस बार अमेजन पे के साथ कीजिए जोरदार बचत

कोलकाता, समाज्ञा : त्योहारी सीजन इस समय अपने पूरे शबाब पर है। चाहे दोस्तों या परिवार के लोगों को उपहार देना हो, यात्रा के लिए टिकट बुक करनी हो या फिर त्योहारों के लिए जरूरी सामान की खरीदारी करनी हो, हममें से कई लोग दिवाली से ठीक पहले ये सभी खरीदारी जल्द से जल्द पूरी करना चाहते हैं। अच्छी बात यह है कि, अमेजन पे इन आखिरी समय में किए जाने वाले ट्रांजेक्शन को बेहद सहज, किफायती और अत्यधिक फायदेमंद बनाने के लिए आपके साथ है। चाहे आप कहीं घूमने फिरने की योजना बना रहे हों, धनतेरस के लिए डिजिटल सोना खरीदना चाह रहे हों या अपने प्रियजनों को पैसे भेजना चाह रहे हों, अमेजन पे विभिन्न कैटेगरी में कैशबैक, डिस्काउंट और बंपर रिवॉर्ड प्रदान करता है।

जूनियर डाक्टरों ने मुख्य सचिव को किया ईमेल, विभिन्न मांगों को जल्द पूरा करने का अनुरोध

कोलकाता : वेस्ट बंगाल जूनियर डाक्टर्स फ्रंट ने अपनी मांगों को लेकर बंगाल के मुख्य सचिव मनोज पंत को फिर ईमेल किया है। इस बार उन्होंने छह मांगें रखी हैं, जिनमें मेडिकल कालेजों में व्याप्त विभिन्न समस्याओं का द्रुत समाधान, मेडिकल कालेजों के लिए गठित राज्य स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक का आयोजन, सेंट्रल रेफरल सिस्टम को सर्वत्र लागू करना, इत्यादि शामिल हैं। ईमेल गुरुवार रात को किया गया है। राज्य सचिव की ओर से इसपर अब तक कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की गई है। जूनियर डाक्टरों ने राज्य के सरकारी अस्पतालों में बेड की उपलब्धता की केंद्रीय स्तर पर निगरानी की प्रक्रिया को इसी महीने से क्रियान्वित करने का अनुरोध किया है। उनका मानना है कि ऐसा नहीं होने पर सेंट्रल रेफरल सिस्टम को प्रभावी तरीके से लागू नहीं किया जा सकेगा। जूनियर डाक्टरों का यह भी कहना है कि स्वास्थ्य क्षेत्र के कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए केवल कुछ कमेटियों का गठन करना काफी नहीं है, वे कितनी सक्रिय हैं, यह देखना भी सरकार का दायित्व है। मालूम हो कि गत सोमवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के साथ राज्य सचिवालय नवान्न में बैठक करने के बाद जूनियर डाक्टरों ने 17 दिनों से जारी अपना आमरण अनशन खत्म किया था। बैठक में मुख्यमंत्री ने उनकी अधिकांश मांगों को मानते हुए उन्हें जल्द पूरा करने का भरोसा दिया था। जूनियर डाक्टरों ने उक्त बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुसार मुख्य सचिव से उनकी मांगों को जल्द पूरा करने का अनुरोध किया है।

तिलोतमा के लिए आयोजित सम्मेलन को नहीं मिली अनुमति

तिलोत्तमा के कॉलेज ने किया मना

कोलकाता : तिलोत्तमा के लिए न्याय की मांग को लेकर तिलोत्तमा के ही कॉलेज को जन सम्मेलन की मंजूरी नहीं मिली। कल्याणी मेडिकल कॉलेज में मंजूरी कन्वेंशन को मना कर दिया गया।

बताया जा रहा है कि 'दाना' का कारण बताकर मंजूरी रद्द कर दी गई है। शनिवार दोपहर कल्याणी मेडिकल में सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस बीच इसने चक्रवात कमजोर होकर बेहद गहरे दबाव का क्षेत्र बन गया है। लेकिन, चक्रवात का ख़तरा टल जाने के बाद भी मंजूरी क्यों रद्द की जाए? सवाल उठता है। वरिष्ठ डॉक्टर सवाल

उठाएं। पता चला है कि तिलोत्तमा के मुकदमे की मांग पर सम्मेलन शनिवार दोपहर किसी वैकल्पिक स्थल पर आयोजित किया जा सकता है। संयोग से, तिलोत्तमा कल्याणी मेडिकल कॉलेज की छात्रा है। वरिष्ठ डॉक्टरों का कहना है कि कॉलेज को मंजूरी नहीं मिलना दुर्भाग्यपूर्ण है। इस संदर्भ में डॉक्टर नेता अर्जुन दासगुप्ता का कहना है कि कल्याणी में जूनियर डॉक्टरों और वरिष्ठ डॉक्टरों का सम्मेलन है।यह सम्मेलन एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दे को ध्यान में रखकर आयोजित किया गया है। लेकिन कुछ अजीब कारण से कॉलेज अधिकारियों ने उन्हें अंतिम समय में हॉल का उपयोग करने की अनुमति नहीं दी। इस बीच हमें कल्याणी मेडिकल को नहीं बल्कि तिलोत्तमा के अपने कॉलेज को नहीं भूलना चाहिए। दाना इजाजत न देने की बात कर रहा है।लेकिन दाना दूसरे रास्ते पर चला गया है। अब समझ नहीं आ रहा कि समस्या क्या है।

राज्य के प्रधान सचिव ने तूफान से संभावित क्षति का जायजा लिया

हुगली : हुगली जिला प्रशासन के साथ कृषि विभाग के प्रधान सचिव ओंकार सिंह मीणा ने चक्रवाती तूफान 'दाना ' से संभावित नुकसान की समीक्षा के लिए हुगली जिले का दौरा किया। इस दौरान जिलाधिकारी मुक्ता आर्य, एडीएम तरूण भट्टाचार्य और अनुज प्रताप सिंह, चंदननगर के एसडीओ विष्णु दास व अन्य उच्च पदस्य अधिकारी भी उनके साथ मौजूद रहे। मीणा ने हरिपाल ब्लॉक के तहत पड़ने वाले मालिया गांव का दौरा किया। किसानों और स्थानीय निवासियों से मुलाकात की। किसानों को कृषि और फसल बीमा का लाभ मिल रहा है या नहीं, इसे लेकर भी जानकारी ली। मीणा ने किसानों में बीमा का रकम जानने के लिए उन्होंने पश्चिम बंगाल राज्य कृषि विपणन बोर्ड का 9830383383 नंबर भी उपलब्ध कराया। इसके बाद, उन्होंने कनकपुर रिलीफ सेंटर का भी औचक दौरा किया। किसानों को धान की खेती में आंशिक नुकसान हुआ है या नहीं इस विषय में उन्होंने बातचीत की।

भारतीय नौसेना के बेड़े में शामिल हुआ एक और स्वदेशी एंटी-सबमरीन पोत

❑ गार्डनरीच शिपबिल्डर्स ने इस स्वदेशी पोत का किया है निर्माण

कोलकाता : भारतीय नौसेना के बेड़े में शुक्रवार को एक और स्वदेशी एंटी-सबमरीन युद्धपोत 'आइएनएस अभयळ शामिल हो गया है। गार्डनरीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (जीआरएसई) लिमिटेड, कोलकाता ने इसका निर्माण किया है। नेवी वेलफेयर एंड वेलनेस एसोसिएशन (पूर्वी क्षेत्र) की अध्यक्ष संध्या पेंढारकर ने शुक्रवार को इसे लांच किया। इस अवसर पर वाइस एडमिरल राजेश पेंढारकर, फ्लैग आफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, पूर्वी नौसेना कमान मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। मालूम हो कि जीआरएसई नौसेना के लिए ऐसे आठ युद्धपोत का निर्माण कर रहा है। इस श्रेणी का यह सातवां पोत है। यह एंटी-सबमरीन युद्धपोत महज

2.7 मीटर गहरे पानी में संचालन करने में सक्षम है और तटीय क्षेत्रों के नजदीक काम कर सकता है। यह कम तीव्रता वाले समुद्री आपरेशंस और माइन बिछाने के कार्य में भी सक्षम है। 77.6 मीटर लंबा और 10.5 मीटर चौड़ा यह शक्तिशाली युद्धपोत तटीय जल के साथ-साथ विभिन्न सतहों और उप-सतह की पूर्ण निगरानी में सक्षम है और विमानों के साथ समन्वित एंटी-सबमरीन अभियानों में भाग ले सकता है। इसकी अधिकतम गति सीमा 25 नाट्स है। अत्याधुनिक उपकरणों व तकनीकों से लैस इस पोत में हल्के टारपिडो, एएसडब्ल्यू राकेट और माइंस शामिल हैं। यह 30 मिमी क्लोज-इन वेपन्स सिस्टम और 12.7 मिमी स्थिर रिमोट-कंट्रोल गन से भी लैस है।

कालीघाट स्काईवॉक पर लगी अनिश्चितता

❑ हॉकरों की समस्या ने डाला बाधा

कोलकाता : कालीघाट स्काईवॉक के उद्घाटन में फिर अनिश्चितता मंडरा रही है। कोलकाता नगर निगम सूत्रों के मुताबिक स्काईवॉक का काम लगभग पूरा हो चुका है लेकिन अधिकारियों ने अभी उद्घाटन की तारीख तय नहीं की है। प्रारंभ में यह निर्णय लिया गया कि स्काईवॉक को काली पूजा से पहले 28 अक्टूबर को खोला जाएगा। नगर निगम की ओर से भी तैयारियां की गईं। लेकिन उद्घाटन फिलहाल अनिश्चित है क्योंकि स्काईवॉक पर काम अभी भी लंबित है और हॉकरों के पुनर्वास पर नई जटिलताएं पैदा हो गई हैं।

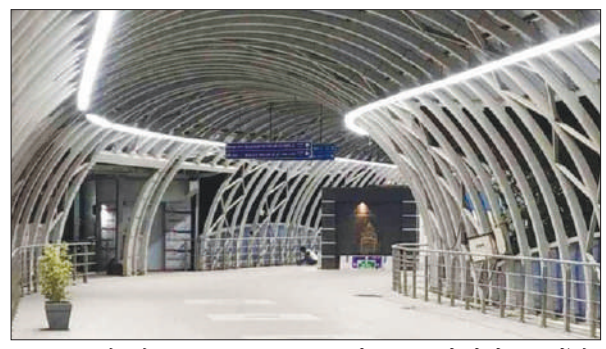

स्काईवॉक का निर्माण कितना आगे बढ़ा है, यह जानने के लिए मेयर फिरहाद हकीम ने कुछ दिन पहले दौरा किया था। वहां जाकर उन्हें पता चला कि अभी भी कुछ

काम बाकी है और जब पहली बार स्काईवॉक की योजना बनाई गई थी, तो यह निर्णय लिया गया था कि काली मंदिर रोड के फुटपाथों पर बैठने वाले सभी हॉकरों को स्काईवॉक पर स्थानांतरित कर दिया जाएगा। ऐसा ही एक डिजाइन भी बनाया गया था लेकिन मेयर उस फैसले से दूर हो गए हैं। सिविल इंजीनियरों का एक वर्ग हॉकरों को स्काईवॉक पर छोड़ने के पक्ष में है, क्योंकि उन्हें डर है कि इससे आगंतुकों के लिए यातायात समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। हालांकि हॉकरों संगठन इस फैसले पर अड़े हुए हैं। उनका दावा है कि स्काईवॉक चालू होने के बाद कोई भी काली मंदिर रोड से यात्रा नहीं करेगा। हॉकरों को पहले जैसे ग्राहक नहीं मिलेंगे। काली मंदिर रोड पर धरना देने वालों में से कई लोग सत्ताधारी दल के समर्थक हैं। सत्ताधारी दल के स्थानीय नेताओं द्वारा हॉकरों के पक्ष में खड़े होने से मेयर अनिर्णय की स्थिति से जूझ रहे हैं। उन्हें डर है कि अगर इस समस्या का समाधान किए बिना स्काईवॉक खोला गया तो फेरीवालों को विरोध का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए, शहर के अधिकारी स्काईवॉक के उद्घाटन में जल्दबाजी करने से अनिच्छुक हैं।

नगर निगम के एक शीर्ष अधिकारी ने बताया कि मेयर ने सूचित किया है कि जब तक काम पूरी तरह से पूरा नहीं हो जाता, तब तक वह स्काईवॉक खोलने के पक्ष में नहीं हैं। हॉकरों को कहां पुनर्वासित किया जाएगा इस पर भी उच्च स्तर पर चर्चा हो रही है। मामला सुलझने के बाद ही स्काईवॉक का उद्घाटन किया जाएगा।

धनतेरस के अवसर पर ग्राहकों के लिए बेहतरीन ऑफर के साथ पेश किए गए विशेष कलेक्शन

कोलकाता, समाज्ञा

दिवाली का त्योहार सामने है। दिवाली से पहले धनतेरस के मौके पर ग्राहक सोना, चांदी या कीमती धातु खरीदना शुभ मानते है। धनतेरस के मौके पर ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए ज्वेलर्स द्वारा विभिन्न ऑफर पेश किया जाता है। इस अवसर पर सभी ज्वेलर्स ग्राहकों के लिए लुभावने ऑफर पेश करते हैं। इस त्योहार के महत्व को समझते हुए और ग्राहकों को भी ध्यान में रखते हुए गहनों पर भारी छूट प्रदान की जाती है।

धनतेरस के मौके पर महानगर के शीर्ष ज्वैलर्स द्वारा ग्राहकों के लिए पेश किए गए विशेष ऑफर

❑ महावीर डांवर ज्वैलर्स

महावीर डांवर ज्वैलर्स ने इस धनतेरस पर एक्सक्लूसिव नया कलेक्शन पेश किया है। इसमें विशेष रूप से डायमंड, जड़ाऊ, एंटीक गोल्ड और एंटीक डायमंड में खास कलेक्शन पेश किया गया है। ग्राहकों को 70% तक मेकिंग चार्जेस में छूट दी गई है। इस बार एक लकी ड्रॉ भी निकाला जाएगा। महावीर डांवर ज्वैलर्स पुराने गोल्ड पर 100% वैल्यू दे रहा है। इसके साथ ही, 1.25 लाख रुपये की खरीदी करने पर ग्राहकों को एक चांद का सिक्का मिलेगा। यह ऑफर शुरू हो चुका है और 30 अक्टूबर तक चलेगा।

❑ सांवनसुखा ज्वैलर्स

सांवनसुखा ज्वैलर्स ने धनतेरस कलेक्शन लॉन्च किया है। इस कलेक्शन को विशेष रूप से डिजाइन किया गया। हर ज्वैलरी पर कोलकाता की कारीगरी देखने को मिलेगी। विशेष रूप से जड़ाऊ कलेक्शन में बीकानेर और

कोलकाता का सम्मिलन देखने को मिलेगा। जड़ाऊ, येलो गोल्ड, एंटीक ज्वैलरी, डायमंड ज्वैलरी में बेहतरीन कलेक्शन पेश किए गए हैं। यह कलेक्शन लिमिटिड एडिशन है। धनतेरसके मौके पर चल रहे विशेष ऑफर में ग्राहक सबसे कम गोल्ड रेट और कम मेकिंग चार्ज पर ज्वैलरी खरीद सकते हैं। यह ऑफर 18 अक्टूबर से शुरू हो चुका है जो, 31 अक्टूबर तक चलेगा।

❑ इंडियन जैम एंड ज्वैलरी क्रिएशन

इंडियन जैम एंड ज्वैलरी क्रिएशन ने इस बार ग्राहकों के लिए विशेष रूप से गोल्ड और डायमंड पर कलेक्शन पेश किया है। डायरेक्टर प्रयास दुग्गड़ ने बताया कि इस बार, प्लेटिनम में क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी के साथ खास माही कलेक्शन पेश किया है। जिसमें पुरुषों के लिए विशेष कलेक्शन पेश किया गया है। इसके अलावा, गहनों के मेकिंग चार्ज में 30% ऑफ और डायमंड ज्वैलरी की मेकिंग चार्ज पर 10% ऑफ है। अन्य एक नए ऑफर में ग्राहक अपने पुराने हीरे और रत्नों की ज्वैलरी के बदले नए ज्वैलरी ले सकते हैं। यह ऑफर शुरू हो चुका है। जो 31 अक्टूबर तक चलेगा।

❑ आर.आर अग्रवाल ज्वेलर्स

धनतेरस और दीपावली पर ज्वेलरी खरीदने की परंपरा को देखते हुए आर आर अग्रवाल ज्वेलर्स सभी ज्वेलरी पर मेकिंग चार्ज में जबरदस्त डिस्काउंट एवं हर खरीददारी पर अट्रैक्टिव गिफ्ट जैसे यूरोप टूर एलइडी टीवी और आईफोन भी रखा है। आगे आने वाले दिनों में शादी विवाह के सीजन को देखते हुए वेडिंग कलेक्शन कुंदन जड़ाऊ, रियल डायमंड, एमराल्ड और रूबी डायमंड एंटीक, रियल डायमंड पोल्की सेट सभी तरह के विवाह कलेक्शन नई डिजाइनों में उपलब्ध कराए हैं। आर.आर अग्रवाल ज्वेलर्स के अभी 6 शोरूम हैं, केमक स्ट्रीट, सिटी सेंटर वन, बड़ा बाजार, जयपुर एमआई रोड, राउरकेला और सिलीगुड़ी में हैं। यह सभी जानकारी डायरेक्टर रेवती रमण अग्रवाल और ऋषभ अग्रवाल ने दी। धनतेरस के उपलक्ष्य में सभी शोरूम देर रात तक खुले रहेंगे और दिवाली तक रविवार के दिन भी खुले हैं। आर आर अग्रवाल ज्वेलर्स के डायरेक्टर रतनलाल अग्रवाल ने बताया कि हमारे यहां 50000 से लेकर ऊपर में सभी तरह की रेंज की ज्वेलरी हर समय उपलब्धष रहती है आर आर अग्रवाल ज्वेलर्स का स्लोगन रिश्ता भरोसे का है जिसे बरकरार रखते हुए कस्टमर को बाय बैक गारंटी का भी पूरा ख्याल रखा जाता है।

ज्ञानशाला से व्यक्तित्व का निर्माण होता है : मुनिश्री जिनेशकुमार जी

❑ आंचलिक ज्ञानशाला प्रशिक्षक रिफ्रेशर कार्यशाला-2024 का सफल आयोजन

हावड़ा : युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि श्री जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के द्वारा संचालित प्रकोष्ठ द्वारा निर्देशित बृहद कोलकाता दक्षिण बंगाल आंचलिक ज्ञानशाला प्रशिक्षक रिफ्रेशर कार्यशाला- 2024 का सफल आयोजन प्रेक्षा विहार में 22 व 23 अक्टूबर 2024 को साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वाधान में आयोजित किया गया। कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक प्राध्यापक निर्मल नौलखा थे। कार्यशाला में कुल 83 प्रशिक्षिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

कार्यशाला में उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि श्री जिनेश कुमार जी ने

कहा- जीवन में ज्ञान का बहुत बड़ा महत्त्व है। बच्चों में ज्ञान विकास एवं संस्कार निर्माण का माध्यम बनती है- ज्ञानशाला। गुरुदेव तुलसी का महत्वपूर्ण अवदान है- ज्ञानशाला। ज्ञानशाला सद्गुणों की खान है। ज्ञानशाला से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। ज्ञानशाला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है- प्रशिक्षिकाएं। प्रशिक्षिकाएं निःस्वार्थ भाव से धर्मसंघ को अपनी सेवा दे रही है। वे निरवद्य सेवा कर अपूर्व निर्जरा कर रही है। प्रशिक्षिकाएं बच्चों को संस्कार देने का कार्य अच्छे ढंग से करे यह अपेक्षित है। प्रशिक्षिकाएं अपने दायित्व का निर्वहन सम्यक प्रकार से करती रहे, जिससे ज्ञानशालाओ का और अधिक विकास होता रहे। मुनिश्री जिनेशकुमार जी ने अपने अमूल्य समय कैसे भावी पीढ़ी को निर्माण करें इस विषय पर प्रशिक्षिकाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया।

वरिष्ठ उपासक निर्मल नौलखा ने कहा-व्यक्ति सफलता चाहता है परंतु उसे सफलता मिल नहीं पाती, क्योंकि सफलता के तीन बाधक तत्व है- अज्ञान, प्रमाद और कषाय ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं इन तीन बाधक तत्वों को दूर करें। ज्ञान का विकास करें प्रमाद छोड़े और अपने कषाय पर नियंत्रण रखें जिससे प्रशिक्षिकाएं और अधिक सफलता को प्राप्त कर सकती है। निर्मल नौलखा ने द्विदिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षिकाओं को सुंदर ढंग से प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला में मंगलाचरण ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने किया। स्वागत भाषण दक्षिण हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत जी बाफणा ने किया। आंचलिक संयोजिका डॉ प्रेमलता चौरडिया ने अपने विचार व्यक्त किया। आभार हेमलता बेगवानी ने किया।

इन दोनों दिनों में प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। जिसमें प्रथम मंजु दुगड़ द्वितीय सरोज दुगड व तृतीय ममता जैन (पूर्वांचल) एवं शांति धाड़ेवाल रही। द्वितीय दिवस प्रतियोगिता में प्रथम मंजु दुगड़ एवं सरोज दुगड़ दितीय चंद्रकला कोचर, ममता जैन(साउथ हावड़ा) व तृतीय शांति धाड़ेवाल रही। कार्यशाला को सफल बनाने में दक्षिण हावड़ा सभा, आंचलिक संयोजिका डॉ. प्रेमलता चोरड़िया, आंचलिक समिति के सदस्य संजय पारख, मनीषा भंसाली, हेमलता बेगवानी एवं विनिता पुगलिया आदि प्रशिक्षिकाओं की महत्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यशाला में दो दिन प्रात: 9:00 बजे से 4:00 बजे तक समय निर्धारित रहा। जिसमें बृहत्तर कोलकाता की प्रशिक्षिकाओं के उत्साह के साथ हिस्सा लिया।

कोलकाता पुलिस ने सशस्त्र बटालियनों को डिविजन में बदला

❑ 1293 कांस्टेबलों की हुई बदली

कोलकाता : कोलकाता पुलिस की सशस्त्र बटालियनों में कार्यरत 1,293 कांस्टेबलों को डिवीजन में 'स्थानांतरित' कर दिया गया। इस संबंध में अधिसूचना भी जारी कर दी गई है। कोलकाता पुलिस के संयुक्त आयुक्त (मुख्यालय) मिराज खालिद ने गुरुवार को निर्देश पर हस्ताक्षर किए लेकिन यह एक नियमित स्थानांतरण माना जाता है। आमतौर पर एक व्यक्ति एक बटालियन में लगातार 5-10 वर्षों तक काम करता है। कईयों को फिर पुलिस स्टेशनों या डिवीजनों में स्थानांतरित कर दिया गया। खुफिया विभाग, यातायात में भी अनुभवी सिपाही

तैनात हैं। लालबाजार सूत्रों के मुताबिक यह गाइडलाइन जारी की गई है । 2,200 नए कांस्टेबल शुक्रवार को विभिन्न बटालियनों में शामिल होने वाले हैं। इससे पहले 1293 लोगों का तबादला किया गया थालेकिन नई नियुक्तियों के कारण बटालियन के भी खाली होने का कोई सवाल ही नहीं है। एक पुलिस अधिकारी का कहना है कि 2011 के बाद से राज्य में डिविजन थाने की संख्या काफी बढ़ गई है। कोलकाता नगर निगम के संलग्न क्षेत्र में पुलिस स्टेशन क्षेत्र का विस्तार भी बड़ा है। लेकिन थाने या डिवीजन में उस तरह से जवानों की संख्या नहीं बढ़ी। इस 'तबादले' के परिणामस्वरूप, पुलिस स्टेशन और यातायात प्रबंधन में जनशक्ति बढ़ जाएगी। फलस्वरूप कानून व्यवस्था, यातायात नियंत्रण थोड़ा आसान हो जाएगा। कम से कम ऐसा ही लगता है।

न्यूज इन ब्रीफ

झामुमो ने जारी की पांचवीं सूची, पूर्व भाजपा विधायक लुईस मरांडी को जामा से मैदान में उतारा

रांची : सत्तारूढ़ झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने शुक्रवार को विधानसभा चुनाव के लिए अपनी पांचवीं सूची जारी की और पूर्व भाजपा विधायक लुईस मरांडी को जामा सीट से अपना उम्मीदवार घोषित किया। सूची में केवल मरांडी का नाम है, जो 22 अक्टूबर को भाजपा छोड़कर झामुमो में शामिल हुई थीं। भाजपा की पूर्व विधायक मरांडी ने 2014 में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को दुमका से 5,262 मतों के अंतर से हराया था। झामुमो राज्य की 81 सीट वाली विधानसभा के चुनाव के लिए अब तक 43 उम्मीदवारों की घोषणा कर चुका है। विधानसभा चुनाव दो चरणों में 13 और 20 नवंबर को होगा। मतगणना 23 नवंबर को होगी।

संभल में सपा नेता के खिलाफ दर्ज बिजली चोरी मामले में 54 लाख रुपये का जुर्माना

संभल : उत्तर प्रदेश के संभल जिले में बिजली विभाग ने समाजवादी पार्टी (सपा) के पूर्व जिलाध्यक्ष के खिलाफ बिजली चोरी के मामले में 54 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। बिजली विभाग के एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। बिजली विभाग ने समाजवादी पार्टी (सपा) के पूर्व जिलाध्यक्ष के खिलाफ 20 अक्टूबर को बिजली चोरी का मुकदमा दर्ज कराया था। संभल के बिजली विभाग के अधिशासी अभियंता नवीन गौतम ने बताया कि 20 अक्टूबर को हयातनगर के पक्का बाग में जांच के दौरान फिरोज खान (सपा के पूर्व जिलाध्यक्ष) के निजी कार्यालय में बिजली चोरी पकड़ी गई। उन्होंने बताया कि खान के खिलाफ 'एंटी पावर थेफ्ट' थाने में विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 135 के तहत मुकदमा दर्ज कराया गया। गौतम ने बताया कि चोरी के मामले में फिरोज खान के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी के आधार पर 54 लाख का जुर्माना बना है। जांच में पता चला कि इनके यहां 2012 से मीटर नहीं लगा हुआ था।

चक्रवात 'दाना' : झारखंड के कुछ हिस्सों में बारिश

रांची : चक्रवाती तूफान 'दाना' के प्रभाव के कारण शुक्रवार को झारखंड के कुछ हिस्सों में बारिश हुई। मौसम विभाग के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। झारखंड के कोल्हान क्षेत्र में पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला-खरसावां और पूर्वी सिंहभूम जिलों में बृहस्पतिवार रात से हल्की से मध्यम बारिश हो रही है, जबकि राज्य के अन्य हिस्सों में बादल छाए हुए हैं और रुक-रुक कर बूंदाबांदी हो रही है। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शुक्रवार को कहा कि वह पिछले 24 घंटे से लगातार चक्रवात प्रणाली पर नजर रखे हुए हैं।

विकसित भारत के संकल्प के लिए युद्ध स्तर पर कार्य कर रही सरकार : योगी आदित्यनाथ

महराजगंज : उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को कहा कि आत्मनिर्भर तथा विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए सरकार युद्ध स्तर पर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने शुक्रवार को महराजगंज जिले के चौक बाजार में 940 करोड़ रुपये की 505 विकास परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास तथा नगर पंचायत चौक बाजार के नवनिर्मित कार्यालय भवन का उद्घाटन करने के बाद यहां आयोजित एक जनसभा को संबोधित करते हुए यह बात कही। योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों के समक्ष विकास और विरासत से जोड़ने का आह्वान करते हुए वर्ष 2047 तक आत्मनिर्भर तथा विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने का लक्ष्य रखा है, इसके लिए सरकार युद्ध स्तर पर काम कर रही है। इसके साथ ही योगी आदित्यनाथ ने नगर पंचायतों और स्थानीय निकायों के लिए विकास परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा, 'स्थानीय निकायों, ग्राम पंचायतों तथा आम नागरिकों के लिए भी विचारणीय आत्मावलोकन का अवसर है कि विकसित भारत के निर्माण में उनकी क्या भूमिका होनी चाहिए।' मुख्यमंत्री ने कहा, 'आवश्यकता है कि नगर पंचायत और स्थानीय निकाय विकास के उन आयामों से जुड़ें जो नागरिक सुविधाओं का विस्तार करने के साथ ही रोजगार का सृजन भी करें।' इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने ग्राम्य विकास विभाग, एमएसएमई, कृषि विभाग, उद्यान विभाग की लाभार्थीपरक योजनाओं समेत मुख्यमंत्री आवास योजना, मुख्यमंत्री युवा रोजगार योजना, दिव्यांगजन सशक्तिकरण योजना, मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना, मत्स्य संपदा योजना के लाभार्थियों को प्रतीकात्मक चेक, चाबी, प्रमाण पत्र व उपहार देकर सम्मानित किया। साथ ही उन्होंने स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत युवाओं को टैबलेट भी वितरित किए।

दलित समुदाय के लोगों के साथ मारपीट के मामले में उप निरीक्षक व ग्राम प्रधान समेत चार के खिलाफ मुकदमा

भदोही (उप्र) : जिले में 15 अगस्त को डॉक्टर भीम राव आंबेडकर समिति द्वारा निकाले गए जुलूस का विरोध करने और इसमें शामिल लोगों के साथ कथित तौर पर मारपीट के मामले में यहां की एक विशेष अदालत के निर्देश पर एक पुलिस उप निरीक्षक और ग्राम प्रधान समेत कुल चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। दुर्गागंज थाने के प्रभारी निरीक्षक सच्चिदानंद पांडेय ने शुक्रवार को बताया कि दुर्गागंज थाना क्षेत्र के सेमरा गांव में 15 अगस्त को आज़ादी का जश्न मनाने के लिए डॉ भीम राव आंबेडकर समिति के सुनील कुमार गौतम, रमेश, राम राज, सितम और कुछ अन्य ग्रामीणों ने राष्ट्रीय झंडा लेकर जुलूस निकाला था।

झारखंड में झामुमो नीत गठबंधन फिर से सरकार बनाएगा: लालू प्रसाद यादव

पटना : राष्ट्रीय जनता दल (राजद)सुप्रीमो लालू प्रसाद ने शुक्रवार को दावा किया कि झारखंड में झामुमो के नेतृत्व वाला 'इंडिया' गठबंधन एक बार फिर आसानी से सरकार बनाएगा। प्रसाद ने पटना में संवाददाताओं से कहा, 'झारखंड में जिन सीट पर राजद चुनाव लड़ रही है, उन सभी पर जीतेगी। हम (झामुमो के नेतृत्व वाला गठबंधन) झारखंड में अच्छे अंतर के साथ दोबारा सरकार बनाएंगे।' लालू प्रसाद से संवाददाताओं ने पूछा कि क्या वह स्वयं झारखंड में 'इंडिया' गठबंधन उम्मीदवारों के लिए प्रचार करेंगे?इसके जवाब में राजद प्रमुख ने कहा, 'हां, मैं 'इंडिया' गठबंधन उम्मीदवारों के साथ-साथ राजद उम्मीदवारों के लिए भी प्रचार करूंगा। मैं जल्द ही प्रचार के लिए झारखंड जाऊंगा। तेजस्वी (यादव) पहले से ही झारखंड में प्रचार कर रहे हैं।' झारखंड में 81 सदस्यीय विधानसभा के लिए 13 और 20 नवंबर को दो चरणों में मतदान होगा और मतों की गिनती 23 नवंबर को होगी। राजद सुप्रीमो ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर आरोप लगाया कि उन्होंने हाल ही में अररिया से भाजपा सांसद प्रदीप कुमार सिंह के विवादित बयान पर चुप्पी साध रखी है। उन्होंने कहा, 'क्या वे (भाजपा सांसद और उनके नेता) हिंदू हैंवे सभी पाखंडी हैं। नीतीश कुमार ऐसी चीजों पर कभी नहीं बोलते।' हाल ही में अररिया में एक जनसभा को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा था, 'खुद को हिंदू कहने में क्या शर्म है? अगर किसी को अररिया में रहना है तो उसे हिंदू बनना होगा'। भाजपा सांसद के इस बयान से विवाद खड़ा हो गया था। जब पत्रकारों ने नीतीश कुमार के बार-बार दिए गए बयान 'अबवे राजग कभी नहीं छोड़ेंगे' पर लालू प्रसाद यादव की टिप्पणी मांगी तो उन्होंने कहा, 'वे (नीतीश) खुद ही आपको बता देंबार-बार ऐसी टिप्पणी करने के पीछे क्या कारण है।'

उपचुनाव वाली राज्य की सभी नौ विधानसभा सीट पर राजग की जीत होगी: केशव प्रसाद मौर्य

प्रयागराज : उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने शुक्रवार को कहा कि अगले माह होने जा रहे उपचुनाव में फूलपुर सहित सभी नौ सीट पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उम्मीदवारों की जीत होगी। प्रयागराज में जिलाधिकारी कार्यालय में फूलपुर सीट के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रत्याशी दीपक पटेल का नामांकन पत्र दाखिल होने के बाद मौर्य ने संवाददाताओं से कहा, 'समाजवादी पार्टी और कांग्रेस का गठबंधन टूट चुका है। लोकसभा चुनाव में सपा और कांग्रेस के पक्ष में जो माहौल बना था, अब उस माहौल की हवा निकल गई है।' उपमुख्यमंत्री ने कहा, 'हरियाणा के विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत के साथ पार्टी का विजय रथ आगे बढ़ चुका है। मुझे विश्वास है कि यह विजय 2027 (उप्र विधानसभा चुनाव) में 2017 के बहुमत को दोहराने की मजबूत नींव बनेगा।' केशव प्रसाद मौर्य ने कहा, कांग्रेस हो, समाजवादी पार्टी हो या विपक्षी दलों का गठबंधन (इंडिया) हो, कांग्रेस मुक्त भारत देश और सपा-बसपा मुक्त उत्तर प्रदेश बनाने को जनता ठान चुकी है। सपा की साइकिल का प्रस्थान सैफई के लिए हो चुका है। उन्होंने कहा, इन दोनों (सपा और कांग्रेस) दलों ने लोकसभा चुनाव में झूठ और फरेब का सहारा लेकर चुनाव लड़ा, इसलिए लोकसभा चुनाव में इन्हें क्षणिक सफलता मिल गई, लेकिन इस उपचुनाव और 2027 के विधानसभा चुनाव में इनका सूपड़ा साफ होगा और कमल खिलेगा।'

उप्र विधानसभा उपचुनाव : बसपा ने आठ सीटों पर उम्मीदवारों के नाम घोषित किये

लखनऊ : बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने उत्तर प्रदेश में नौ सीटों पर होने वाले उपचुनाव के लिए शुक्रवार को अपने नौवें उम्मीदवार की भी घोषणा कर दी। बसपा ने अलीगढ़ जिले की खैर (आरक्षित) सीट के लिए डॉक्टर पहल सिंह को अपना अधिकृत उम्मीदवार घोषित किया है। बसपा मुख्यालय से शुक्रवार को जारी एक प्रेस बयान में कहा गया कि अलीगढ़ जिले की खैर (आरक्षित) सीट के लिए डॉक्टर पहल सिंह पार्टी के उम्मीदवार होंगे। इसके पहले आठ सीटों पर बृहस्पतिवार को बसपा ने उम्मीदवारों के नाम की घोषणा की थी। बसपा के एक सूत्र ने बताया कि डॉक्टर पहल सिंह नगर निगम के सेवानिवृत्त स्वास्थ्य अधिकारी हैं और 2018 में अवकाश लेने के बाद से ही बसपा में सक्रिय हैं। बसपा के राष्ट्रीय महासचिव मेवालाल गौतम की ओर से बृहस्पतिवार को जारी सूची के मुताबिक पार्टी ने कटेहरी (अंबेडकर नगर) सीट से अमित वर्मा, फूलपुर (प्रयागराज) सीट से जितेंद्र कुमार सिंह, मीरापुर (मुजफ्फरनगर) सीट से शाह नजर और सीसामऊ (कानपुर नगर) सीट से वीरेंद्र कुमार शुक्ला को उम्मीदवार बनाया है। सूची के अनुसार, पार्टी ने इन सीटों के अलावा करहल (मैनपुरी) से अवनीश कुमार शाक्य, कुंदरकी (मुरादाबाद) से रफत उल्ला, गाजियाबाद से परमानंद गर्ग तथा मझवां (मिर्जापुर) से दीपक तिवारी को प्रत्याशी बनाया है। बसपा ने नौ सीटों में एक दलित, एक वैश्य, दो मुस्लिम, दो ब्राह्मण, एक ठाकुर और दो अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवार उतारे हैं। उत्तर प्रदेश की नौ विधानसभा सीटों पर उपचुनाव आगामी 13 नवंबर को होगा और इसके परिणाम 23 नवंबर को घोषित किए जाएंगे। प्रदेश में जिन विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हो रहे हैं उनमें कटेहरी (अंबेडकरनगर), करहल (मैनपुरी), मीरापुर (मुजफ्फरनगर), गाजियाबाद, मझवां (मिर्जापुर), सीसामऊ (कानपुर शहर), खैर (अलीगढ़), फूलपुर (प्रयागराज) और कुंदरकी (मुरादाबाद) शामिल हैं।

टूडो ने भारत, कनाडा के रिश्तों को बर्बाद कर दिया: पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर

चंडीगढ़ : पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता अमरिंदर सिंह ने भारत-कनाडा संबंधों को 'बर्बाद' करने के लिए कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की आलोचना करते हुए शुक्रवार को कहा कि उनका एकमात्र मकसद वहां चुनावों में सिख वोट हासिल करना है। सिंह ने यह टिप्पणी भारत और कनाडा के बीच संबंध तल्ख़ होने के बीच की है। कनाडा ने अपने नागरिक हरदीप सिंह निज्जर की जून 2023 में हत्या के मामले में पिछले सप्ताह कहा था कि भारतीय उच्चायुक्त संजय वर्मा और पांच अन्य राजनयिक इस मामले की जांच के तहत 'निगरानी की श्रेणी' में हैं। इसके बाद, भारत ने वर्मा और उन पांचों राजनयिकों को वापस बुला लिया था। भारत और कनाडा के बीच कूटनीतिक विवाद पर एक पत्रकार के सवाल का जवाब देते हुए सिंह ने कहा, 'ट्रूडो ने (भारत और कनाडा के) संबंधों को बर्बाद कर दिया है।

न्यूज अपडेट

किसानों के विरोध प्रदर्शन पर टिप्पणी को लेकर कंगना रनौत अदालत में पेश नहीं हुईं

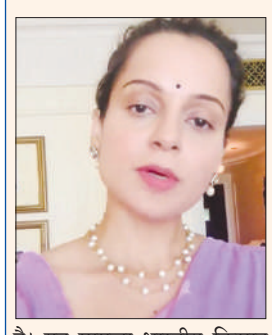

बुलंदशहर (उप्र) : फिल्म अभिनेत्री और लोकसभा सदस्य कंगना रनौत द्वारा 2020-21 में किसानों के विरोध प्रदर्शन के बारे में कथित रूप से आपत्तिजनक टिप्पणी करने के लिए उनके खिलाफ दायर एक मामले के सिलसिले में शुक्रवार को वह एमपी-एमएलए अदालत में पेश नहीं हुईं। शिकायतकर्ता के वकील के अनुसार, अदालत ने अब दो नोटिस जारी किए हैं, जिसमें उन्हें 28 नवंबर को पेश होने का निर्देश दिया गया है। यह मामला भारतीय किसान यूनियन (किसान शक्ति) के नेता गजेंद्र शर्मा ने दायर किया था, जिन्होंने आरोप लगाया था कि रनौत की टिप्पणी उन किसानों के प्रति अपमानजनक थी, जिन्होंने अब निरस्त किए जा चुके कृषि कानूनों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया था। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सांसद के खिलाफ एमपी-एमएलए अदालत में याचिका दायर की, जिसमें रनौत द्वारा कथित तौर पर किसानों को खालिस्तानी और हाल ही में बलात्कारी और हत्यारे के रूप में संदर्भित की गई टिप्पणियों का हवाला दिया गया। शर्मा के कानूनी प्रतिनिधि संजय शर्मा के अनुसार, अदालत ने रनौत को 25 अक्टूबर को पेश होने के लिए प्रारंभिक नोटिस जारी किया था।

भाजपा अब 'रिश्तेदारवादी' हो गयी है : अखिलेश यादव

लखनऊ : समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर आरोप लगाते हुए शुक्रवार को कहा कि भाजपा सपा से आगे निकलकर 'रिश्तेदारवादी' हो गयी है। सपा प्रमुख ने शुक्रवार को करहल विधानसभा क्षेत्र के दिव्हुली में चौधरी नत्थू सिंह यादव डिग्री कॉलेज में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यह बात कही। वहीं, करहल से भाजपा उम्मीदवार अनुजेश यादव के नामांकन में पहुंचे प्रदेश सरकार में समाज कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) असीम अरुण ने अखिलेश पर पलटवार करते हुए कहा कि यह किसी परिवार के रिश्तेदारों के बीच की लड़ाई नहीं, बल्कि नीतियों की लड़ाई है।' समाजवादी पार्टी ने अपने आधिकारिक 'एक्स' खाते पर अखिलेश यादव के करहल संबोधन का एक अंश पोस्ट किया, आज चुनाव के नामांकन का आखिरी दिन है। भाजपा की भी सूची आ गई है। जो नारा वो लगाते थे कि हम लोग परिवारवादी हैं, लेकिन भाजपा अब हम लोगों से और आगे निकल गई है तथा अब वो 'रिश्तेदारवादी' हो गए हैं। भाजपा ने करहल विधानसभा सीट पर अखिलेश यादव के चचेरे बहनोई अनुजेश यादव (आजमगढ़ के सांसद धर्मेन्द्र यादव के सगे बहनोई) को अपना उम्मीदवार बनाया है। करहल विधानसभा क्षेत्र 1993 से सपा का गढ़ माना जाता है। इस पर मुलायम सिंह यादव के पोते एवं सपा उम्मीदवार व पूर्व सांसद तेज प्रताप यादव और भाजपा के अनुजेश यादव के बीच आमना-सामना होगा। यह मुकाबला फूफा और भतीजे के बीच होगा।

उप्र : मेरठ और सहारनपुर में मालगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतरे, जान माल का नुकसान नहीं

मेरठ/सहारनपुर : उत्तर प्रदेश के मेरठ और सहारनपुर के अलग-अलग क्षेत्रों में मालगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतर गये। हालांकि, इससे जान-माल की कोई क्षति नहीं हुई। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। मेरठ में सिटी स्टेशन रेलवे यार्ड जा रही एक मालगाड़ी बेपटरी हो गयी। मुरादाबाद रेलवे के पुलिस अधीक्षक (एसपी) आशुतोष शुक्ला ने मेरठ की घटना की पुष्टि करते हुए 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि शंटिंग के दौरान मालगाड़ी की एक बोगी के दो चक्के आज सुबह करीब 9:10 बजे सिटी स्टेशन पर पटरी से उतर गये। उन्होंने बताया कि इस घटना में किसी तरह के जान-माल के नुकसान की कोई सूचना नहीं मिली है। सूचना मिलने पर अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं। मालगाड़ी के बेपटरी होने से उत्कल, नौचंदी समेत आधा दर्जन रेलगाड़ियों के निर्धारित समय में विलंब होने के बारे में पूछने पर एसपी-रेलवे ने बताया कि इस बारे में जानकारी रेलवे अधिकारी ही दे सकते हैं। रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी (पीआरओ) को फोन मिलाया गया, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो सका। मेरठ के सिटी स्टेशन के अधीक्षक आरपी सिंह से जब इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने घटना के बारे में किसी भी तरह की जानकारी देने से इनकार कर दिया। सिटी स्टेशन पर मौजूद लोगों ने बताया कि मालगाड़ी को यार्ड में ले जाते समय यह घटना हुई है।

लगातार पांचवें दिन लुढ़का बाजार, सेंसेक्स 663 अंक टूटा, निफ्टी 24,200 के नीचे फिसला

मुंबई : घरेलू शेयर बाजारों में गिरावट का सिलसिला लगातार पांचवें कारोबारी सत्र में शुक्रवार को भी जारी रहा। चौतरफा बिकवाली के दबाव के बीच बीएसई सेंसेक्स लगभग 663 अंक गिरकर 80,000 के स्तर से काफी नीचे आ गया जबकि निफ्टी 24,200 के नीचे फिसल गया। विश्लेषकों ने कहा कि बड़े पैमाने पर विदेशी पूंजी निकासी और कंपनियों के तिमाही नतीजे उम्मीदों के अनुरूप न होने से बना व्यापक बिकवाली का दबाव बाजार में इस गिरावट की प्रमुख वजह रहे। कच्चे तेल की वैश्विक कीमतों में तेजी और भू-राजनीतिक अनिश्चितता से भी धारणा प्रभावित हुई। बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक सेंसेक्स 662.87 अंक यानी 0.83 प्रतिशत गिरकर 79,402.29 पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 927.18 अंक लुढ़कते हुए 79,137.98 तक आ गया था। हालांकि अंतिम घंटे में निचले स्तर पर खरीदारी आने से गिरावट कुछ कम हुई। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का मानक सूचकांक निफ्टी भी 218.60 अंक यानी 0.90 प्रतिशत गिरकर 24,180.80 पर बंद हुआ। इसके साथ ही इस पूरे कारोबारी सप्ताह में गिरावट का सिलसिला जारी रहा। सप्ताह के सभी पांचों दिन बाजार नुकसान के साथ बंद हुए। इस दौरान सेंसेक्स में कुल 1,822.46 अंक यानी 2.24 प्रतिशत और निफ्टी में कुल 673.25 अंक यानी 2.70 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, घरेलू बाजार विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की बिकवाली लगातार जारी रहने की वजह से गिरावट पर हैं। दैनिक उपभोग के सामान (एफएमसीजी) से संबंधित क्षेत्र को छोड़कर सभी खंडों में गिरावट रही और सबसे ज्यादा नुकसान छोटी एवं मझोली कंपनियों को उठाना पड़ा। नायर ने कहा, घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) के लगातार खरीदारी करने से इस दबाव में कमी आई है। प्रतिगामी बिकवाली के कारण घरेलू बाजार के अधिक बिकवाली वाले दायरे में पहुंच जाने की आशंका है। सेंसेक्स के शेयरों में से इंडसइंड बैंक में 18.50 प्रतिशत से अधिक की भारी गिरावट दर्ज की गई। सितंबर तिमाही के खराब प्रदर्शन से निवेशकों ने बिकवाली का रुख अपना लिया। पिछली तिमाही में इंडसइंड बैंक का शुद्ध लाभ 40 प्रतिशत घटकर 1,331 करोड़ रुपये रहा है। इसके अलावा महिंद्रा एंड महिंद्रा, लार्सन एंड टुब्रो, एनटीपीसी, अदाणी पोर्ट्स, टाटा स्टील, मारुति सुजुकी, बजाज फाइनेंस और टाइटन के शेयर भी गिरावट के साथ बंद हुए।

सोने में 1,150 रुपये की गिरावट, चांदी 2,000 रुपये फिसली

नयी दिल्ली : आभूषण विक्रेताओं और खुदरा कारोबारियों की सुस्त मांग के कारण राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में शुक्रवार को सोने की कीमत 1,150 रुपये लुढ़क कर 80,050 रुपये प्रति 10 ग्राम रही। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने यह जानकारी दी। चांदी भी बिकवाली दबाव में रही और 2,000 रुपये फिसलकर एक लाख रुपये से नीचे 99,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई। इससे पहले बृहस्पतिवार को चांदी 1.01 लाख रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। इसके अतिरिक्त 99.5 प्रतिशत शुद्धता वाले सोने का भाव 350 रुपए गिरकर 80,450 रुपए प्रति 10 ग्राम रह गया, जबकि पिछले दिन इसका भाव 80,800 रुपए प्रति 10 ग्राम था। जबकि 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाले सोने का भाव 1,150 रुपए गिरकर 80,050 रुपए प्रति 10 ग्राम रह गया, जबकि बृहस्पतिवार को इसका भाव 81,200 रुपए प्रति 10 ग्राम था।

रोजगार सृजन सबसे बड़ा वैश्विक मुद्दा : सीतारमण

वाशिंगटन : वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने रोजगार सृजन को सबसे बड़ा वैश्विक मुद्दा बताते हुए, विश्व बैंक से रोजगार सृजन करने वाले उच्च प्राथमिकता के कौशल क्षेत्रों की पहचान करने के लिए देशों के साथ सहयोग करने का आह्वान किया। सीतारमण 'विश्व बैंक को अपनी भविष्य की रणनीतिक दिशा कैसे तय करनी चाहिए तथा ग्राहकों को उभरते मेगाट्रेंड के साथ तालमेल रखने के लिए अधिक नौकरियों के सृजन में कैसे मदद करनी चाहिए' विषय पर एक चर्चा में अपनी बात रख रही थीं। वित्त मंत्रालय ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर अपने आधिकारिक खाते पर जानकारी दी, 'सीतारमण ने इस बात पर जोर दिया कि निरंतर आर्थिक चुनौतियों और तेजी से हो रहे प्रौद्योगिकी बदलावों को देखते हुए नौकरियां सबसे बड़ी वैश्विक समस्या बनी हैं, जो युवाओं के लिए नौकरी बाजार में प्रवेश करने के वास्ते आवश्यक कौशल को पुनर्परिभाषित कर रही हैं।' उन्होंने बृहस्पतिवार को कहा कि विश्व बैंक ने इससे पहले क्षेत्रीय रुझानों तथा रोजगार पर उनके संभावित प्रभाव पर कई अध्ययन किए हैं। इनमें 'हरित नौकरियां', कृत्रिम मेधा के चलन में आने के बाद नौकरियां और बदलती जनसांख्यिकी के कारण बदलाव जैसे क्षेत्र आदि विषयों पर अध्ययन किए गए। हालांकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि समय की मांग है कि अधिक व्यापक, बहु-क्षेत्रीय विश्लेषण किया जाए। इसमें इस बात पर गौर किया जाए कि उभरते रुझान किस प्रकार परस्पर क्रिया करते हैं और कैसे नौकरी छूटने तथा नौकरी सृजन दोनों को प्रभावित करते हैं।

आय असमानता में 74 प्रतिशत की कमी: एसबीआई रिपोर्ट

नयी दिल्ली : पांच लाख रुपये तक की सालाना आमदनी वाले लोगों के लिए आय असमानता वित्त वर्ष 2013-14 और 2022-23 के बीच 74.2 प्रतिशत तक घट गई है। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) की शुक्रवार को जारी एक रिपोर्ट में यह बात कही गई। भारत में 'असमानता की स्थिति बिगड़ने के बहुप्रचारित मिथक' को स्पष्ट करने के लिए एसबीआई के आर्थिक विभाग की शोध रिपोर्ट ने आकलन वर्ष 2014-15 और 2023-24 के आय असमानता प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है। रिपोर्ट के मुताबिक, कर आकलन वर्ष 2014-15 और 2023-24 के दौरान आय असमानता के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि आय वितरण वक्र में स्पष्ट रूप से दाईं ओर झुकाव हुआ है। इसका मतलब है कि निम्न आय वर्ग के लोग आबादी में अपनी हिस्सेदारी के अनुपात में अपनी आय को भी बढ़ा रहे हैं। रिपोर्ट कहती है, हमारे विश्लेषण से पता चलता है कि पांच लाख रुपये तक की आय वाले लोगों के लिए आय असमानता कवरेज में कुल मिलाकर 74.2 प्रतिशत की गिरावट आई है। यह दर्शाता है कि सरकार के निरंतर प्रयास आर्थिक पिरामिड के निचले हिस्से तक पहुंच रहे हैं। इससे 'निम्न आय वर्ग' के लोगों की आय बढ़ रही है। रिपोर्ट के मुताबिक, 3.5 लाख रुपये तक की आय वाले लोगों की आय असमानता में हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2013-14 में 31.8 प्रतिशत थी जो वित्त वर्ष 2020-21 में घटकर 12.8 प्रतिशत हो गई। इस समूह की आय हिस्सेदारी उनकी आबादी की तुलना में 19 प्रतिशत तेजी से बढ़ी है। एसबीआई की रिपोर्ट कहती है कि निम्न आय वर्ग (5.5 लाख रुपये से कम आमदनी) ने पिछले दशक में अध्ययन काल की समूची अवधि (आकलन वर्ष 2019-20 को छोड़कर) में सकारात्मक वृद्धि दर दर्ज की है। शोध रिपोर्ट के अनुसार, आयकर आधार में पारंपरिक रूप से अग्रणी रहने वाले महाराष्ट्र, दिल्ली, गुजरात और कर्नाटक जैसे राज्य आयकर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल करने में उच्चतम स्तर के करीब पहुंच रहे हैं और कुल कर आधार में उनकी हिस्सेदारी घट रही है। आईटीआर जमा करने में उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी तेजी से बढ़ी है और उसके बाद बिहार, आंध्र प्रदेश, पंजाब और राजस्थान का स्थान है। एसबीआई रिपोर्ट के मुताबिक, प्रगतिशील कराधान व्यवस्था को अपनाने से कुल कर राजस्व में प्रत्यक्ष करों का योगदान आकलन वर्ष 2023-24 में बढ़कर 56.7 प्रतिशत तक पहुंच गया, जो 14 वर्षों में सबसे अधिक है।

कमजोर हाजिर मांग से एल्युमीनियम वायदा कीमतों में गिरावट

नयी दिल्ली : हाजिर बाजार में कमजोरी के रुख के बीच कारोबारियों द्वारा अपने सौदों की कटान करने से वायदा कारोबार में शुक्रवार को एल्युमीनियम की कीमत 3.05 रुपये की गिरावट के साथ 240.50 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में नवंबर माह की डिलिवरी के लिए एल्युमीनियम के अनुबंध का भाव 3.05 रुपये यानी 1.26 प्रतिशत की गिरावट के साथ 240.50 रुपये प्रति किलोग्राम रह गया। इसमें 2,937 लॉट के लिए कारोबार हुआ। बाजार विश्लेषकों ने कहा कि हाजिर बाजार में उपभोक्ता उद्योगों की मांग घटने के बीच कारोबारियों द्वारा अपने सौदों की कटान करने से वायदा बाजार में एल्युमीनियम कीमतों में गिरावट आई।

इंडिगो को सितंबर तिमाही में 986 करोड़ रुपये का घाटा

नयी दिल्ली : देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो को चालू वित्त वर्ष की सितंबर तिमाही में 986.7 करोड़ रुपये का शुद्ध घाटा हुआ है। कंपनी ने शुक्रवार को बयान में कहा कि उसे यह घाटा ठप विमानों और ईंधन की ऊंची कीमतों के कारण हुआ है। बीते वित्त वर्ष की समान तिमाही में कंपनी को 188.9 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था। इंडिगो के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) पीटर एल्बर्स ने कहा कि एयरलाइन की वृद्धि और विस्तार जारी रहा और सितंबर तिमाही में इसकी आमदनी 14.6 प्रतिशत बढ़कर 17,800 करोड़ रुपये हो गई। उन्होंने कहा, परंपरागत रूप से कमजोर दूसरी तिमाही में, ठप विमानों और ईंधन लागत से संबंधित प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण परिणाम और भी प्रभावित हुए। हमने एक नया मोड़ लिया है क्योंकि ठप विमानों की संख्या और संबंधित लागत में कमी आनी शुरू हो गई है। सितंबर तिमाही में एयरलाइन की ईंधन लागत 12.8 प्रतिशत बढ़कर 6,605.2 करोड़ रुपये हो गई।

न्यूज इन ब्रीफ

उज्जैन में एसयूवी और तेल टैंकर की टक्कर में चार लोगों की मौत, तीन घायल

उज्जैन : मध्यप्रदेश के उज्जैन जिले में शुक्रवार को स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल (एसयूवी) और तेल टैंकर की टक्कर में चार लोगों की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। खाचरौद पुलिस थाने के अधिकारी धनसिंह नलवाया ने यहां संवाददाताओं को बताया कि एसयूवी में सवार लोग तीर्थयात्रा के बाद पड़ोसी राज्य राजस्थान के अजमेर से इंदौर लौट रहे थे उसी दौरान यह हादसा हुआ। उन्होंने बताया कि यह घटना जिला मुख्यालय से लगभग 50 किलोमीटर दूर जावरा-नागदा रोड पर बेडावन्या गांव के पास हुई जिसमें चार लोगों की मौत हो गई।

बीएसएफ ने तीन किलोग्राम हेरोइन और दो पिस्तौल के साथ चार लोगों को पकड़ा

चंडीगढ़ : बीएसएफ ने शुक्रवार को कहा कि उसने पंजाब के तरनतारन जिले में भारत-पाकिस्तान सीमा के नजदीक चार लोगों के पास से हेरोइन और दो पिस्तौल बरामद होने के बाद उन्हें गिरफ्तार किया। खुफिया सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों ने सीमा बाड़ के पास एक स्थानीय किसान सहित तीन अन्य लोगों को गिरफ्तार किया। बल के एक प्रवक्ता ने बताया कि ट्रैक्टर ट्रॉली की गहन तलाशी लेने पर उनके पास से एक बैग बरामद हुआ, जिसमें 3.166 किलोग्राम वजन के हेरोइन के तीन पैकेट तथा दो पिस्तौल एवं खाली मैगजीन थी। बीएसएफ ने कहा कि पकड़े गए तस्कर तरनतारन के गांव नौशेरा ढल्ला और जिला मोगा के गांव मुनहवा के रहने वाले हैं।

दिल्ली पुलिस ने लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के आठ शूटर गिरफ्तार किये

नयी दिल्ली : दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा ने लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के खिलाफ कार्रवाई करते हुए उसके कम से कम सात कथित शूटर गिरफ्तार कर लिये जो राजस्थान के एक पूर्व विधायक के रिश्तेदार को निशाना बनाने की साजिश रच रहे थे। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि एक अलग लेकिन संबंधित घटना में, दिल्ली पुलिस ने लॉरेंस बिश्नोई और काला जठेड़ी गिरोह के एक अन्य सदस्य को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से हथियार और गोला-बारूद बरामद किए। यह गिरफ्तारी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) नेता और महाराष्ट्र सरकार के पूर्व बाबा सिद्दीकी की 12 अक्टूबर को मुंबई में सनसनीखेज हत्या के कुछ दिन बाद हुई है। बिश्नोई गिरोह ने इस हत्या की जिम्मेदारी ली है। पुलिस उपायुक्त (विशेष प्रकोष्ठ) प्रतीक्षा गोदारा ने बताया कि सातों आरोपियों की पहचान रितेश, सुखराम, साहिल, अमर, बादल, प्रमोद और संदीप के रूप में की गई है। उन्होंने बताया कि हालांकि पुलिस को अभी तक सिद्दीकी की हत्या के मामले में उनके संबंध नहीं मिले हैं, लेकिन आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

यूपीएससी ने केंद्रीय सिविल सेवाओं के लिए 120 और उम्मीदवारों की सिफारिश की

नयी दिल्ली : संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने शुक्रवार को विभिन्न केंद्रीय सिविल सेवाओं में चयन के लिए आरक्षित सूची में शामिल 120 और उम्मीदवारों की सिफारिश की। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गई। विज्ञप्ति के मुताबिक इन उम्मीदवारों ने सिविल सेवा परीक्षा 2023 उत्तीर्ण की थी, जिसका परिणाम इस वर्ष अप्रैल में घोषित किया गया था। अंतिम परीक्षा परिणाम के आधार पर, 1,143 रिक्तियों के लिए 1,016 उम्मीदवारों को भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस), भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस), भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) और कुछ अन्य केंद्रीय सेवाओं में नियुक्ति की सिफारिश की गई थी। यूपीएससी द्वारा जारी विज्ञप्ति के मुताबिक कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) की मांग के अनुसार, आयोग ने अब 120 उम्मीदवारों की सिफारिश की है, जिनमें 88 सामान्य, पांच आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग, 23 अन्य पिछड़ा वर्ग, तीन अनुसूचित जाति और एक अनुसूचित जनजाति से हैं। इन उम्मीदवारों की नियुक्ति सिविल सेवा परीक्षा, 2023 के आधार पर शेष पदों पर की जाएगी।

यूक्रेन, पश्चिम एशिया में संघर्ष चिंता का विषय, शांति के लिए भारत हर योगदान को तैयार: मोदी

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि यूक्रेन और पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष चिंता का विषय है और भारत शांति बहाली के लिए हर संभव योगदान देने को तैयार है। उनकी टिप्पणी जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज के साथ हुई बातचीत के बाद आई, जिसमें उन्होंने भारत से यूक्रेन में लंबे समय से चल रहे संघर्ष का राजनीतिक समाधान खोजने में योगदान देने का आह्वान किया। मोदी ने जर्मन चांसलर के साथ सातवें अंतर-सरकारी परामर्श (आईजीसी) के बाद कहा, ''यूक्रेन और पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष हम दोनों के लिए चिंता के विषय हैं। भारत का हमेशा मत रहा है कि युद्ध से समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता। और शांति की बहाली के लिए भारत हर संभव योगदान देने को तैयार है।'' मोदी ने कहा कि वह और शोल्ज इस बात पर सहमत हैं कि 20वीं सदी में स्थापित वैश्विक मंच 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने में सक्षम नहीं हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, ''संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित विभिन्न बहुपक्षीय संस्थानों में सुधार की आवश्यकता है।'' इससे पहले, आईजीसी की शुरुआत करते हुए भारत और जर्मनी की रणनीतिक साझेदारी ऐसे समय में मजबूत सहारे के रूप में उभरी जब दुनिया तनाव, संघर्ष और अनिश्चितता का सामना कर रही है। आईजीसी बैठक में भाग लेते हुए मोदी ने कहा कि भारत-जर्मनी के संबंध आदान-प्रदान के संबंध नहीं बल्कि दो सक्षम और मजबूत लोकतंत्रों की परिवर्तनकारी साझेदारी है। मोदी ने कहा, ''दुनिया तनाव, संघर्ष और अनिश्चितता के दौर से गुजर रही है।

परमाणु हथियारों का इस्तेमाल या इस्तेमाल की धमकी 'अस्वीकार्य' है: भारत-जर्मनी संयुक्त वक्तव्य

भारत और जर्मनी ने यूक्रेन में लंबे समय से जारी युद्ध और इसके गंभीर मानवीय परिणामों को लेकर ''गहरी चिंता'' व्यक्त की। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज ने इस बात पर सहमति जताई कि युद्ध के संदर्भ में परमाणु हथियारों का ''इस्तेमाल या इस्तेमाल की धमकी'' ''अस्वीकार्य'' है। दोनों नेताओं ने यहां सातवीं भारत-जर्मनी अंतर-सरकारी परामर्श (आईसीजी) बैठक की सह-अध्यक्षता की। विदेश मंत्रालय की ओर से जारी एक संयुक्त वक्तव्य में कहा गया कि उन्होंने आतंकवाद और हिंसक उग्रवाद के सभी रूपों की ''स्पष्ट रूप से निंदा'' की।

न्याय की देवी मूर्ति के कई हाथ होने चाहिए थे और उनमें हथियार होने चाहिए थे: मीनाक्षी लेखी

नयी दिल्ली : पूर्व केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने कुछ शक्तियों द्वारा देश को अस्थिर करने के लिए जाति और धर्म को हथियार बनाये जाने पर शुक्रवार को चिंता जताई और कहा कि वर्तमान स्थिति से निपटने के लिए उच्चतम न्यायालय में 'न्याय की देवी' की नई मूर्ति के कई हाथ होने चाहिए थे और उन हाथों में हथियार होने चाहिए थे। लेखी की यह टिप्पणी उच्चतम न्यायालय में नयी 'न्याय की मूर्ति' लगाये जाने के कुछ दिनों बाद आई है। न्यायाधीशों के पुस्तकालय में छह फुट ऊंची यह नयी मूर्ति लगायी है जिसके एक हाथ में तराजू और दूसरे हाथ में संविधान है। उसके हाथ में तलवार नही है। पारंपरिक सफेद पोशाक पहनी इस नयी 'न्याय की देवी' की आंखों पर से पट्टी हटा दी गयी है और उसके हाथों में तलवार भी नहीं है। उसके सिर पर एक मुकुट है। यहां चाणक्य रक्षा संवाद 2024 को संबोधित करते हुये लेखी ने कहा, ''नई मूर्ति को लेकर विवाद चल रहा है। कुछ लोग कह रहे हैं कि यह एकतरफा फैसला था। मैं इसे पूरी तरह से व्याख्या कहूंगी।'' पेशे से वकील लेखी ने यह भी कहा कि पुरानी मूर्ति भारतीय परिप्रेक्ष्य से न्याय की देवी या न्याय की अवधारणा को प्रतिबिंबित नहीं करती है। उन्होंने कहा, ''इसलिए, कोई यह कह सकता है कि नवीनतम घटनाक्रम सकारात्मक है। मैं यहां तक कहूंगी कि इसे बदलने के बजाय, हम इसकी एक आंख पर पट्टी बांध सकते थे... हम तलवार भी रख सकते थे।'' लेखी ने कहा, ''हम देवी को कई भुजाओं के साथ देखने के आदी हैं। इसलिए, हम नई मूर्ति को कई भुजाएं दे सकते थे और समाज की वर्तमान स्थिति से निपटने के लिए उसे और अधिक हथियारबंद कर सकते थे।'' उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा, ''हम उसे इससे निपटने के लिए एक मोबाइल फोन और इंटरनेट भी दे सकते थे।''

मानहानि मामले में संजय राउत को मिली जमानत

मुंबई : शिवसेना (यूबीटी) के नेता संजय राउत को यहां की एक सत्र अदालत ने शुक्रवार को जमानत दे दी। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता किरीट सोमैया की पत्नी मेधा सोमैया की ओर से दायर मानहानि के एक मामले में अपनी दोषसिद्धि को चुनौती दी थी। राउत ने अपनी दोषसिद्धि और मजिस्ट्रेट अदालत द्वारा दी गई 15 दिन की जेल की सजा के खिलाफ सत्र न्यायालय में पुनरीक्षण याचिका दायर की है। राज्यसभा सदस्य शुक्रवार को अदालत में पेश हुए और जमानत दिये जाने का अनुरोध किया। अदालत ने उन्हें 50,000 रुपये के जमानती बॉण्ड पर जमानत दे दी। न्यायिक मजिस्ट्रेट (प्रथम श्रेणी) आरती कुलकर्णी ने 26 सितंबर को राउत को भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 500 (मानहानि) के तहत अपराध के लिए दोषी ठहराया था। राज्यसभा सदस्य को 15 दिन की जेल की सजा सुनाई गई थी और 25,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया था। बाद में हालांकि अदालत ने सजा को 30 दिन के लिए स्थगित कर दिया था, ताकि वह उच्च न्यायालय में आदेश को चुनौती दे सकें।

गुलमर्ग आतंकी हमला: उपराज्यपाल ने शहीद सैनिकों और पोर्टर को श्रद्धांजलि अर्पित की

श्रीनगर : जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शुक्रवार को गुलमर्ग में एक दिन पहले हुए आतंकवादी हमले में शहीद हुए सैनिकों और पोर्टर को श्रद्धांजलि अर्पित की। पोर्टर सैन्यकर्मियों के साथ माल ढुलाई का काम करते हैं। सिन्हा ने सेना की श्रीनगर स्थित 15वीं कोर इकाई (जिसे चिनार कोर के नाम से भी जाना जाता है) का दौरा कर शहीद सैनिकों और मारे गए पोर्टर को श्रद्धांजलि अर्पित की। उपराज्यपाल ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, 24 अक्टूबर 2024 को बोटा पथरी सेक्टर में राष्ट्र की सेवा में सर्वोच्च बलिदान देने वाले बहादुर सैनिकों और रक्षा बल के पोर्टर को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि देश उनकी निस्वार्थ सेवा और सर्वोच्च बलिदान को कभी नहीं भूलेगा। उन्होंने कहा, हम शोक संतप्त परिवारों के साथ एकजुटता से खड़े हैं। आतंकवादियों ने बृहस्पतिवार को उत्तरी कश्मीर के बारामूला जिले में लोकप्रिय पर्यटन स्थल गुलमर्ग से छह किलोमीटर दूर सेना के एक वाहन पर हमला कर दिया। इस हमले में दो पोर्टर मारे गए और दो सैनिक शहीद हो गए। सेना ने दोनों शहीद सैनिकों की पहचान राइफलमैन कैसर अहमद शाह और जीवन सिंह के रूप में की है।

चक्रवात 'दाना' : ओडिशा के केंद्रपाड़ा जिले में तूफान के कम असर से लोगों ने राहत की सांस ली

केंद्रपाड़ा : ओडिशा का तटीय जिला केंद्रपाड़ा शुक्रवार को भीषण चक्रवाती तूफान 'दाना' से बहुत ज्यादा प्रभावित होने से बच गया जिससे यहां के लोगों ने राहत की सांस ली। अधिकारियों ने बताया कि जान-माल के नुकसान की कोई खबर नहीं है, लेकिन ज्वार की लहरें कुछ गांवों और कृषि क्षेत्रों में घुस गईं। केंद्रपाड़ा के जिलाधिकारी स्मृति रंजन प्रधान ने कहा, अभी तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। संपत्ति का नुकसान कम से कम हुआ है। हमें उम्मीद है कि जल्द ही सामान्य स्थिति बहाल हो जाएगी। एक अधिकारी ने बताया कि भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान चक्रवात के विनाशकारी प्रभाव से काफी हद तक बच गया है। हालांकि उद्यान से संबंधित विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा है। केंद्रपाड़ा जिले के राजनगर ब्लॉक के विकास अधिकारी निशांत मिश्रा ने कहा, पर्याप्त एहतियाती उपायों और समय पर लोगों की निकासी के साथ हम बिना किसी मानवीय क्षति के प्रकृति के प्रकोप का सफलतापूर्वक सामना कर पाए हैं। कुछ कच्चे घरों के ढहने को छोड़कर नुकसान बहुत कम हुआ है। तटीय राजनगर ब्लॉक के कई स्थानों पर पेड़ों के उखड़ जाने से सड़क संपर्क बाधित हो गया है। उन्होंने कहा कि ओडीआरएएफ टीम ने उखड़े हुए पेड़ों को हटाकर ज्यादातर जगहों पर सड़क यातायात बहाल कर दिया है। केंद्रपाड़ा और पड़ोसी भद्रक दोनों के 'दाना' से प्रभावित होने की आशंका थी। सरकारी एजेंसियों ने लोगों को संवेदनशील इलाकों से निकालने के लिए पहले ही अलर्ट जारी कर दिया था। एक अधिकारी ने बताया कि चक्रवाती तूफान से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले गांव तालचुआ, रंगानी, केरुआपाला, बाघमारी, डांगामल, ईश्वरपुर, गुप्ती और सतभाया हैं। केंद्रपाड़ा जिले के समुद्र तटीय रामनगर गांव के निवासी रमाकांत साहू ने कहा, भगवान की कृपा से हम प्रकृति के प्रकोप से बच गए हैं। हवा की गति कम थी। हालांकि हमने भारी बारिश का सामना किया।

आरेडिका ने किया हरित ऊर्जा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित

रायबरेली : आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना रायबरेली में शुक्रवार को आरेडिका के विद्युत विभाग के द्वारा प्रशासनिक भवन, तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र एवं जीएम कैम्प ऑफिस की छत पर 635 किलोवाट के रूफटॉप सोलर पैनल की स्थापना की गई। इस नवनिर्मित रूफटॉप सोलर पैनल का उद्घाटन महाप्रबंधक प्रशान्त कुमार मिश्रा द्वारा उच्चाधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। आरेडिका के प्रधान मुख्य विद्युत अभियंता हरीश चन्द्र ने बताया कि नवनिर्मित रूफटॉप सोलर पैनल के निर्माण से प्रशासनिक भवन की कुल विद्युत खपत जो वर्तमान में 4000 यूनिट है घटकर मात्र 1500 यूनिट प्रतिदिन औसत रह जाएगी एवं भविष्य में इस 1500 यूनिट को भी हरित ऊर्जा द्वारा पूरा करने के लिए प्रशान्ति परिसर स्थित 3 मेगावाट के संयंत्र से जोड़ा जाएगा इससे सम्पूर्ण प्रशासनिक भवन ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भर हो जाएगा। इस संयंत्र के निर्माण से 14 हजार रुपये प्रतिदिन की बचत होगी जिससे पॉच साल में 2.5 करोड रुपये की बचत होगी जोकि कुल लागत के लगभग बराबर है।

रेलवे बोर्ड ने 'इंटरलॉकिंग' बिंदुओं के निरीक्षण के लिए 15 दिवसीय अभियान शुरू किया

नयी दिल्ली : रेलवे बोर्ड ने 23 अक्टूबर से देश के सभी रेल नेटवर्क पर 'इंटरलॉकिंग पॉइंट्स' और क्रॉसिंग के निरीक्षण के लिए 15 दिवसीय सुरक्षा अभियान शुरू किया है। बोर्ड ने लिखित संदेश में सभी रेलवे जोन और डिवीजन से कहा है कि वे इस अभियान को चलाएं, जिसमें अन्य पहलुओं के अलावा पिछले तीन वर्षों में इन 'इंटरसेक्शन' पर पटरी से उतरने की घटनाओं के गहन विश्लेषण पर विशेष जोर दिया जाएगा। तमिलनाडु में एक यात्री और मालगाड़ी के बीच हुई टक्कर के लगभग दो सप्ताह बाद यह अभियान शुरू किया गया। घटना की जांच की जा रही है क्योंकि शुरुआती जांच में 'इंटरलॉकिंग' प्रणाली में तोड़फोड़ या उसमें संभावित यांत्रिक खराबी की ओर संकेत किया गया है। बोर्ड के पत्र के अनुसार अधिकारियों को यह जांच करनी चाहिए कि क्या 'इंटरलॉकिंग' बिंदुओं पर लगातार ध्यान देने की आवश्यकता है। पत्र में कहा गया है, ''इस सुरक्षा अभियान के तहत सभी बिंदुओं और क्रॉसिंग को शामिल किया जाना है। मुख्यालय के विभागों के अधिकारियों को भी इसमें शामिल किया जाये। अभियान के दौरान पाई गई सभी कमियों और अनियमितताओं पर प्रभावी कार्रवाई की जानी चाहिए।'' पत्र में सभी जोन और डिवीजन को बोर्ड के सुरक्षा नियंत्रण विभाग को दैनिक रिपोर्ट भेजने के लिए कहा गया है। इसमें प्रमुख मुख्य सुरक्षा अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे ''कमियों की पहचान करने के लिए संपूर्ण कमियों का गंभीरतापूर्वक विश्लेषण करें'' तथा 13 नवंबर तक बोर्ड को रिपोर्ट भेजें। सुरक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि यह अपनी तरह का पहला अभियान है, जिसमें अधिकारियों को अन्य मुद्दों के अलावा पहियों के नीचे 'इंटरलॉकिंग' बिंदुओं का निरीक्षण करने के लिए कहा गया है।

उत्तरकाशी में हिंदू संगठन के प्रदर्शन के दौरान पथराव, करीब 200 लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

उत्तरकाशी : उत्तरकाशी में कथित तौर पर सरकारी जमीन पर बनी मस्जिद को हटाने की मांग को लेकर बृहस्पतिवार को हिंदू संगठन द्वारा निकाली गयी विरोध रैली के दौरान हुए पथराव के मामले में 200 से अधिक लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। वहीं स्थिति तनावपूर्ण होने के मद्देनजर प्रशासन ने जिले में निषेधाज्ञा लागू कर दिया है। उत्तरकाशी के जिलाधिकारी मेहरबान सिंह बिष्ट ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू कर दी है जिसके तहत पांच या पांच से अधिक लोगों के इकटठा होने, धरना प्रदर्शन करने तथा जुलूस निकालने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। उत्तरकाशी के पुलिस अधीक्षक अमित श्रीवास्तव ने यहां कहा कि संयुक्त सनातन धर्म रक्षक संघ द्वारा निकाली जाने वाली रैली के लिए सशर्त अनुमति दी गयी थी लेकिन प्रदर्शनकारी दूसरे मार्ग पर जाने के लिए अड़ गए और अवरोधकों को हटाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि इसी दौरान प्रदर्शनकारियों में से कुछ लोगों ने पत्थरबाजी शुरू कर दी जिसके बाद पुलिस को हल्का बल प्रयोग कर उन्हें वहां से तितर-बितर करना पड़ा। श्रीवास्तव ने कहा कि इस दौरान कुल आठ पुलिसकर्मियों को भी चोटें आयी जिसमें निरीक्षक आशुतोष सिंह और हवलदार अनिल कुमार गंभीर रूप से चोटिल हुए हैं। उन्होंने बताया कि कुछ प्रदर्शनकारी भी इसमें घायल हुए हैं। श्रीवास्तव ने कहा कि जिले में पूरी तरह से शांति व्यवस्था कायम है। उन्होंने जनता से भी शांति व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करने की अपील की। उत्तरकाशी जिला अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ प्रेम पोखरियाल ने बृहस्पतिवार को बताया था कि दो महिलाओं समेत 20 प्रदर्शनकारियों को अस्पताल में भर्ती कराया गया था जिनमें से अधिकांश को शाम को ही छुट्टी दे दी गयी थी।

न्यूज अपडेट

दो घुसपैठियों को पकड़कर बांग्लादेश वापस भेजा गया: हिमंत

गुवाहाटी : असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने शुक्रवार को कहा कि पुलिस ने करीमगंज जिले में भारत में अवैध रूप से प्रवेश करने का प्रयास कर रहे दो बांग्लादेशी नागरिकों को पकड़कर पड़ोसी देश वापस भेज दिया। उन्होंने दावा किया कि उनमें से एक ने हिंदू नाम धारण करके भारत में प्रवेश करने की कोशिश की। शर्मा ने 'एक्स' पर लिखा, करीमगंज में भारत-बांग्लादेश सीमा के पास घुसपैठ की कोशिश को नाकाम करते हुए, दो बांग्लादेशी नागरिकों को पकड़कर सीमा पार वापस भेज दिया गया। शर्मा ने बताया कि बांग्लादेशियों की पहचान प्रियंका गेन और शिबली अख्तर के रूप में हुई है। उन्होंने कहा कि प्रियंका गेन ने कथित तौर पर हिंदू नाम का उपयोग करके भारत में प्रवेश करने की कोशिश की थी। शर्मा ने घुसपैठ की कोशिश को विफल करने के लिए राज्य पुलिस की सराहना की।

अहमदाबाद पुलिस ने 48 अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों को हिरासत में लिया

अहमदाबाद : अहमदाबाद पुलिस की अपराध शाखा ने शहर के विभिन्न इलाकों में अवैध रूप से रह रहे 48 बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया है। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इन बांग्लादेशी नागरिकों को स्वदेश वापस भेज दिया जाएगा। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया है कि यह कार्रवाई दो मामलों के उजागर होने के कुछ सप्ताह बाद की गई, जिनमें फर्जी पहचान बनाने के लिए जाली दस्तावेजों का इस्तेमाल किया गया था और बांग्लादेश से मानव तस्करी के तहत महिलाओं को भारत लाया गया था तथा यहां वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर किया गया था। सहायक पुलिस आयुक्त भरत पटेल ने बताया कि इन दो मामलों में आठ लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने कहा, ''इसके बाद हमने कई स्थानों पर छापे मारे और करीब 250 बांग्लादेशी नागरिकों से पूछताछ की। दस्तावेजों के सत्यापन के बाद पाया गया कि 48 लोग पिछले कुछ वर्षों से बिना किसी वैध दस्तावेज के शहर में अवैध रूप से रह रहे हैं।'' उन्होंने बताया कि आठ महिलाओं और छह नाबालिगों सहित अवैध प्रवासियों को चंदोला झील, दानी लिमडा, शाह-ए-आलम और कुबेरनगर जैसे क्षेत्रों से पकड़ा गया। उन्होंने कहा कि कार्रवाई के बारे में सूचना मिलने के बाद कई बांग्लादेशी नागरिक हिरासत में लिए जाने के डर से बस्ती छोड़कर भाग गए। पटेल ने कहा कि कानूनी प्रक्रियाओं का पालन किया जा रहा है और संबंधित केंद्रीय एजेंसियों की मदद से इन अवैध प्रवासियों को उनके देश वापस भेज दिया जाएगा।

बाबा सिद्दीकी हत्याकांड: नौ आरोपियों की पुलिस हिरासत 26 अक्टूबर तक बढ़ाई गई

मुंबई : मुंबई की एक अदालत ने बाबा सिद्दीकी हत्या मामले में नौ आरोपियों की पुलिस रिमांड शुक्रवार को 26 अक्टूबर तक बढ़ा दी। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के नेता और महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री सिद्दीकी की 12 अक्टूबर को उनके विधायक बेटे जीशान सिद्दीकी के बांद्रा स्थित दफ्तर के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस मामले में अलग-अलग तारीखों पर गिरफ्तार किए गए नौ लोगों को शुक्रवार को उनकी प्रारंभिक रिमांड समाप्त होने पर अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट (एस्प्लेनेड अदालत) वी आर पाटिल के समक्ष पेश किया गया था। पुलिस ने उनकी रिमांड तीन दिन बढ़ाने की मांग की, वहीं अदालत ने शनिवार तक एक दिन के लिए रिमांड बढ़ाई।

दक्षिण दर्शन यात्रा के लिए भारत गौरव पर्यटक ट्रेन

जबलपुर : मध्यप्रदेश के तीर्थ यात्रियों के लिए इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कारपोरेशन लिमिटेड (आईआरसीटीसी) द्वारा भारत गौरव पर्यटक ट्रेन का संचालन किया जा रहा है। जो दिनांक सोलह दिसंबर को इंदौर शहर से दक्षिण दर्शन यात्रा के लिए रवाना होगी। यह ट्रेन मध्यप्रदेश के इंदौर, देवास, उज्जैन, शुजालपुर, सीहोर, संत हिरदाराम नगर, रानी कमलापति, इटारसी, बैतूल स्टेशनों से होते हुए जाएगी, जहाँ से यात्री इस ट्रेन पर सवार हो सकेंगे। 09 रातें/10 दिनों की इस यात्रा में तिरुपति, रामेश्वरम, मदुरई, कन्याकुमारी एवं त्रिवेन्द्रम के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण कराया जायेगा। आईआरसीटीसी इस सर्व समावेशी टूर की पेशकश कर रहा है, जिसमें भारत गौरव ट्रेन के विशेष एलएचबी रेक में आरामदायक रेल यात्रा, ऑन-बोर्ड और ऑफ-बोर्ड भोजन, सड़क परिवहन और गुणवत्तायुक्त बसों में दर्शनीय स्थलों की यात्रा, यात्रा कार्यक्रम के अनुसार आवास की व्यवस्था, यात्रा में टूर एस्कॉर्ट्स, यात्रा बीमा, ऑन-बोर्ड सुरक्षा और हाउसकीपिंग की सेवा शामिल है। इक्छुक पर्यटक इसकी बुकिंग आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर ऑनलाइन व अधिकृत एजेंट से भी करा सकते है।

कनाडा ने आतंकवादियों के प्रत्यर्पण संबंधी केवल पांच अनुरोधों का समाधान किया: भारतीय राजनयिक

नयी दिल्ली : कनाडा ने खालिस्तानी आतंकवादियों के प्रत्यर्पण के लिए भारत की ओर से भेजे गए 26 अनुरोधों में से केवल पांच का समाधान किया है और बाकी अब भी अधर में हैं। कनाडा में भारत के एक शीर्ष राजनयिक ने यह जानकारी दी है। राजनयिक ने इसे 'निष्क्रियता' का परिणाम भी बताया है। कनाडा में भारतीय उच्चायुक्त संजय वर्मा ने इस सप्ताह 'पीटीआई-भाषा' को दिए साक्षात्कार में बताया कि पांच आतंकवादियों को प्रत्यर्पित किए जाने की प्रक्रिया चल रही है। उन्होंने कहा कि वह न तो नाम का खुलासा करने के लिए अधिकृत हैं, न ही विवरण देने के लिए। वर्मा का यह साक्षात्कार बुधवार को हुआ। वह कुछ दिन पहले ही नयी दिल्ली लौटे हैं। भारत ने खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की 2023 में हुई हत्या की कनाडाई जांच में ''रुचि रखने वाले व्यक्ति'' के तौर पर ओटावा द्वारा नामित किये जाने के बाद वर्मा एवं पांच अन्य भारतीय राजनयिकों को वापस बुला लिया है। निज्जर कनाडाई नागरिक था। कनाडा द्वारा वहां की लगभग आठ लाख की बड़ी सिख आबादी के बीच खालिस्तानी आतंकवादियों को मौन समर्थन दिए जाने के मुद्दे पर द्विपक्षीय संबंध अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गए हैं। भारत ने कनाडा पर खालिस्तान समर्थकों की गतिविधियों को रोकने के लिए कुछ भी नहीं करने का आरोप लगाया है। ये खालिस्तान समर्थक भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को कमजोर करना चाहते हैं। उन्होंने कहा, ''मेरे पास जो आखिरी जानकारी थी, उसके अनुसार उनमें से पांच का समाधान हो चुका है। इक्कीस अब भी लंबित हैं और ये दशकों से लंबित हैं। इसलिए, मैं कहूंगा कि यह निष्क्रियता है। सभी मुद्दे जो किसी देश की न्यायिक प्रणाली के तहत आते हैं, उनके लिए कभी-कभी परामर्श की आवश्यकता होती है, क्योंकि हम दो अलग-अलग न्यायिक प्रणालियों का अनुसरण करते हैं।'' वर्मा ने कहा, ''लेकिन, अगर पिछले चार-पांच या 10 वर्षों में कोई कार्रवाई नहीं हुई है, तो मैं इसे केवल निष्क्रियता ही कहूंगा।''

जम्मू-कश्मीर में आतंकी तंत्र को खत्म करने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है: सैन्य कमांडर

उधमपुर : सेना के एकीकृत मुख्यालय ने जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी हमलों की बढ़ती घटनाओं को लेकर श्रीनगर में एक बैठक में चर्चा कर रणनीति तैयार की। सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बैठक में, हिंसा के चक्र को तोड़ने और आतंकवादी पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। उन्होंने हालांकि इस संबंध में विस्तृत जानकारी देने से इनकार कर दिया। सेना की उत्तरी कमान के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल एम. वी. सुचिन्द्र कुमार ने कहा, ''इस रणनीति का मूल उद्देश्य नागरिकों और सैनिकों के बीच संबंधों को मजबूत करना है, साथ ही राष्ट्रवादी और मुख्यधारा की भावनाओं को प्रोत्साहित करना है, खासकर युवाओं के बीच।'' उन्होंने कहा कि हिंसा के चक्र को तोड़ने, आतंकी पारिस्थितिकी तंत्र को समाप्त करने, युवाओं और महिलाओं को सशक्त बनाने, शिक्षा की सुविधा प्रदान करने, खेलों को बढ़ावा देने और क्षेत्र की समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। सेना के कमांडर ने यहां पत्रकारों से कहा, ''मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि स्थिति नियंत्रण में है।'' उत्तरी कश्मीर के गुलमर्ग से छह किलोमीटर दूर सेना के एक वाहन पर बृहस्पतिवार को हुए आतंकवादी हमले में दो सैनिक शहीद हो गये थे। इस हमले में सैन्य बल के साथ काम करने वाले दो कुलियों की भी मौत हो गई थी। रविवार को एक अन्य घातक हमले में मध्य कश्मीर के गांदरबल जिले के गगनगीर इलाके में एक निर्माण स्थल पर आतंकवादियों द्वारा की गई गोलीबारी में छह प्रवासी मजदूरों और एक स्थानीय चिकित्सक की मौत हो गई थी। इससे पहले 18 अक्टूबर को शोपियां जिले में आतंकवादियों ने बिहार के एक मजदूर की गोली मारकर हत्या कर दी थी। आतंकवादियों ने पुलवामा जिले के त्राल इलाके में भी उत्तर प्रदेश के एक मजदूर को गोली मार दी थी जिससे वह घायल हो गया था। लेफ्टिनेंट जनरल कुमार ने कहा कि सुरक्षा बल पिछले पांच वर्षों में जम्मू-कश्मीर में 720 आतंकवादियों को मार गिराने में सफल रहे हैं।

भारत से 2018 .19 में मिली हार 2020.21 से ज्यादा दुखदायी : कमिंस

सिडनी : आस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस का मानना है कि भारत के हाथों 2018-19 की टेस्ट श्रृंखला में मिली हार 2020-21 में उनकी कप्तानी में मिली हार से अधिक दुखदायी थी। विराट कोहली की कप्तानी में भारत ने 2018-19 में आस्ट्रेलिया को 2-1 से हराया था। कोहली और चेतेश्वर पुजारा उस जीत के सूत्रधार रहे थे। वहीं 2020-21 में भारतीय टीम ने श्रृंखला 2-1 से जीती। भारत ने 32 साल में पहली बार आस्ट्रेलिया को उसके गढ गाबा पर हराया। कमिंस ने ग्रेड क्रिकेटर पॉडकास्ट में कहा, 'मुझे लगता है कि 2018-19 की हार सबसे बुरी थी क्योंकि हम हर विभाग में कमतर साबित हुए थे। 2020 . 21 में तो हमने कड़ी चुनौती दी थी। भारत ने गाबा टेस्ट में शानदार प्रदर्शन किया था।' भारत के खिलाफ 22 नवंबर से पर्थ में शुरू हो रही पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला में एक बार फिर आस्ट्रेलिया की कप्तानी करने जा रहे कमिंस ने कहा कि वह हरी भरी पिचों पर भारत का स्वागत करना चाहेंगे। उन्होंने कहा, 'अगर मेरी चले तो मैं हरी भरी पिच बनवाना चाहूंगा लेकिन पिच की तैयारी में मेरी कोई भूमिका नहीं है। हमें इंतजार करना होगा।' डेविड वॉर्नर ने संन्यास का फैसला वापिस लेने का प्रस्ताव रखा है लेकिन कमिंस ने संकेत दिया कि उनकी टीम आगे बढ चुकी है। उन्होंने कहा, 'डेव हम इसे बहुत गंभीरता से ले रहे हैं। हम बात करेंगे।' उन्होंने हालांकि आगे कहा, 'हम सभी डेवी (वॉर्नर) से प्यार करते हैं लेकिन अब वह रिटायर हो चुका है। सॉरी।'

विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में भारत की भागीदारी को सरकार से मिली हरी झंडी

नयी दिल्ली : अल्बानिया में होने वाली विश्व कुश्ती चैंपियनशिप के लिए चुने गए 12 पहलवानों के शुक्रवार को यहां खेल मंत्री मनसुख मांडविया के आवास के बाहर डेरा जमाने और उनसे हस्तक्षेप की मांग करने के बाद सरकार ने इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में भारत की भागीदारी को मंजूरी दे दी। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) ने गुरुवार को तीनों भारतीय टीमों को चैंपियनशिप से हटाने का फैसला किया क्योंकि साक्षी मलिक के पति पहलवान सत्यव्रत कादियान ने अंडर 23 और सीनियर विश्व चैंपियनशिप के लिए ट्रायल आयोजित करने के महासंघ के फैसले के खिलाफ अदालत का दरवाजा खटखटाया। कादियान का कहना था खेल संस्था अदालत की अवमानना कर रही थी जिसने कुश्ती के संचालन के लिए भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) द्वारा नियुक्त किए गए तदर्थ पैनल के अधिकार को बहाल कर दिया था।डब्ल्यूएफआई को मंत्रालय ने निलंबित कर दिया था जबकि आईओए ने तदर्थ पैनल को बहाल करने से इनकार कर दिया है, जिससे खेल और पहलवानों का भविष्य अधर में लटक गया है। कुश्ती की विश्व संचालन संस्था यूडब्ल्यूडब्ल्यू ने हालांकि इस साल फरवरी में डब्ल्यूएफआई पर से निलंबन हटा दिया था।

स्पिनरों की चुनौती का सामना नहीं कर सका भारत, न्यूजीलैंड को 301 रन की बढत

पुणे : बेहतरीन स्पिन गेंदबाजी के खिलाफ भारतीय बल्लेबाजों की कमजोरी कलई खुल गई और दूसरे क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन शुक्रवार को न्यूजीलैंड ने 301 रन की मजबूत बढत बना ली। मिचेल सेंटनेर के सात विकेट के बाद टॉम लाथम (86) ने बल्ले से कमाल करते हुए न्यूजीलैंड को पांच विकेट पर 198 रन तक पहुंचाया। न्यूजीलैंड को पहली पारी में 103 रन की बढत मिली थी। दूसरे दिन का खेल समाप्त होने पर टॉम ब्लंडेल 30 और ग्लेन फिलिप्स सात रन बनाकर खेल रहे थे। भारत के लिये एकमात्र अच्छी बात वॉशिंगटन सुंदर का प्रदर्शन रही जिन्होंने मैच में 11 विकेट ले लिये हैं। न्यूजीलैंड की नजरें भारत में श्रृंखला में ऐतिहासिक जीत पर लगी है। पहली बार न्यूजीलैंड ने 1955-56 के दौरे पर यहां श्रृंखला जीती थी। भारतीय बल्लेबाजों को इस पिच पर खेलने में दिक्कत आ रही थी लेकिन न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों ने आराम से खेला। बेंगलुरू में पिछले टेस्ट में घरेलू मैच में अपने न्यूनतम स्कोर 46 रन पर सिमटने वाली भारतीय टीम न्यूजीलैंड से 36 साल में पहली बार अपने देश में टेस्ट हारी थी। भारत ने इंग्लैंड से 2012-13 सत्र में हारने के बाद अपनी सरजमीं पर टेस्ट श्रृंखला नहीं गंवाई है। भारतीय टीम पहली पारी में 45.3 ओवर में 156 रन पर आउट हो गई। भारत ने सुबह के सत्र में छह विकेट 91 रन के भीतर गंवाये और ऐसा लग रहा था कि इस पिच पर बल्लेबाजी मुश्किल है लेकिन कीवी टीम ने इस धारणा को बदल दिया। कप्तान लाथम ने भारतीय स्पिनरों को आसानी से खेला। वह 133 गेंद में दस चौकों की मदद से 86 रन बनाकर आउट हुए। भारत के लिये सुंदर ने पहली पारी में सात विकेट लेने के बाद दूसरी पारी में चार विकेट चटकाये। न्यूजीलैंड के स्पिनर मिशेल सेंटनेर ने 53 रन देकर सात विकेट झटककर अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया जिससे यहां एमसीए स्टेडियम में भारतीय टीम पहली पारी में 156 रन पर सिमट गई। भारत के सितारा बल्लेबाज सेंटनेर से मिली चुनौती का सामना नहीं कर सके जिससे न्यूजीलैंड ने मेजबान टीम को पहली पारी में 45.3 ओवर में 156 रन पर आउट करके 103 रन की बढत ले ली।

जोहोर कप : भारत ने न्यूजीलैंड से 3-3 से ड्रॉ खेला

जोहोर बाहरू (मलेशिया) : न्यूजीलैंड के खिलाफ सुल्तान जोहोर कप में शुक्रवार को खेले गए राउंड रॉबिन मुकाबले में भारत ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 3-3 से ड्रॉ खेला। गुरजोत सिंह (छठा मिनट), रोहित (17वां) और टी प्रियब्रत (60वां) ने भारत के लिये गोल किये जबकि ड्रैग फ्लिकर जोंटी एल्मेस (17वां, 32वां और 45वां मिनट) ने न्यूजीलैंड के लिये हैट्रिक लगाई। भारत अंकतालिका में 10 अंकों के साथ शीर्ष पर है। फाइनल में पहुंचने पर फैसला ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया के क्रमश: जापान और मलेशिया के खिलाफ होने वाले मैचों के आधार पर होगा। भारत ने दमदार शुरूआत की और छठे ही मिनट में गुरजोत ने गोल किया। दो मिनट बाद भारत को लगातार दो पेनल्टी कॉर्नर मिले लेकिन गोल नहीं हो सका। इस बीच न्यूजीलैंड ने पलटवार पर हमले किये लेकिन भारतीय डिफेंस ने उन्हें कामयाब नहीं होने दिया। न्यूजीलैंड के लिये पहला गोल 17वें मिनट में एल्मेस ने दागा। भारत ने इसी मिनट में रोहित के गोल के दम पर फिर बढत बना ली। भारत ने दूसरे क्वार्टर में कई पेनल्टी कॉर्नर बनाये लेकिन सफलता नहीं मिली। न्यूजीलैंड के लिये तीसरे क्वार्टर में एल्मेस ने पेनल्टी कॉर्नर पर गोल किया। उन्होंने ही 45वें मिनट में एक और गोल करके न्यूजीलैंड की बढत 3-2 की कर दी। भारत ने 46वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर गोल करने का मौका गंवाया। भारत को आखिरी मिनट में पेनल्टी कॉर्नर मिला जिस पर वैरिएशन आजमाया गया और प्रियब्रत ने गोल दागा।

ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए तेज गेंदबाज हर्षित राणा और आलराउंडर नीतीश रेड्डी भारतीय टीम में

नयी दिल्ली : दिल्ली के तेज गेंदबाज हर्षित राणा और आंध्र के आलराउंडर नीतीश रेड्डी को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला के लिए रोहित शर्मा की अगुआई वाली 18 सदस्यीय भारतीय टीम में पहली बार शामिल किया गया। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आगामी बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए मोहम्मद शमी टीम में नहीं हैं जबकि कुलदीप यादव को कमर की चोट के लिए लंबे समय तक रिहैबिलिटेशन की सलाह दी गई है। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 श्रृंखला के लिए कर्नाटक के तेज गेंदबाज विशाक विजयकुमार और पंजाब के बल्लेबाज रमनदीप सिंह को शामिल किया गया है जबकि तेज गेंदबाज मयंक यादव फिर से चोटिल हो गए हैं। रिहैबिलिटेशन के लिए 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' में हैं। **बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए टीम:** रोहित शर्मा (कप्तान), जसप्रीत बुमराह (उप कप्तान), यशस्वी जयसवाल, अभिमन्यु ईश्वरन, शुभमन गिल, विराट कोहली, केएल राहुल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), सरफराज खान, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर) , आर अश्विन, आर जड़ेजा, मो. सिराज, आकाश दीप, प्रसिद्ध कृष्णा, हर्षित राणा, नीतीश कुमार रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर। रिजर्व: मुकेश कुमार, नवदीप सैनी, खलील अहमद। **दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ चार टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों के लिए टीम:** सूर्यकुमार यादव (कप्तान), अभिषेक शर्मा, संजू सैमसन (विकेटकीपर), रिंकू सिंह, तिलक वर्मा, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), हार्दिक पंड्या, अक्षर पटेल, रमनदीप सिंह, वरुण चक्रवर्ती, रवि बिश्नोई , अर्शदीप सिंह, विशाक विजयकुमार, आवेश खान, यश दयाल।

भारत ने अंडर-17 एशियाई कप क्वालीफायर में तुर्कमेनिस्तान को 1-0 से हराया

चोनबुरी (थाईलैंड) : ऋषि सिंह के पहले हाफ में किए गए गोल की मदद से भारत ने शुक्रवार को यहां एएफसी अंडर-17 एशियाई कप 2025 क्वालीफायर में तुर्कमेनिस्तान को 1-0 से हराकर अपनी लगातार दूसरी जीत दर्ज की। ऋषि ने 44वें मिनट में गोल किया जो इस करीबी मुकाबले में आखिर में निर्णायक साबित हुआ। भारत के अब दो मैचों में छह अंक हैं। वह रविवार को अपने अंतिम ग्रुप मुकाबले में मेजबान थाईलैंड का सामना करेगा। भारत ने अपने पहले मैच में ब्रुनेई दारुस्सलाम को 13-0 से हराया था। चोनबुरी स्टेडियम में भारत ने शुरू से आक्रामक रवैया दिखाया। उसने कुछ अच्छे मौके बनाए लेकिन तुर्कमेनिस्तान ने उसे उनका फायदा नहीं उठाने दिया। भारत को सफलता तब मिली जब फारवर्ड हेमनीचुंग लुनकिम के लंबी दूरी से लिए गए शॉट को ऋषि ने गोलकीपर को छकाकर गोल के अंदर पहुंचाया। इसके बाद भारतीय रक्षक टीम की इस बढ़त को आखिर तक बरकरार रखने में सफल रहे।

!! भावभीनी श्रद्धांजलि !!

सुप्रसिद्ध समाजसेवी व उद्यमी, अनन्य गोभक्त
परोपकारी, दूरद्रष्टा, हमारे विशिष्ट सहयोगी

श्री श्यामसुन्दर जी बेरीवाला

का आकस्मिक निधन गुरुवार, दिनांक 24 अक्टूबर 2024 को श्रीधाम वृन्दावन में हो गया है।

समिति परिवार अत्यंत मर्माहत है और अपनी गहन संवेदना प्रकट करते हुए परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें एवं शोकाकुल परिवार को संकट की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें

कलकत्ता वस्त्र व्यवसायी सेवा समिति
15बी, आरमेनियन स्ट्रीट, कोलकाता-700001
अध्यक्ष: महेन्द्र कुमार चौधरी
सचिव: नंदकिशोर भूतड़ा
एवं समस्त समिति परिवार

Dhantera
मतलब
समृद्धि का त्यौहार,
RCP
RAMESH CHANDRA PAREKH
JEWELLERS SINCE 1957
आपके साथ हर बार!
WE ARE OPEN TOMORROW SUNDAY
LATEST FESTIVE COLLECTION OF
GOLD, DIAMOND & POLKI JEWELLERY
HEAD OFFICE
19, SYNAGOGUE STREET, BRABOURNE ROAD,
BURRA BAZAR, KOLKATA - 700001, PH - 033 4055 0000
BRANCH OFFICE
3-B, UPPER WOOD STREET, SHAKESPEARE SARANI RD,
CAMAC STREET, KOLKATA - 700017, PH - 033 4060 4006
CAR PARKING AVAILABLE

वर्ष 9, पूर्णांक 4042 अंक 192, RNI No WBHIN/2016/66788, सर्वांग प्रकाशन के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **सरोज राय** द्वारा 17, बालमुकुन्द मक्कर रोड, 2सरा तल्ला, कोलकाता-700 007 से प्रकाशित। एल. एस. पब्लिकेशन्स प्रा. लि. 4, कैनल वेस्ट रोड, कोलकाता-700 015 से मुद्रित।
सम्पादक- **अनिल कुमार राय** (पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी), विज्ञापन एवं प्रसार-9874555256/7044444522, ई-मेल news@samagya.in